यमुना सत्याग्रह

1 अगस्त 2007

जल बिरादरी

34/46, किरण पथ मानसरोवर, जयपुर–302020

फोन : 0141–2393178

Email : watermantbs@yahoo.com

यमुना सत्याग्रह भविष्य को बचाने हेतु है।

यमुना देश की सब नदियों का प्रतिनिधित्व करती है। राष्ट्र की राजधानी से गुजरती है। राजधानी ही राष्ट्र को चलाती है। राजधानी हृदय होता है। हृदय से निकलने वाली धमनियां और वाहिनियां हृदय के रक्त को पूरे शरीर में जैसे संचालित करती है। वैसे ही राष्ट्र में नदियॉ राष्ट्र की खेती, उद्योग, बाजार, व्यापार सब को संचालित करती है। सभ्यता और संस्कृति को बनाती है। अब नदियों को हम बिगाड़ रहे है। हमारी सभ्यता और समृद्धि भी नष्ट हो रही है।

यमुना नदी संस्कृति को बचाने हेतु यमुना सिद्धान्त स्थापित करें। अभी तो यमुना नष्ट करने वाला सिद्धान्त स्थापित हो रहा है। यमुना सत्याग्रह अब यमुना संस्कृति –समृद्धि को बचाने हेतु सिद्धान्त स्थापित कर रहा है। अक्षरधाम ने यमुना के जल भराव क्षेत्र को नष्ट करने हेतु जो सिद्धान्त बनाया है, उसे ही अब की चालू सरकारे पालना कर रही है। कल नीजि कम्पनियॉ और बहुराष्ट्रीय कर्म्पानियः भी अक्षरधाम, मैट्रो, खेलगांव को देख कर अपना हक स्थापित करेगी। तब सरकार उन्हें कैसे रोकेगी?

यमुना दिल्ली का मूल जल स्त्रोत है। इसे नष्ट करके तलाब, तलाई, बावडी दुरुस्त करके क्या लाभ मिलेगा? ये सारी दिल्ली की ताल–तलाई जितना पानी इकट्ठा करती है। उसने तो केवल अक्षरधाम, मैट्रो, खेल गांव बनने से हानि हो रही है। एक तरफ पुनः बनाने पर खर्च। दूसरी तरफ जल संरक्षण क्षेत्रों को बिगाड़ने पर खर्च। खर्च से कुछ अधिकारियों, नेताओं, इन्जिनयरों, ठेकेदारों व व्यापारियों को लाभ होता है। पानी–पैसा लूटता है। पानी की लूट समाज और नदियों की लूट रोकने हेतु यमुना सत्याग्रह शुरु हुआ है।

दिल्ली पिजेन्टस् कोपरेटीव मल्टीपरपज सोसायटी, झील खुरन्जा मिल्क प्रोडुसर कोपरेटीव सोसायटी अब यमुना के भूजल पुनर्भरण क्षेत्र को बचाने हेतु संगठित होकर बोलने लगे है। नदी को पुनर्जीवित बनाने की आवाज बना रहे है। नदी खादर में पेड़ लगे और खेती हो। गहरा भूजल पुनर्भरण

करके दिल्ली को पानीदार बनाकर जीवन मिलेगा। इस क्षेत्र में 75 मीटर गहराई पर केवल मीठा पानी है, लेकिन नीचे की तरफ 15 मी. गहराई पर मीठा पानी मिलता है। यमुना के मिठास को बचाने की जरुरत है। यह यमुना का खादर – जल भराव क्षेत्र को बचाने से ही सम्भव है। यमुना से दिल्ली को पानीदार बनाये रखने हेतु यमुना सत्याग्रह जारी है। इसमें अब दिल्ली का भविष्य, विद्यार्थी बड़ी संख्या में जुड़ने लगे हैं। बाल दिवस पर दिल्ली के बहुत से विद्यार्थी सत्याग्रह स्थल पर आये। यमुना को बचाने का संकल्प लिया।

अक्षरधाम मन्दिर हटाना, कॉमनवैल्थ खेलगांव यमुना में नही बनने देना। मैट्रो डिपो यमुना से बहार बनाना। नई मॉल, होटल, उद्योग यमुना से रोकने हेतु सफलता मिलना शुरु है। यमुना शुद्ध हम सब का शुभ है। यह मानने वाले साथियों ने यमुना सत्याग्रह शुरु किया है। 111 दिन आज पूरे हुए। अभी तक तीन बड़ी सफलतायें इस सत्याग्रह के काल में हुई है। दिल्ली उपराज्यपाल द्वारा यमुना नदी में आगे कुछ भी नया निर्माण नही करना। ऐसी घोषणा से दिल्ली सरकार और भारत सरकार कुछ सचेत होगी।

निवेदन

यमुना सत्याग्रह के 111 वें दिन एवं शुभ दिवाली के मौके पर सभी सत्याग्रहियों को सत्याग्रह भाई राजेन्द्र सिंह का हार्दिक अभिनन्दन। यमुना सत्याग्रह 1 अगस्त 2007 से यमुना को बचाने के लिए डा. राजेन्द्र सिंह (जल पुरुष) के नेतृत्व में राष्टीय राजमार्ग –24 पर कोमनवेल्थ साईट के साथ (अविरत) चल रहा है। यमुना सत्याग्रह किसी एक संस्था या एक जन संगठन द्वारा संचालित नहीं है। यह भारत देश, दिल्ली को प्यार करने वाले, यमुना को प्यार करने वालों का यमुना को बचाने का आग्रह है। यमुना सभी की है। इस को बचाने में सब का साथ चाहिए। सभी इसी सत्याग्रह के बराबर के जिम्मेदार साथी हैं। सभी वर्गों के सहयोग से यह यमुना सत्याग्रह रुपी जीव आज 111 वें दिन में प्रवेश कर रहा है। मैं इस मौके पर यमुना सत्याग्रह से जुड़े हुए विभिन्न लोगों एवं विभिन्न संस्थाओं का उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हुँ। उन सब के सहयोग से दिपावली 2007 तक यमुना सत्याग्रह का विस्तार सम्भव हो सका, जिसका वर्णन निम्नलिखित है–

1. खेल गांव साईट – 1 अगस्त से लगातार भाई राजेन्द्र सिंह एवं उनके सभी साथियों द्वारा
2. राजघाट, समता स्थल – 2 अक्टुबर से 28 अक्टुबर 1. ध्रुव परिहार 2. भगवान सहाय
3. जन्तर मन्तर, नई दिल्ली – 3 अक्टुबर से 29 अक्टुबर 3. सुनील प्रभाकर 4. बोधन गुर्जर
4. कुर्सिया घाट – 4 अक्टुबर से लगातार 1. श्री हरि मल्लाह 2. श्री हरि शर्मा
5. विश्व शान्ति स्तुप – 4 अक्टुबर सांकेतिक (एक दिन) श्रीमति मीना सिंह
6. वजीराबाद (पेन्टून पुल) 28 अक्टुबर से 3 नवम्बर 1. मा. बलजीत सिंह 2. चौ. विभुति सिंह 3. श्री छोटे लाल मीणा
7. जामभोजी पर्यावरण संस्थान – 5 अक्टुबर से 7 अक्टुबर प्रो. वरुण आर्य एवं 85 विद्यार्थी
8. मार्जनल वाध पुस्ता नं. 3, 7 अक्टुबर सांकेतिक सत्याग्रह एक दिन

कपिल मिश्र एवं 1000 लोग

9. उच्चतम न्यायल के पिछे एवं गांधी शान्ति प्रतिष्ठान – 9 अक्टुबर एक दिन प्रो. वरुण आर्य एवं 85 विद्याथी एवं 60 दिल्ली वासी
10. डी वी ए. स्कुल के पास – 24 अक्टुबर एक दिन गोपाल सिंह
11. जन पथ, इण्डिया गेट – 4 नवम्बर से 7 नवम्बर कन्हैया लाल गुर्जर, सुलेमान खान और 27 महिलाऐं

आज तक के यमुना सत्याग्रह को चलाने के लिए सब व्यवस्था दिल्लीवासियों, जल बिरादरी एवं स्थानीय किसानों की समिति द्वारा की गई है। सभी लागों की जानकारी के लिए इस की एक विस्तृत रपट आप सभी के सामने रखना अपना दायित्व मानता हुँ। जल बिरादरी एक ऐसा संगठन है, जिसमें देश के सभी राज्यों के लोग जुडे हुए हैं। जल बिरादरी द्वारा विभिन्न मदों पर किया जाने वाले व्यय की विस्तृत जानकारी निम्नलिखित है–

जल बिरादरी द्वारा व्यय की जानकारी

क.	**सं. व्यय**	**मद**
1.	22000.00	बैनरो, पोस्टर्स (यमुना सत्याग्रह)
2.		यमुना सत्याग्रह पर प्रकाशित पुस्तकों पर व्यय
क.	33,000.00	1–10 दिन तक की यमुना सत्याग्रह की पुस्तक (हिन्दी एवं अंग्रेजी)
ख.	9,000.00	11–25 दिन तक की यमुना सत्याग्रह की पुस्तक (हिन्दी)
ग.	9,500.00	26–75 दिन तक की यमुना सत्याग्रह की पुस्तक (हिन्दी)
घ.	8,000.00	सत्याग्रह के 100 दिन अंग्रेजी में
ड.	20,000.00	सत्याग्रह के 76–111 दिन हिन्दी में सत्याग्रह से सम्बाधित पर्चे इत्यादी छपवाने पर व्यय
3.	24,000.00	पर्चे इत्यादि छपवाने पर व्यय
4.	45,000.00	सुब्बाराव के कार्यक्रम हेतु साउण्ड सिस्टम, स्टेज पर व्यय
5.	2,400.00	चिकित्सा पर व्यय।

इस प्रकार से जल बिरादरी द्वारा यमुना सत्याग्रह को चलाने के लिए किए गए व्यय को जानकारी उपर दी गई है। जिसमें अब तक लगभग 1,32,400 रुपयें जल बिरादरी द्वारा खर्च किए गए हैं।

इस यमुना सत्याग्रह को सुचारु रुप से चलाने के लिए यहां के स्थानीय किसानों (समसपुर जागीर, पटपडगंज, मण्डावली, फाजलपुर, शकरपुर एवं चिल्ला, सरौदा) गावों की भागीदारी भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। इन किसानों ने यमुना सत्याग्रह को बल देने के लिए तथा इस सत्याग्रह पर रोजाना खाने–पीने एवं विशेष अवसरों पर व्यय की व्यवस्था के लिए एक समिति का गठन समसपुर गांव के मा. बलजीत सिंह की अध्यक्षता में किया, जिसमें समसपुर गांव के श्री प्रीतम सिंह एवं श्री भुप सिंह, शकरपुर गांव के श्री महावीर सिंह, श्री किशोरी लाल एवं श्री बालेराम, मंडावली गांव से श्री राजेन्द्र सिंह, श्री नरेन्द्र सिंह एवं रोहताश भाटी तथा चिल्ला गांव से पं. हीरा लाल को सदस्य के रुप में शामिल किया गया। यमुना सत्याग्रह पर विशेष कार्यक्रमों एवं रोजाना के खाने पीने की व्यवस्था पर होने वाले खर्चे के ब्यौरा रखने का दायित्व मा. बलजीत सिंह को सौपा गया। स्थानीय किसानों की यह समिति समय–समय पर बैठकर होने वाले खर्चे का ब्यौरा देती है तथा धन की व्यवस्था करती है। इस समिति द्वारा अब तक यमुना सत्याग्रह पर किए गए खर्चे का ब्यौरा भी यहां पर विस्तार सहित निम्नलिखित रुप में प्रेषित हैं –

यमुना सत्याग्रह पर किसान समिति द्वारा किए गए खर्चे का ब्यौरा –

क्र. सं.	धन	मद जिस पर व्यय हुआ
1.	650.00	यमुना सत्याग्रह के हैण्डबिल छपवाना
2.	1,100.00	हैण्डबिल छपवाने, बटवाने एवं खाने पर व्यय
3.	6,600.00	12.9.07 को ब्रह्मपाल नागर के कार्यक्रम पर साउण्ड सिस्टम पर व्यय
4.	4,100.00	12.9.07 के कार्यक्रम पर संगीत पार्टी को भुगतान
5.	8,500.00	12.9.07 के कार्यक्रम पर टेन्ट एवं स्टेज पर व्यय
6.	1,320.00	12.9.07 ब्रह्मपाल नागर की पार्टी एवं अन्य लोगों के लिए चाय पानी एवं खाने पर व्यय
7.	600.00	12.9.07 पानी के टेंकर पर व्यय
8.	200.00	माला पर व्यय
9.	2,000.00	12.9.07 के ब्रह्मपाल नागर पार्टी के स्वागत के लिए साफे एवं शाल पर व्यय
	25,070.00	

10.	1,700.00	19.9.07 सत्याग्रह के 50 वें दिन पर महापंचायत पर टेन्ट व लाउड स्पीकर पर व्यय
11.	300.00	दरी, सत्याग्रहियों के बिस्तर
12.	600.00	खेस, सत्याग्रहियों के बिस्तर
13.	1, 500.00	2 अक्टुबर पर टेन्ट इत्यादी पर व्यय
14.	1,800.00	एक सत्याग्रही की चिकित्सा पर व्यय
15.	6,500.00	30.10.07 से 31.10.07 की जल बिरादरी के मंथन शिविर पर खाने, पीने, ठहरने इत्यादि पर व्यय
	37,470.00	
16.	5,400.00	1.8.07 से 13.11.07 तक सत्याग्रह स्थल पर किए जाने वाले खाने के सामान एवं चाय इत्यादि पर
		किया जाने वाला व्यय
	42,870.00	कुल व्यय

इस प्रकार से किसान समिति लगभग 43 हजार रु यमुना सत्याग्रह पर खर्च चुकी है। इस व्यय की जानकारी किसी भी समय यमुना सत्याग्रह से मा. बलजीत सिंह से मिल सकती हैं।

इस प्रकार से यमुना सत्याग्रह पर किया जाने वाला व्यय का भार या तो जल बिरादरी या किसान समिति द्वारा ही उठाया गया है। अन्य किसी भी संस्था से कोई भी किसी प्रकार की धन रुपी सहायता नही ली है।

इस 111 दिन के यमुना सत्याग्रह में हमें अपार जन समर्थन मिला हैं। मैं उन सभी संस्थाओं एवं लागों को शाबासी देना चाहता हुँ, जिनके सहयोग के बिना आज की अवस्था पर पहुंचना मुश्किल था।

सबसे पहले मैं इस संघर्ष में वरिष्ठ समाज सेवी डा. एस. एम. सुब्बाराव एवं वरिष्ठ पत्रकार आदरणीय श्री कुलदीप नैयर को धन्यवाद करुंगा, जिनको साथ लेकर राजेन्द्र सिंह ने यमुना सत्याग्रह का बीड़ा उठाया। इसके साथ ही मैं एकता परिषद एवं जनादेश के संचालक श्री पी. वी. राजगोपाल का भी आभारी हुँ, जो पूरे रुप से इस सत्याग्रह को बल दे रहे है। बहन राधा भट्ट, वन्दना शिवा, मेधा पाटकर, एस.के. नकवी, मनोज मिश्रा, सुधा मोहन, डा. विक्रम सोनी, मधु भटनागर, दिवान सिंह, कपील मिश्रा आदि वे सब जिन्होनें इस सत्याग्रह में साथ दिया है। लेकिन मैं जिनका नाम यहां नहीं

दे रहा हूं उन सबको भी श्री राजेन्द्र सिंह जी और यमुना सत्याग्रह की तरफ से आभार प्रकट करता हूं।

भारतीय किसान युनियन, समन्वयन एकता परिषद, नवधान्या, डब्ल्यू. डब्ल्यू. एफ, इन्टेक, जैनी इत्यादि सभी संगठनों के सहयोग के लिए मैं आभारी हुँ। श्री मनोज मिश्र एवं बहन सुश्री सुधा मोहन पहले दिन से ही इस सत्याग्रह के साथ खड़े है तथा हमारे कानूनी पक्ष की लड़ाई लड़ रहे हैं। प्रो. विकम सोनी, संजय कौल, श्रीमती मधु भटनागर, श्री एन. एन. मिश्रा के इस लड़ाई में योगदान को नहीं भुला जा सकता। मध्य प्रदेश से आये हुए श्री ध्रुव परिहार भी कन्धे से कन्धा लगाकर इस सत्याग्रह के लिए काम कर रहे हैं। पंजाब से आये हुए नौजवान साथी श्री सुनील प्रभाकर सभी को अपने कार्यों से सत्याग्रह का पाठ पढ़ा रहे हैं। इस प्रकार से नौजवान भाई कपिल मिश्र एवं प्रीती बहन यमुना के गीत गाकर इस सत्याग्रह में जान फूंक रहे हैं। राजस्थान से आए सत्याग्रही भी श्री मुरारी लाल शर्मा, श्री छोटेलाल मीणा, श्री कन्हैया लाल गुर्जर, श्री भगवान सहाय मीणा, श्री गोपाल सिंह का भी इस यमुना सत्याग्रह में जान फुंकने में कम योगदान नहीं। इस मौके पर अरावली इन्स्टीट्यूट आफ मैनेजमेन्ट के प्रबन्धक डा. वरुण आर्य का जिक नही करना तर्क संगत नहीं होगा। वह अपनी पत्नी सहित अपने कालेज के 85 छात्रों को लेकर इस सत्याग्रह को शक्ति प्रदान करने के लिए दिल्ली आए तथा 3 दिन तक पूरे तरीके से यमुना सत्याग्रह की एक कड़ी बन गए। वाटर फोर डेमोक्रेसी के अध्यक्ष श्री नकवी जी का इस यमुना सत्याग्रह में अभूतपूर्व योगदान रहा है।

इन सभी लोगों के साथ यहां के स्थानीय किसानों का आभार व्यक्त करना चाहुंगा, जिन्होंने रात, दिन लग कर इस सत्याग्रह को आगे बढ़ाया। इस सत्याग्रह की शुरुआत शकरपुर गांव के श्री किशोरी लाल, श्री बाले राम, श्री महावीर सिंह, श्री जगदीश, श्री चैनी इत्सादि से हुई। श्री किशोरी लाल सपरिवार सत्याग्रहियों को भोजन की व्ययस्था करने में 1.8.2007 से लगा हुआ है। इस कार्य में शकरपुर गांव की बहन मिश्रो देवी पूरा सहयोग कर रही है। मंड़ावली गांव से श्री राजेन्द्र सिंह, श्री नरेन्द्र सिंह, श्री रोहताश भाटी एवं श्री मुरली इस सत्याग्रह में पूरा सहयोग दे रहे है। पटपडगंज गांव के श्री जगवत स्वरुप, श्री रामस्वरुप, श्री भगवत सिंह, श्री पन्नी, श्री ग्यास राम, श्री सोहन लाल, श्री गिरीधारी एवं श्री निहाल सिंह आदि देर से इस

सत्याग्रह में जुड़े, परन्तु अब सक्रिय रुप से इस के लिए कार्य कर रहे हैं। समसपुर जागीर गांव से श्री भूप सिंह, श्री प्रीतम सिंह, श्री धरम सिंह, श्री दलबीर सिंह, श्री सुखबीर सिंह एवं मा. बलजीत सिंह भी इस यमुना सत्याग्रह में दिल और जान से लगे हुए हैं तथा इस सत्याग्रह की कामयाबी की कामना करते रहते हैं। समसपुर से महासचिव, दिल्ली पिजेन्टस् मल्टीपरपज कोपरेटीव सोसायटी लि. बल्लीमारान, दिल्ली इस सत्याग्रह का एक अभिन्न अंग बन चुके हुँ तथा पानी से सम्बधित विभिन्न सम्मेलनों में किसान का प्रतिनिधित्व करते हुँ।

उन्होंने दिल्ली पिजेन्टस् मल्टीपरपज कोपरेटीव सोसायटी को पूरे तरीके से इस आन्दोलन से जोड़ दिया है। इस सोसायटी के प्रधान श्री विभूति सिंह, उप–प्रधान श्री एस. के पण्डित, कार्यकारणी के सदस्य चौ. अजित सिंह, श्री भूप सिंह, श्री प्रीतम सिंह, श्री रामस्वरुप, श्री जगवत स्वरुप, एवं श्री भंवर सिंह पूरे तरीके से इस सत्याग्रह में सक्रिय भागीदारी निभा रहे है। झील खुरंजा मिल्क प्रोडियुसर सोसायटी भी अपनी भागीदारी इस सत्याग्रह में निभा रही है।

इस प्रकार से समसपुर जागीर, पटपडगंज, शकरपुर मंडावली, फाजलपुर, चिल्ला, सरौदा, नंगली, रजापुर, सरायकाले खां, गामड़ी, उस्मानपुर एवं घोण्ड़ा गांव के स्थानीय किसान जो इस यमुना नदी से भावनात्मक रुप से जुड़े है, इस सत्याग्रह में शामिल हो गए है। मैं आशा करता हुँ सभी समाज सेवी संस्थाओं, समाज सेवी व्यक्तियों एवं स्थानीय किसान भाईयों के सहयोग से अब यह सत्याग्रह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय रुप धारण करेगा एवं नदी का सरकारी और गैर सरकारी अतिक्रमण सरकार को बन्द करना होगा। मैं एक बार फिर उन सभी लोगों एवं संस्थाओं का आभारी हुँ, जिन्होंने इस सत्याग्रह को चलाने में किसी ना किसी रुप में सहयोग दिया। इसके साथ मैं उन सभी भाइयों और बहनों से क्षमा याचना चाहता हुँ, जिन्होंने इस सत्याग्रह में सहयोग तो दिया परंतु उनका नाम यहां नहीं दे पाया हुँ।

सहयोग से
मा. बलजीत सिंह,
महासचिव, दिल्ली पिजेन्टस् सोसायटी,
वलीमाराण, नई दिल्ली

निवेदक
राजेन्द्र सिंह
अध्यक्ष
जल बिरादरी

यमुना नदी – दिल्ली शहर के जीवन की जननी

यमुना नदी का क्षेत्र एवं अरावली रिज शहर के अमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। यमुना क्षेत्र एवं बाढ़ क्षेत्र पूर्वी पश्चिमी किनारों के बीच 9700 हैक्टेयर बचा हुआ है। मास्टर प्लान दिल्ली (एम.पी.डी. 2021) दो अलग–2 भागों में होते हुए भी एक दूसरे से जुड़े हुए है। शहर की 50 प्रतिशत से अधिक पानी की मांग (और यह और बढ़ेगी) भूजल द्वारा ही पूरी की जा रही है। भूजल का दोहन पहले ही सीमा से वार्षिक पुनःभरण की अपेक्षा अधिक किया जा रहा है। मानसून के समय बाढ़ के पानी को ठहरने के लिए बाढ़ क्षेत्र को संरक्षित किया जाना अति आवश्यक है। प्रो. विक्रम सोनी के अनुसार यमुना बाढ़ क्षेत्र एवं रिज क्षेत्र मिलाकर भूजल पुनर्भरण का वार्षिक मूल्य 21000 करोड़ रूपये है।

यमुना बाढ़ क्षेत्र बाढ़ के भंयकर खतरों से सुरक्षित रखने का एक मात्र बचाव है। (1978, 1988, 1995 एवं मिथि नदी का बम्बई में 2005 और टेम्स नदी लन्दन 2007 को याद करो।) कोई भी निर्माण कार्य (ऊंचे–2 भवन, माल मैट्रो नदी क्षेत्र पर भूकम्प के समय अधिक खतरनाक हो सकता है। 1985 में मेक्सिको एवं 1995 में कोब के भूकम्प को याद करो।)

हमें नहीं भूलना चाहिए कि हम दिल्ली में यमुना नदी की दोनों धाराओं का उपयोग कर रहें है। इसलिए हम दिल्ली वालों को अपनी जिम्मेदारियों के साथ कार्य करना चाहिए। क्या सरकार ने यमुना क्षेत्र में निर्माण कार्य करने से पूर्व सभी विभागों से सहमति प्राप्त कर ली थी, नहीं वर्तमान नियम अधि ानियम के अन्तर्गत सरकार ने ना तो निर्माण कार्य की सहमति प्राप्त की है और ना ही प्राप्त कर सकती है। इस प्रकार के निर्माण कार्य के लिए निम्मलिखित संस्थाओं की अनुमति आवश्यक है।

1.यमुना स्टेण्डिंग कमेटी (एम.ओ.डब्लू.आर) बाढ़ प्रभावित होने के ड़र से नहीं देगी।

2.केन्द्रीय भूजल प्राधिकरण (MoWR & MoEF) भूजल दोहण विभिन्न उपयोगों के लिए नहीं देगी।

3.उच्च न्यायालय द्वारा बनाई गई कमेटी यमुना क्षेत्र से अतिक्रमण दूर करने के लिए नहीं देगी।

4.पर्यावरण के प्रभाव का आंकलन (MoEF) हां ? पर्यावरण एवं जंगल

विभाग दृभट्रा है कि जो भी सहमति मिली वह भी समय के अभाव एवं राष्ट्रीय सम्मान के नाम पर नदी क्षेत्र में कोई भी निर्माण कार्य करने से पहले हमें राष्ट्रीय अभियांत्रिकी शोध संस्थान (नीरी) के 2005 में कराए गए नदी के बेहद अध्ययन के परिणामों के ध्यान में रखना होगा, जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि "नदी क्षेत्र में आवासीय या व्यावसायिक श्रेणी के स्थायी निर्माण की अनुमति नहीं मिलती चाहिए।"

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में जो भी निर्माणधीन/योजनागत कार्य हो रहे हैं। उनका वर्णन निम्मलिखित है।

1.डी.एम.आर.सी. यमुना डिपो प्रदूषित कोच सफाई सुविधा, एलिवेटेड लाइन 52 हैक्टेयर।

2.ट्रास्को बिल्ड़िंग, उर्जा संयंत्र, सालिड वेस्ट डम्प, हाइवे।

3.बहुमंजिली इमारते, माल और अन्य आवासीय सुविधा राष्ट्रकुल खेलों के लिए।

4.पवनहंस हैलिपैड "चालीस एकड़" यह सब तो अभी शुरूआत है।

सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यह हैं कि अक्षरधाम मंदिर जो पिछली सरकार की भंयकर भूल थी, उसको वर्तमान सरकार उदाहरण के तौर पर पेश कर खेलगांव निर्माण कार्य को सही साबित करने की कोशिश कर रही है। लेकिन क्या हमें राष्ट्रकुल खेल और ऐसी चीजों की जरूरत नहीं है? निस्संदेह जरूरत है। लेकिन यह जरूरत हमारी जीवन धारा "नदी" या हमारें जीवन की सुरक्षा कीमत पर पूरी नहीं की जानी चाहिए।

1.विशेषकर तब जबकि खेलगांव के निर्माण के लिए और भी विकल्प मौजूद है।

2.सबसे बड़ी चीज कि इसके लिए झूठ को आधार नहीं बनाना चाहिए। हमने जमैका के नवम्बर 2003 में सम्मेलन में "जब सी.जी. 2010 के लिए दिल्ली का चुनाव हुआ।" पूरे विश्व को आश्वासन दिया था कि खेलगांव का निर्माण किसी सुरक्षित और सुंदर स्थान पर होगा। तथा हवाई अड्डे से नजदीक होगा। खेलों के बाद यह खेल गांव किसी विश्व विद्यालय के उपयोग में आयेगा। परन्तु यमुना में चुना गया "यह स्थान असुरक्षित और खतरनाक है और नदी क्षेत्र में बन रहा है। हवाई अड्डा और खेलगांव दिल्ली के दो छोर पर हैं। खेलगांव को राष्ट्रकुल खेलों के बाद निजी आवासीय कालोनी बनाकर बेचने की तैयारी है।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि भारतीय ओलपिंक संघ के जमैका में किए गए वादे से अब सरकार सीधे तौर पर मुकर रही है। और नदी क्षेत्र में बन रहे खेलगांव में इन नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही है।

नहीं यह पूरी तरह गलत धारणा है। भारतीय ओलंपिक संघ जो राष्ट्रकुल खेलों की मेजबानी कर रहा है, या भारत सरकार को इस काम के लिए एक पैसा भी नहीं मिल रहा है। वास्तविकता यह है कि भारत की जनता की गाढ़ी कमाई को निम्मलिखित मदो में खर्च किया जा रहा है। किस अधिकार से आई.डी.ऐ. ने जमैका में राष्ट्रकुल के सदस्य देशों से ये वादे किए।

1.सी.जी.एफ. के 72 प्रति सदस्य देश को 10,00,000 अमेरिकी डालर का भुगतान, जिसमें इंग्लैण्ड, कनाडा और आस्ट्रेलिया जैसे धनी देश शामिल हैं, रिश्वत देने जैसी चीज है।

2.पूरे विश्व से आ रहे 8500 से ज्यादा खिलाड़ियों और अधिकारियों के आगमन प्रस्थान का खर्च वहन करना और फिर उनके 25 दिनों के दिल्ली प्रवास की व्यवस्था करना।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बी.सी.सी.आई. द्वारा कराए गए क्रिकेट विश्व कप राष्ट्रकुल खेल या इस तरह के और भी आयोजन निजी संस्थाओं द्वारा कराए जाते हैं जो आई.डी.ए. के अधीन है। भारत सरकार आई.डी.ए. के इन आयोजनों पर भारी छूट दे रही हैं, जो एक अनुमान के मुताबिक 23,000 करोड़ के लगभग है।

3.लेकिन क्या ये खेल खुद अपना खर्च वहन नहीं कर लेंगे ? नहीं आकंड़े बताते है कि 1984 में लॉस एंजिल्स में आयोजित किए गए ओलंपिक खेलों को छोड़कर बाकी किसी भी खेल आयोजन में लाभ नहीं हुआ।

4.क्या हमें खेलगांव को नदी क्षेत्र से हटाकर कहीं और ले जाना होगा ? हां!

अक्टूबर, 2010 में हो रहे खेलों में अभी तीन साल बाकी है। वैसे भी राज्य सरकार पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की ई.ए.सी. समिति द्वारा जारी रिपोर्ट का पालन क्यों नहीं कर सकती ? जिसमें कहा गया है कि हमें वहां दस दिन के खेल आयोजन के लिए अस्थाई ढ़ांचे का निर्माण कराना चाहिए, जिससे कि बाद में नदी क्षेत्र को पूर्वस्थिति में लाया जा सके।

यमुना सत्याग्रह और जलबिरादरी

यमुना के साथ जो हमने किया है, वह हम सभी जानतें है। अक्षरधाम मन्दिर नाम के मॉल ने पहला कब्जा किया था। अब खेलगांव ये कब्जा कर रहा है। यह जमीन जिन किसानों की थी उनसे पूछा तक नही। इसके किनारे कुर्सिया घाट से सैंकड़ों वर्ष पुराने छोटे–छोटे मन्दिर तोड़ कर प्रवासियों का बहुत बड़ा अक्षरधाम मन्दिर के नाम पर मॉल और होटल बनवाया। उसे मन्दिर कह कर उसका चित्र उपराज्यपाल के निवास में सुन्दर सजाना दिल्ली सरकार का अपना गौरव बन गया है।

यमुना को खेल का स्टेडियम नहीं बना रहे है, केवल खेलगांव बना रहे हैं। क्योंकि मन्दिर को अपना बड़ा साम्रज्य बनाना है। जो कम्पनी इसे बना रही है, उसके हिस्से के सभी अपार्टमेन्ट वे इसी मन्दिर को देगी। क्योंकि कम्पनी के लिए नदी कुछ नहीं, पैसा ही सब कुछ है। मन्दिर के प्रवासी अपने साम्रज्य को बढ़ाने हेतु सब कुछ कर सकते हैं। इस खेलगांव को द्वारका से हटवाकर यहां बनवाने में इनकी ही विजय है।

कम्पनियों को आज यमुना तट की सब सुविधा एवम् जल भण्ड़ार दिखाई दे रहे हैं। हमारी सरकार को नहीं दिख रहें है। दिल्ली मास्टर प्लान में यमुना फ्लड प्लेन को सुरक्षित रखने की बात है। लेकिन मंत्री श्री, अजय माकन जी नदियों को बेचकर हरी भरी बनाने की बात खुल्मखुल्ला कर रहे हैं। यह किसी बड़ी योजना का हिस्सा है, क्योंकि उपराज्यपाल श्री तेजेन्द्र खन्ना जी नदी पर कुछ भी नया निर्माण करने के विरूद्ध हैं। यह अर्न्तविरोध क्या और क्यों हैं, पता नहीं ? लेकिन विकास के नाम पर यमुना का विनाश सरकार ने सुनिश्चित ही कर दिया है।

जल बिरादरी ने इस विनाश को रोकने हेतु नदी सम्मेलन आयोजित करके निर्णय लिए हैं। उन निर्णयों पर पहली नवम्बर से ही सब साथियों ने अपनी–अपनी जगह लेकर काम शुरू कर दिया है। राष्ट्रीय जल बिरादरी ने एक अगस्त से दिल्ली में यमुना किनारें सरकारी अवैध अतिक्रमण रोकने का सत्याग्रह शुरू किया है। अब सभी राज्यों की जल बिरादरी अपने–अपने नदी क्षेत्रों में सत्याग्रह व पदयात्रायें शुरू कर रही है।

जल बिरादरी वर्ष 2000 में राजस्थान के नीमी गांव में बनी थी। यह एक जल समुदाय है अब यह देश के सभी भूसांस्कृतिक क्षेत्रों से परिचित है। इसमें ऐसे व्यक्ति–संगठन और संस्थायें शामिल है, जो जल का बाजारीकरण

रोक कर समुदायिक जल प्रबंधन को बढ़ावा देना चाहती हैं। जल जीवन का आधार है, प्रकृति प्रदत्त है। सभी जीवों–वनस्पतियों का जल पर समान हक है। यह किसी व्यक्ति या कम्पनी की वस्तु नहीं है। जल, जीवन, जमीर और जीविका सब कुछ है। साझा है। इसे सब मिलकर बचायें। अनुशासित होकर उपयोग करें। सबके जीवन सुरक्षा हेतु सहेजता से उपलब्ध कराने हेतु लगे लोग ही जलबिरादरी हैं। नदियों के शुद्ध–सदानीरा और आजाद अविरल बहाने हेतु संघर्षरत; पहाड़ों की धरती हरियाली नदियों की पवित्रता हेतु जूझने वाले जल बिरादरी के जल योद्धा हैं।

एक लोटा पानी ही मेरा है।

"यमुना गंगा मेरे लिए नहीं है। ये तो सारे समाज की है। इनमें बहने वाला सारा पानी सारे समाज का साझा है। मैं तो इनके एक लोटा जल का हकदार हूं। इसी में प्रतिदिन मेरा मुँह धुल जाता है। आज पूरा लोटा खाली हो गया है। लेकिन मेरा मुह नही धुला।" यह बात राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने उस वक्त कही, जब वे आनन्द भवन इलाहाबाद में कांग्रेस के राष्ट्रीय सम्मेलन के दिनों में प्रातः मुह धो रहे थे। उसी समय किसी जरूरी काम की बात–चीत के बीच दुखीः होते हुऐ जवाहर लाल नेहरू जी से बापू ने जल के अनुशासित उपयोग की चिन्ता व्यक्त की थी।

आज हमारें किसी नेता को जल और नदियों की ऐसी चिन्ता क्यों नही है? कोई भी बापू का नाम लेने से नही चूकता, लेकिन उनकी पानी और प्राकृतिक चिन्ता किसी को नहीं छूती। नेता लोग अपने–अपने राज्यों के लिए पानी मांगते रहते हैं। मतदाताओं को रिझाने हेतु भी ये सब पानी की राजनीति करने में जुटे है। कोई भी समाज को पानी सहेजने हेतु तैयार करने की राजनीति नही करता। जहां कोई नेता ईमानदारी से पानी का काम करता है। उसे समाज बिना प्रचार के अपना नेता मान लेता है। उन्हें मतदाता अपना प्रतिनिधी चुन लेते है।

ऊपर की बाते बहुत कठिन दिखती है, क्योंकि आज तो दिल्ली के राजनेता दिल्लीवासियों को टैंकर से पानी पिलाने में दिलचस्पी रखते हैं। टैंकर सप्लाई से उनका वोट पक्का होता है। राजनेता आज टैंकर से पानी पिला कर अपने मतदाता को गुलाम बनाकर रखना चाहते है। जब वे दिल्ली के टैंकर सप्लायर के विरूद्ध जायेंगे तो पानी का टैंकर रूक सकता है।

राजनेताओं को पानी व पैसा और वोट मिलने लगे तो यमुनावासियों को पानीदार बनाने में किसी भी नेता की दिलचस्पी नहीं होगी। मत पाना और मतदाताओं की जेब खाली करवाना, ऊपर से उनका दाता बनना यह सभी राजनैतिक पार्टियों का एकमात्र काम बन गया है। यमुनावासियों को स्वयं तय करना है। स्वयं को पानीदार बनाने हेतु यमुना को अपने लिए बचायें। आज सरकार ने 80 प्रतिशत जल सुविधाएं ऊपरी 20 प्रतिशत लोगों को दी हैं। 80 प्रतिशत गरीबों के हिस्सें में कुल 20 प्रतिशत जल सुविधाएं है। यह नीति ही गरीबों को और गरीब व बेपानी बना रही है। अतः व्यवस्था व प्राणियों के प्राण खतरे में है। गरीब व ग्रामीण के पैर उसकी जड़ों से उखाड़ने की तैयारी है। यह बड़ा खतरा है। सामुदायिक प्रयासों को बढ़ावा देकर तथा गांव को बाजार के चंगुल से बचाने के प्रयास होगें तो ही यमुना और यमुनावासी बचेंगे।

- पहले सामुदायिक जल प्रबंधन को बढ़ावा देने वाले कायदे–कानून बनें व उनका पालन सुनिश्चित कराने की व्यवस्था भी विकसित की जाए।
- परम्परागत जल संग्रह इकाइयों व नदी घाटी के जल ग्रहण क्षेत्रों को बचाने के लिए उन्हें कब्जामुक्त व शोषणमुक्त कराने, जंगल व जंगली जीवों की महत्ता को समझते हुए उनके संरक्षण की ठीक व्यवस्था बने। आज यहां केवल पानी का बाजारू उपयोग नहीं हो, पानी आजाद होकर बह सके, पानी का जल स्तर एक स्तर से नीचे न जाने पाए, यह जिम्मेदारी हो। इस पर सरकार विचार करेगी तो जरूर यह एक बड़ी पहल होगी। इससे पानी की लूट रूकेगी, पानी की लूट रोकने की व्यवस्था बनाने की जरूरत है। सरकार इस पर व्यापक पहल करे।
- जल के विभिन्न सरोकारों को शिक्षा पाठ्यक्रमों में शामिल करना जरूरी है।
- आज जरूरत है कि केन्द्रीय जल प्रबंधन पर खर्च होने वाली धनराशि अब विकेन्द्रीकृत जल प्रबंधन पर खर्च हो। जल निकासी की बजाय, जल संग्रहण व पुनर्भरण की योजना, परियोजनाओं की प्राथमिकता बने।
- हमारा मानना है कि जल बचाने की जिम्मेदारी तभी बनेगी जब

समाज को हकदारी मिलेगी। सरकार ने समाज से जल की हकदारी छीन ली है। समाज को पानी की हकदारी वापस लौटाना सरकार की जिम्मेदारी है। ऐसा होने पर ही हमें जल जुटाने, सहेजने व उसके अनुशासित उपयोग की समाज से अपेक्षा कर सकते हैं। सरकार को इस पर पूरी प्रतिबद्धता से निश्चय व निर्णय करने की जरूरत है।

आज यमुना को शुद्ध–सदानीरा बनाने हेतु निम्नलिखित कार्य हमें और करने चाहिए।

1. यमुना के दोनों किनारे के 10 हजार हैक्टेयर में कंक्रीट के जंगल की बजाय प्राकृतिक जंगल लगाया जाए। इसको पंचवटी के रूप में विकसित किया जाए और ऐसे वृक्ष लगाएं जाएं जिनमें जल का वाष्पीकरण ज्यादा न हो और वह अपनी जड़ों में पानी को समेट कर रख सकें। जैसे– पीपल, गूलर, बरगद, कदम, आंवला आदि। वर्षा के बाद जड़ों से निकलकर यमुना को शुद्ध जल मिलें।
2. यमुना के दोनों तरफ से आने वाली प्राकृतिक जल धाराओं को पुनर्जीवित किया जाए। इसमें पश्चिम दिशा से ज्यादा जल धाराएं आती थी। इनमें से एक धारा राजस्थान के गुढ़ा–झांकडी गांव से चलकर हरियाणा होते हुए नरायणा, नजफगढ़ होती हुई वजीराबाद के पास आकर यमुना में मिलती थी। इस नदी का नाम हैं साबी। यह साबी नदी यमुना को सालभर जल पिलाती थी, लेकिन दुर्भाग्य से आज यह एक नाले में बदल गयी है। बाढ़ के समय यह यमुना के बाढ़ के पानी से नरायणा झील को भरती थी और बाद में बाढ़ उतर जाने पर यह उसी पानी को यमुना में पुनः उड़ेल देती थी। इसके कारण यमुना का अविरल प्रवाह बना रहता था। इसलिए साबी और अन्य छोटी–बड़ी जलधाराओं को पुनर्जीवित किया जाए।
3. दिल्ली क्षेत्र में सामुदायिक वर्षाजल को संरक्षित करने हेतु पुराने तालाबों, बावड़ियों, झालरों और जोहड़ों को पुनर्जीवित किया जाए और दिल्ली रिज के जंगल में जहां भी संभव हो, वहां नयी जल संरक्षण सरंचनाओं का निर्माण किया जाए तथा यमुना खादर (फ्लड प्लेन) में किसी तरह का सिमेन्ट कंकरीट का निर्माण नहीं होवे।

दिल्ली के अरावली के भूजल को संरक्षित, सुरक्षित क्षेत्र घोषित किया जाए। ऐसी सरंचानाओं से अलवर की मशहूर अरवरी नदी की तरह यमुना भी पुनर्जीवित हो जाएगी और इसे अविरल बहाव के लिए अन्य जल स्त्रोतों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

4. दिल्ली के पर्यटन, सभ्यता और संस्कृति के मूल में यमुना ही है, लेकिन इसके साथ हमारा रिश्ता धीरे–धीरे खत्म हो गया है। यमुना से हमारा संबंध केवल इतना रह गया है कि इसके उपर बने भारी भरकम पुलों से गुजरते हुए एक बार हम खिड़की से झांककर गंदे पानी को देखते हैं और पुनः अपनी दुनिया में लौट आते हैं। यमुना के किनारों पर पहले से स्थित घाटों को पुनर्जीवित किया जाए। जल और जंगल को केन्द्र में रखकर ही पर्यटन की संभावनाएं विकसित की जांए।
5. यमुना के अविरल प्रवाह को बनाये रखने के लिए यमुना से सम्बधित पांच राज्यों ने मिलकर यमुना प्रवाह की सहमति बनाई थी। उसे सभी राज्य मानें और उस निर्णय को कियान्वित करें, जिससे यमुना में जल नियमित छोड़ा जाए। इसके लिए सभी संबंधित राज्य सरकारों को तुरंत आवश्यक दिशा–निर्देश केन्द्र सरकार जारी करें।

अपने पानी पर जीने का गौरव दिल्ली को मिल सकता है, अगर दिल्ली की सीमाओं में आने वाले वर्षा के जल को सहेज कर दिल्ली के नीचे वाले बड़े भूजल भण्ड़ारों को भरें और कुछ वर्षा जल को धरती के उपर इकट्ठा करें। यमुना के भराव क्षेत्र में हो रहे नये नियंत्रण और निर्माण को तुरन्त रोकें और हटावें। यमुना का नियंत्रण हटे बिना दिल्ली अपने पानी पर कभी जीवित नहीं रह सकेगी। दिल्ली को पानीदार बनाने के लिए यहां यमुना की दस हजार हैक्टेयर भूमि को तीस हजार रूपये वर्गमीटर की दर से बिल्डर्स को बेचने से रोकना होगा नही तो दिल्ली बेपानी और बेआबरू बनेगी। **अब दिल्लीवासियों को विचारना है कि यमुना को पवित्र नदी बनाए रखना है या कामॅनवैल्थ नाला बनाना है ?** ये सब निर्णय अब जल्द ही दिल्लीवासियों को मिलकर करने चाहिए। किसी खेल के नाम पर नदी को नाले में तब्दील करना है या दिल्ली का गौरव कायम रखने हेतु यमुना को दिल्ली की मां बनाकर रखना है। यमुना मां हेतु अब दिल्ली को जागृत व

श्रमशील बनकर यमुना के कब्जे हटवाने हेतु श्रमदान में जुटना चाहिए। यमुना के मेरे गांव डौला के 17 तालाबों के कब्जे उच्चतम न्यायालय के आदेश के बावजूद नहीं हटाये गये। फिर हम सबने मिलकर कब्जे हटाये और तालाबों को बनाया। अब मेरा गांव पानीदार बन गया है। इसी तरह दिल्ली भी पानीदार बन सकती है।

दिल्ली सरकार एक तरफ जलसंरक्षण हेतु अनुदान दे रही है। दिल्ली का समाज भी दिल्ली में यमुना पर हो रहे कब्जे हटवाकर यमुना की सफाई करवाकर इसे पानीदार बनाये तो मैं भी दिल्लीवासियों के साथ यमुना में श्रमदान करने हेतु तैयार हूँ। दिल्ली में यमुना से गरीबों के कब्जे सरकार ने हटवाए। गरीब मिलकर यमुना के वास्तविक लुटेरों और प्रदूषकों के कब्जे हटवाने हेतु खड़े होगे तभी दिल्ली से गरीबों की तरह ही भूमाफिया और सरकारी कब्जे हटाने में सफलता मिलेगी।

आज महात्मा गांधी जिन्दा होते तो दिल्ली में यमुना किनारे रहते और गरीबों को उजाड़कर अमीरों को बसाने के विरूद्ध सत्याग्रह करते। हम सब मिलकर यमुना को यमुना मां बनाए रखने का आग्रहपूर्वक सत्कर्म करने हेतु जुटना चाहिए। यही यमुना सत्याग्रह यमुना और दिल्ली के गौरव को कायम रख सकता हैं

यमुना नदी या कॉमनवैल्थ नाला ?
यमुना को मां बनाएं–महरी नहीं

सत्याग्रह सबके शुभ हेतु होता है। अहिंसक तरीके से संयम और धीरज से सब का काम समान रूप से भलाई करते हुए त्याग–तपस्या करने का ही दूसरा नाम सत्याग्रह है। हम जो प्रकृति को ही अपना प्राण और त्राण मानते हैं। ऐसे सभी साथियों ने नदियों को जीवन का आधार मान लिया है। और आज जो खतरे पैदा करने वाले हैं, उनको भी यह सब समझ आती है, लेकिन उनका स्वार्थ बड़ा प्रभावी है। निजी स्वार्थ जब साझे स्वार्थ से बड़ा होता है, तब चन्द लोग नदियों की हत्या करते हैं।

दिल्ली की सरकार हमारी यमुना को मार रही है। वर्ष 2000 में भारत सरकार ने दिल्ली सरकार पर दवाब डालकर अक्षर मॉल यमुना में बनवाया था और अब खेलगांव बनवाकर भी आज की सरकार हत्यारी बनना चाहती है। आज गलती कोई कर रहा है, पर भुगतेगी पूरी सरकार। खेलगांव में जो

खर्च होगा, उसका सबसे ज्यादा या कहें पूरा ही लाभ अक्षर मॉल को ही मिलने वाला है।

यमुना की यह जमीन दिल्ली पिजैन्टस कोपरेटिव सोसायटी की जमीन है। अब से पहले जब भी यमुना की जमीन पर सरकार ने कुछ किया तो सोसायटी से जमीन राष्ट्रहित के नाम पर मांगी जाती रही है और सोसायटी राष्ट्रहित के लिए जमीन देती भी रही है, लेकिन खेलगांव व अक्षर मॉल के नाम पर सरकार ने जमीन नहीं मांगी । क्योंकि एक तो अक्षर मॉल निजी ट्रस्ट है, जो ट्रस्टहित में ही काम कर रहा है। खेलगांव भी निजी ओलम्पिक सोसायटी ही करवा रही है।

यह खेल–खेल में लूट का काम है। यह राष्ट्रहित में नहीं है, हाँ खिलाड़ियों की जीत अवश्य राष्ट्रहित में होती है। हमारे खिलाड़ी जीतें तो यह राष्ट्रहित है। खेलगाँव यदि राष्ट्रहित का काम होता तो पहले प्रधानमंत्री श्री नेहरू जी की प्रेरणा से बनी सोसायटियां अपने आप चलकर जमीन देती, लेकिन यह खेलगांव यमुना की हत्या करके राष्ट्र के अहित का काम कर रहा है। इसके लिए बिना पूछे डी.डी.ए. ने इस जमीन पर खेलगांव बनाना शुरू करके अवैध काम किया है। हम सरकार को उनके इस अवैध काम को रोकने व दिल्ली को पानीदार बनाये रखने हेतु यमुना पुनर्जीवित करने की पहल कर रहे हैं। इस शुभ पहल में अब यमुना सत्याग्रह से लोगों की चहल कदमी होने लगी है। यमुना पुनर्जीवन के नौ सूत्र मैंने बताये हैं। इन पर यदि सरकार और समाज मिलकर काम करें तो सब का भला होगा और यमुना शुद्ध–सदानीरा पवित्र मन को धोने वाली माँ बन जायेगी।

यमुना माँ के साथ हम बेटे–बेटी बनकर जीयें। इसके मालिक बनकर नहीं जीयें। आज की सरकार यमुना की मालिक बनकर इसे बेचने का व महरी बनाकर रखने का कार्य कर रही है। माँ होती है, तो अपने बच्चों की सफाई करती है। यमुना माँ भी हमारी सफाई तो करें, लेकिन महरी बनकर मल ढोने वाली नहीं बनें। आज तो हम इसके साथ महरी जैसा ही व्यवहार कर रहे हैं। यमुना सत्याग्रह मेहरी को माँ बनवाने का प्रयास है। राज समाज यमुना से माँ जैसा व्यवहार करने लगेगा तो यह मैले की मैली राजनीति से मुक्त होकर शुद्ध बनने लगेगी।

सदानीरा बनने हेतु इसमें व इसकी सहायक जल धाराओं में वृक्षारोपण, घास आदि लगाकर और गंदगी को छानकर शुद्ध जल धाराओं में बदल कर

इन धाराओं को यमुना में प्रवाहित होने दें। पुराने निर्णयानुसार जल प्रवाहित कराना है। इसके किनारे की खेती और उद्योग भी यमुना का खयाल रखकर इससे जितना–जैसा जल लें, उतना और वैसा ही इसे लौटायें भी। गलती करने वालों को राज–समाज मिलकर दण्डित कर सके। अच्छा करने वालों को प्रोत्साहित करने वाले भी साझी व्यवस्था में भागीदार हो। यमुना पुनर्जीवन हेतु विविधता का सम्मान करने वाले भी सम्मान प्राप्त करें। सदा शुद्ध बनाये रखने वाले कानूनों को तोड़ने वाले, सबके सामने सजा पायें। ऐसी यमुना की राज–समाज की साझी व्यवस्था बने। यह कार्य यमुना के सभी गाँवों और शहरों में शुद्ध होना चाहिए। मैंने अपने गाँव का काम पूरा करके तब दिल्ली की यमुना में कदम रखा है।

दिल्ली में यमुना के साथ पुराने जमाने में जीने वाले लोग आज भी यमुना को उसी प्राणदायिनी यमुना माँ के रूप में देखते हैं, लेकिन वैसा व्यवहार करने का अवसर समाप्त होने की बात भी ये कहते हैं। यह अवसर समाप्त करने का दोष सरकार के सिर पर आता है। सरकार ने ही यमुना में मलमूत्र प्रवाह कराया है। सरकार ने पहल की तो समाज भी करने लगा और अब राज को मौका मिल, गया समाज के धन को यमुना शुद्धि के नाम पर लुटाने का ।

समाज इस लूट को रोक नहीं पाता है। समाज की फूट का लाभ लूट करने वाले राज के खाते में लिखा है। वह इसका पूरा लाभ कमा रहा है। शुभ की परवाह किये बिना जब राज केवल अपना लाभ देखता है, तभी प्रकृति पर हमला होता है। प्रकृति का क्रोध बढ़ता है और अन्याय अत्याचार व्याप्त हो जाता है। अब यमुना में वैसा ही हो रहा है।

यमुना सबकी सुख–समृद्धि और समान शुभ के लिए है। आज यह चन्द राजनेताओं के लाभ की वस्तु बन गई है। जब नदी चन्द लोगों की बपौती बन जाये, तब जिनकी बपौती बनी है, उनका भी अहित कर देती है। यमुना को अपनी बपौती मानने वाले अपने अहित से बचते हुऐ यमुना की गोद में जाकर सबके शुभ की गुहार करेंगे। तब तक **'चिड़िया खेत चुग जायेगी'**। फिर ये भी भूतपूर्व सरकार के नेताओं की तरह क्षमा मांगते फिरेंगे। हमने तो राज–समाज सबके शुभ हेतु सत्याग्रह शुरू किया था। जिसने इसे शुभ माना उसने सबका भला करने हेतु सत्याग्रह में भाग लिया है। जिसने इसमें अपना अहित देखा वह इसमें शामिल नहीं हुआ। यमुना सत्याग्रह सबके शुभ

का रास्ता बना रहा है। जो जितना जल्दी समझेगा, उसे इसका उतना ही शुभ के साथ लाभ होगा।

आज अशुभ करके लाभ कमाने की परम्परा पड़ गई है। यही विनाश–उजाड़ का रास्ता है। यह यमुना का उजाड़ बढ़ता जा रहा है। यमुना विकास के नाम पर हुआ विनाश और उजाड़ केवल़ चन्द लोगों के लिए लाभदायी बना हुआ है, लेकिन इनके लिए भी है अशुभ्। अशुभ् लाभ इन्हें लील जायेगा। अभी भी बचने का वक्त है। राज करने वाले यमुना सत्याग्रह में जुड़ें और अक्षर मॉल को तोड़ें, खेलगांव को रोकें, यही यमुना सत्याग्रह है।

नदियों के लिए सत्याग्रह

यमुना सत्याग्रह का 111 वां दिन है। इस नदी के सरकारी हत्यारे इसकी हत्या सबको साक्षी बनाकर कर रहे हैं, साक्षी मौन है। वर्ष 2000 में पहली बार भारत सरकार ने नदियों के सभी कानूनों को ताक पर रखकर अक्षरधाम बनवाया। नदियों के खादर (फ्लड प्लेन) में किसी तरह का निर्माण नहीं होता है। यह भूमि केवल एक फसली होती है। सरकार पानी और फसल नहीं बल्कि रूपया नदियों से कमाना चाहती है।

रूपये की चाहत ने ही यमुना के किनारे से बिना रूपये वाले ग्यारह हजार परिवार उजाड़े, उनके मन्दिर तोड़े, सबलों और अमीरों का पहला मन्दिर यमुना के पेट में रूपये का वैभव दिखाने हेतु अक्षरधाम के नाम पर '**मॉल**' मन्दिर जैसा बनवाया। इसमें रूपये देकर कुछ भी खरीद सकते हैं। पैसा इसमें प्रवेश से पहले ही देना पड़ता है। इसने यमुना नदी के पुस्ते के अन्दर पहला सरकारी प्रवेश पाया था। बड़ी खादर भूमि पर सिमेन्ट–कंकरीट से लीप–पोत कर पार्किंग आदि बनाई। फिर इसे बाढ़ से बचाने हेतु अपना ही नया पुस्ता बना दिया। इस पुस्ते के अन्दर अब खेलगांव बनावने की एक नई साजिश भी इन्होंने ही रची है। क्योंकि खेलगांव यहां बनने से सरकारी पैसा खर्च करके इसका पूरा लाभ ये ही उठा सकेंगे। यमुना में कोई स्टेडियम नहीं बन रहा है, केवल खेलगांव व खिलाडियों के आवास बन रहे हैं।

यह मन्दिर नामक मॉल एक निजी ट्रस्ट का है। खेलगांव भी निजी कम्पनी बना रही है। यमुना नदी जो कि एक राष्ट्र सम्पत्ति है इसे निजी कम्पनियां अपना माल कमाने के लिए नष्ट कर रही है। हमने इस खेल–खेल की लूट

को देखकर रोकना शुरू किया। 1 अगस्त को इस जमीन पर पेड़ लगाये। यमुना सत्याग्रह शुरू किया। इस सत्याग्रह से सरकारी लूट करने वाले क्षेत्रों में हल–चल शुरू हुई।

सप्तऋशि से शुरू यमुना शुद्ध–सदानीरा है। यमुनोत्री, खरसाली, हनुमान चटटी, बडकोट तक शुद्ध विविध रूप में दिखती है। बडकोट का एक पहला नाला इसमें गंदगी पैदा करता है। उसे यमुना जी अपनी ताकत से शुद्ध कर देती है। विकास नगर में विकास की मार यह नदी नहीं झेल पाती है। बस इसकी ताकत को इन्सान ने कमजोर बना दिया है। फिर भी गिरती–पड़ती नहरों में बंधती–खुलती हथनीकुण्ड तक आती है। यहां इसे पूर्णतया नहरों में बदल दिया जाता है। यहां से आगे यह इन्सानी कब्जे में बदल जाती है। सरकारी विकास के सपने दिखाकर गरीबी मिटाने के नाम पर गरीब को हटाकर उसे मिटाने की साजिश ही है। क्योंकि यमुना से केवल गरीब हटे। अमीर बसे, उनके मन्दिर और खेलगांव सब कुछ बने। गरीबों को हटाने का काम यमुना शुद्धि हेतु बताकर किया गया, लेकिन यमुना शुद्ध बनाने हेतु हजारों करोड़ खर्च कर दिये गये। यमुना अभी तक वैसी ही है। यहां यमुना का मैला मिटाने हेतु मैली राजनीति शुरू हुई। इस मैले की राजनीति को रोकने हेतु यमुना सत्याग्रह जारी है।

मैली राजनीति बहुत भारी है। इस पर यमुना सत्याग्रह का असर हुआ ? बैठकें बुलाई। तीन बार मुख्यमंत्री जी, दो बार उपराज्यपाल जी से बाते हुई। लेकिन खेल–खेल की लूट नहीं रूकी। श्री अर्जुन सिंह जी केबनेट कोर ग्रुप के अध्यक्ष के साथ लम्बी बात हुई। उन्होंने केबनेट कोर ग्रुप की बैठक यमुना सत्याग्रहियों को सुनने हेतु बुलाई, जो स्थागित हुई। इसमें मैली राजनीति का दर्शन होता है।

सत्याग्रह की शताब्दी पूरी हुई। फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा और सत्याग्रह की वकालत करने वाली सरकार को समझ नहीं आ रहा है। अहिंसा अपने से आरम्भ होती है। सत्याग्रह भी स्वयं को ही करना होता है। हमारी सरकार इसे दूसरों के लिए ही सिखा रही है। तभी तो सरकार यमुना की हत्या कर हिंसा करने में जुटी है। दिल्ली और देश हेतु यमुना नदी का बचना जरूरी है। यह सत्याग्रह 111 दिन से चलता आ रहा है। इसे सरकार अपनाने को तैयार नहीं है। अब तो दिल्ली के ग्यारह स्थानों पर सत्याग्रह चल रहा है।

कुलदीप नैयर, प्रशान्त भूषण, मेधा पाटेकर, पी.वी. राजगोपाल, टिकेत जी–बहुत से लोग बराबर यमुना सत्याग्रह में शामिल होकर अपनी बात सरकार से कहते रहे हैं, लेकिन सरकार ने एक की नहीं सुनी–यमुना हत्या करना नहीं रोका।

इससे प्रतिदिन क्रमवार मौन और उपवास चला है। खेलगांव स्थल, अक्षरधाम (मन्दिर मॉल) के पीछे है। उस साईट पर तो 2 अक्टूबर तक सतत् मैं स्वयं बैठा। ध्रुव परिहार बैठे। कुर्सिया घाट पर हरिभाई रोज बैठते है। इसी प्रकार सभी स्थानों पर वरिष्ठ साथी नेतृत्व प्रदान कर रहें है। गांध ी जयन्ती से जनादेश का भी जुड़ाव यमुना सत्याग्रह के साथ हो गया है। जन्तर–मन्तर, राजघाट पर अधिकार जनादेश के साथी मौजूद हैं।

वजीराबाद में मा. बलजीत सिंह. एवं चौ. विभूती सिंह जसोला में महावीर और प्रतीम सिंह जी के नेतृत्व में यमुना सत्याग्रह जारी है। यमुना की हत्या का काम जब तक नहीं रूकेगा तब तक यह **यमुना सत्याग्रह** जारी रहेगा। यमुना से खेलगांव का निर्माण कहीं दूसरी जगह करने में सरकार को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। बस कुछ के चुनावों में धन की जरूरत पूरी करने हेतु दूसरे स्त्रोत ढूँढ़ने पड़ सकते हैं।

सरकार अभी जल्दी निर्णय लेकर यमुना से केवल खेलगांव आवास बदलने में सकारात्मक रूख अपनाकर अपनी सफलता का रास्ता सिद्ध कर सकती है। एक–दो नेता के निजी हित को ध्यान में रखकर खेलगांव यमुना निर्माण करके अपनी असफलता दिखाने को मजबूर होगी।

हमने सरकार के सभी स्तरों पर यह बात समझाने की कोशिश की है, लेकिन अभी तक हम सफल नहीं हुए है। सरकार ने ताकत से यदि यमुना में खेलगांव निर्माण कर दिया तो सरकार ही असफल होगी। क्योंकि खिलाड़ियों को केवल आवास के लिए यमुना जैसी नदी की हत्या करने का आरोप पूरी दुनिया लगायेगी। फिर नेता कहेंगे हमे मालूम नहीं था। ऐसी बड़ी गलती करने जा रहें है। अब हम इन्हें गलतियां बता रहें है, तो कोई नहीं सुन रहा है। फिर एक दिन कहेंगे अब हमे देर हो गई है। ऐसा ही तो अब तक होता रहा है। अक्षरधाम बनाने वाली सरकार के नेता भी तो अब अक्षर धाम निर्माण के अपराधी मानकर गलती का अहसास प्रदर्शित कर रहे हैं। फिर आज के सत्ताधारी नेता भी ऐसा ही कहेंगे। तब तक "चिड़िया चुग जायेगी खेत" नदी की हत्या हो जायेगी। जान–बूझ कर हत्या करके क्षमा

मांगने का कोई अर्थ नहीं होता है। सभी सत्ताधारी नेताओं से यमुना में खेलगांव निर्माण रुकवाने का 111 वें दिन भी सत्याग्रह जारी है। सरकार यमुना सत्याग्रह के आग्रह को सुनें और समझे, यमुना में खिलाड़ियों के आवास निर्माण तुरन्त बन्द करें।

बूढ़ी यमुना मां को मार कर संपत्ति लूट

यमुना सत्याग्रह को दुनिया का तो साथ मिला, लेकिन दिल्ली और देश के लोग बेफिक्र क्यों ? हम जानते है, यमुना नदी हमारी प्राण प्यारी माँ है। जिसे अब हमने महरी मान लिया है। इसीलिए इसका काम अब देश की गंदगी को धोना ही बन गया है। गंदगी धोकर पानी को पवित्र बनाने का काम इसके किनारे बाढ़ क्षेत्र के पानी की यात्रा से होता है। अब किनारों को पक्के सीमेन्ट–कंकरीट में बदलना, बाढ़ क्षेत्रों में अक्षर धाम जैसे बड़े–बड़े मॉल होटल बनाना, पवन हंस का हैलीपैड़ व खेलगांव बनाने और बहुत सी फैक्ट्रियां लगाने की लम्बी योजनाएं चालू हैं। जो किनारे यमुना से पानी लेते देते और शुद्ध बनाने में सहयोगी होते थे, वे अब केवल मैले को ढोने का ही काम करेंगे। बाढ़ क्षेत्र भूजल भण्डार भरते थे, वे अब सीमेन्ट–कंकरीट में बदलकर भूजल भण्डारों का शोषण करने या प्रदूषित करने का काम ही करेंगे। भूजल पुनर्भरण रोकेंगे। धरती से दिल्ली और देश के सन्तुलित लेन–देन को रोकने का काम रूकेगा। अब यमुना केवल शोषित होने वाली लाचार बीमार 'मॉ' बन गई है।

जैसे बूढ़ी, लाचार, बेकार, बीमार 'मॉ' की केवल सेवा करने की जरूरत होती है, लेकिन कुछ बेटों का ध्यान मॉ को जल्दी मारने पर रहता है। मॉ के मरने से सम्पति बेटों को मिल जाती है। बेटे सम्पति बेचने की जल्दी में रहते हैं। दिल्ली के बेटों का भी यमुना को मार कर इसकी सम्पति बेचने पर ही ध्यान है। इसी तरह दिल्ली और देश के बेटे इसे बेच कर खाना चाहते हैं। खाने के लिए कुछ कारण ढूँढने पड़ते हैं। खेलगांव अच्छा कारण मिल गया, ये करके खेलगांव से यमुना के बेटों की इज्ज़त घटेगी या बढ़ेगी ? अभी तक दिल्लीवासियों को समझ नहीं आई है। कॉमनवैल्थ के सदस्य देशों से आवाज उठने लगी है। हमें पर्यावरण प्यारा है। खेल भी प्यारा है, लेकिन नदी और पर्यावरण को नष्ट करके खेल खेलने में हम मदद नहीं

करेंगे। इस खेल का हम बहिष्कार करेंगे। कामॅनवैल्थ के सदस्य ही यमुना की हत्या करने वाले खेलगांव में आकर नहीं रहेंगे। आवास व्यवस्था नदी में करना अवैध है। प्रकृति के साथ पाप और अन्याय है। कोई भी खिलाड़ी यमुना की हत्या करके यहां रहना पसन्द नहीं करेगा। खेलगांव का यमुना में बनना स्पष्ट तौर पर यमुना की हत्या है। यमुना की हत्या अक्षर धाम मन्दिर के नाम पर बने मॉल ने शुरू की है। यह **'मॉल'** अब टूटना चाहिए। जब बनवाने की स्वीकृति देने वाले अपनी भूल स्वीकार लें, तब उस भूल को सुधारना अच्छा होता है। भूजल सुधार सैद्धान्तिक तौर पर ठीक माना जाता है। यह भूजल सुधार हुआ तो अब राज चलाने वाले आगे गलती नहीं करेंगे।

आज दिल्ली व भारत देश की सरकार केवल **'अक्षर मॉल'** को लाभ पहुंचाने में जुटी हुई है। अब यहां जितनी भी 9 हजार खिलाड़ियों के आवास हेतु तथा खेल के मैदानो से आने–जाने के नाम पर पुल–सड़क स्वीमिंग पुल आदि सब बनेंगे, इन पर सैकड़ों करोड़ खर्च होगा। यह राशि हमारे समाज की है। इससे सारा लाभ केवल **'अक्षर मॉल'** को मिलेगा। यह मॉल निजी ट्रस्ट द्वारा बनाया गया है। किसानों को बे–जमीन बनाकर यह बना। इसकी बाढ़ सुरक्षा के नाम पर बना नया पुस्ता अब पूर्वी दिल्ली शक्करपुर, पाण्डव नगर, समसपुर, मयूर विहार आदि क्षेत्रों के भूजल भण्डारों के पुनर्भरण को रोक रहा है। इस अक्षरधाम पुस्ते से भूजल भण्डार के पुनर्भरण की बहुत बड़ी हानि हुई है। इसकी मोटे तौर पर गणना यह बताती है; दिल्ली की पुरानी ताल–तलाइयों से होने वाले भूजल पुनर्भरण के बराबर इस एक क्षेत्र का पुनर्भरण होता है। क्योंकि खादर भूमि का पुनर्भरण ही सबसे ज्यादा है। यह देशभर में सबसे तेज गति से पुनर्भरण करने वाला क्षेत्र है, यहां 70 प्रतिशत से अधिक जल ग्रहण करने की क्षमता है। इसके मोटे रेत के बीच जो भी खाली जगह है, अब पानी को अपने में समाकर सहेजता रहता है।

अभी दिल्ली के वैज्ञानिक और सरकार इस तथ्य की अनदेखी करके जल की कीमत को भूल कर एक लाख वर्ग गज़ की दर से यमुना की जमीन को बेचने का पक्का मन बना चुके हैं। तो हम क्या करें ? किसे समझायें ? ये सब बातें केबिनेट कमेटी के अध्यक्ष अर्जुन सिंह जी, दिल्ली के उपराज्यपाल व मुख्य मंत्री जी से दो–दो बार कर चुकें हैं। उन्होंने कहा आप ठीक ही

कर रहे हैं; लोकतंत्र में सबकी बात सुननी पड़ती हैं, करते ये अपने मन की ही हैं। मन में तो जमीन ही बेचनी है। जल तो अभी इन्हें जरूरी नहीं लग रहा, शायद दिल्ली का वोट अभी पानी से नहीं मिलता पर नेताओं को जानना चाहिए पानी भी वोट देता है। पानी सूखेगा तो वोट भी जायेगा। इस शताब्दी में जमीन से ज्यादा जल की कीमत बढ़ने वाली है। जल रहेगा तो ही दिल्ली रहेगी। दूसरों के पानी पर कब तक दिल्ली जिएगी ? कभी कोई तो कभी कोई, पानी के लिए मना करेगा। तब दिल्ली सरकार क्या करेगी ? बुरे वक्त की याद करके अच्छी राह चुनना, बुरे वक्त से बचाता है तो अच्छी राह चुनना। दिल्ली अभी अच्छी राह चुन सकती है। यमुना की हत्या के बाद अच्छी राह चुनने का अवसर ही नहीं बचेगा।

अभी तो अवसर की याद दिलाने हेतु सत्याग्रह चालू है। राह अभी नहीं पकड़ी तो फिर राह पकड़ना असम्भव है। हमें तो नदियों को शुद्ध–सदानीरा बनाने वाले है, लेकिन वह जल–जन–जमीर से जीवन जीने वालों के साथ ही सम्भव हुआ, जो दिल्ली में रहने वाले जनो का जमीर जल के साथ नहीं है। इसलिए यमुना जीवन संकट में है। मेरे जैसे ग्रामीण जंगली यमुना को जीवन दे सकते हैं। हमारी अरवरी, सरसा, भगाणी, रूपारेल और जहाज वाली नदियां चम्बल के रास्ते इसे जीवन देती है। इसलिए इसका जीवन बचाने का भाव मन में पैदा हुआ। अब इस यमुना किनारे धूनी रमा रहे हैं। यमुना भी तो हमारी धूनी का बहुत ख्याल करती है। इज्जत भी करती है, लेकिन दिल्लीवासी तो किसी भी रास्ते दूसरों के पानी पर अपनी नजर टिकाये है। यह नजर हम जानते है। यमुना सत्याग्रह इस नजर को रोकने का टोटका मात्र नहीं है। बुरी नजर रोकने का रास्ता है। इसी सत्याग्रह की साधना से हमारा साध्य पूरा होगा।

यमुना सत्याग्रह हमारी साधना सिद्धी का रास्ता है। हम अपनी साधना में सफल होंगे इस हेतु संयम और धीरज की राह चुनी है। सभी के साथ हम बातें कर रहे हैं। जोड़ रहें है। लोग जुड़ भी रहे हैं। मेरे मित्रों की सलाह है, जैसे दिल्लीवासी यमुना के साथ नही जुड़े हैं, वैसे ही यमुना सत्याग्रह में केवल आते–जाते हैं, ये जुड़ते नहीं। फिर भी मैं क्यों अपना समय यमुना में लगा रहा हूँ ? यह सवाल पूछते रहते हैं। मैंने कहा अब यह समय मेरा निजी नहीं है। इसलिए वह यमुना में लग रहा है। मुझे इसमें प्रसन्नता ही हो रही है। क्योंकि दिल्लीवासी यमुना को बचाने हेतु संकल्पित बनते नज़र

आ रहे हैं।

यमुना सत्याग्रह राज और समाज में यमुना पुनर्निर्माण व यमुना संरक्षण के साथ कुछ कर सकेगा। दिल्ली के मित्र और संस्थाएं स्वंय अलग–अलग तो लिख पढ़कर कुछ कर ही रहे हैं। धीरे–धीरे यमुना पुनर्जीवन के रचनात्मक और संगठनात्मक रूप में एक होकर संघर्ष भी करेंगे। जैसे जनोदश का जुड़ाव हुआ है, वैसे ही अन्य के साथ भी जुड़ाव होगा। यमुना की संस्कृति और सभ्यता पुनर्जीवित होगी। यमुना शुद्ध–सदानीरा बनाने की जिम्मेदारी हमारा समाज समझेगा।

हिंसा रोकने हेतु यमुना बचाओ–दिल्ली बनाओ।
प्यास–भूख की जंग में, हम सब संग में।

यमुना में नया निर्माण रोकें। पुराने निर्माण को हटायें। अब यमुना में केवल सरकारी कब्जे हैं या बड़े लोगों के जो जनहित के नाम पर अहित करते हैं। प्रकृति तथा समाज को अपने लाभ के लिए नष्ट–भ्रष्ट करते हैं। ये सब काम कुछ ही लोग विकास के नाम पर अपना विकास दूसरों का विनाश करने हेतु करते हैं। इस विनाश को रोकने हेतु यमुना सत्याग्रह शुरू हुआ है।

यमुना किनारों को सीमेन्ट–कंकरीट में बांधने का पूरा मन दिल्ली सरकार ने बना लिया है। यह देश और दिल्ली के लिए घातक होगा। केवल अक्षरधाम "अक्षर मॉल" को लाभ पहुंचाने हेतु दिल्ली सरकार ने ठीक अक्षर मॉल की तर्ज पर ही यमुना की हत्या करके किसानों को बेपानी और बेजमीन बनाने का काम शुरू किया है।

खेलगांव दिल्ली में बहुत आसान और निर्विवाद स्थलों पर निर्मित हो सकता है। सरकार ने खेल के स्थान व स्टेड़ियम तो अच्छी जगह के चुने क्योंकि वे तो अक्षर मॉल को देना कठिन होता। किन्तु खेलगांव किसी को भी देना आसान है। जैसे एसोसिएसन ने खेलगांव 82 की बन्दर बांट कर दी थी। वैसे ही अब नया खेलगांव बनाने वाली विदेशी कम्पनियां भी खेलगांव निर्मित करने से पहले ही उनसे धन कमा लेगी। जो यमुना के पेट में "रेत में महल" बना चुके है। इन पर बहुत धन है। इस धन को अपना मॉल–महल बनाने पर खर्च करेंगे। हमारी सरकार साम्प्रदायिक भावना

रोकने की घोषणा करती रहती है, लेकिन अक्षरधाम को लाभ पहुंचाने का कार्य साम्प्रदायिक और हिंसात्मक है।

दिल्ली सरकार तो यमुना की हत्या करके भी साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने पर तुली है। अक्षर–मॉल साम्प्रदायिकता का गढ़ है। साम्प्रदायिक ताकतों ने ही इसे बनाया है। यह साम्प्रदायिकता को भड़काने हेतु आग लगा चुका है। लोगों में इसके विरूद्ध दिन–प्रतिदिन आग भड़काई जा रही है।

देश के करोड़ों जन यमुना से इस अक्षर मॉल को हटाने, खेलगांव को रूकवाने की गुहार कर रहे हैं। अच्छा होगा सरकार साम्प्रदायिकता की आग दहकने से पहले ही खेलगांव का काम रोके। अक्षर मॉल को हटायें। सत्य–अहिंसा का नाम लेने वाली सरकार इनकी रक्षा क्यों नहीं करती ? यह पर्चा सत्य–अहिंसा की स्थापना हेतु लिखा और प्रसारित किया जा रहा है।

यमुना में अक्षर धाम नामक मॉल बना है, खेलगांव बन रहा है। यह "**सत्य**" है। इनके कारण देश में हिंसा भड़क सकती है। हिंसा रोकने हेतु यमुना सत्याग्रह चालू है, लेकिन सरकार 111 दिन सत्याग्रह के पूरे होने पर भी ध्यान नहीं दे रही है। यह सरकार की गैर जिम्मेदारी का दुष्ट परिणाम देश को नहीं भुगतना पड़े। यह बताने हेतु देश भर से लोग यमुना सत्याग्रह में शामिल हो रहे हैं।

दिल्ली में पानी के तीनों स्रोतो पर सरकारी हमला

विकासशील देशों में जनसंख्या का दबाव इतना अधिक है कि शहरों की धारणा शक्ति चरमरा रही है। चीन के बीजिंग, शंघाई तथा भारत के बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली और मद्रास जैसे घनी जनसंख्या वाले शहरों में अनियन्त्रित नगरीकरण के चलते स्थानीय प्राकृतिक संसाधन नष्ट हो रहे हैं और अब ये शहर स्थायी जल संकट की चपेट में हैं। अमूल्य स्थानीय जल संसाधन का इन शहरों में संरक्षण नहीं किया जा रहा है।

विकासशील दुनियॉ के इन महानगरों के पास जल्दी ही जल जैसा आवश्यक संसाधन खत्म होगा। दूसरी ओर विकसित देशों के पास अभी बहुत से प्राकृतिक संसाधन सुरक्षित हैं, जिनका प्रयोग वे जल के लिए कर सकते हैं। उदाहरण के लिए न्यूयार्क 150 कि.मी. दूर स्थित कैटस्किल के जंगलों से जल प्राप्त करता है, लेकिन दिल्ली के पास ऐसा कोई विकल्प

नहीं है।

दिल्ली में लगभग 8 मिलियन लोग ही रह सकते हैं। लेकिन वर्तमान में दोगुने लोग दिल्ली में रहते हैं। वाटर एण्ड कैरिंग केपेसिटी ऑफ ए सिटी दिल्ली, 8 नवम्बर 2003 को इकनोमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली में प्रकाशित अध्ययन बताते हैं कि शहर के कुल जल का एक तिहाई गंगा और व्यास से लाया जाता है। इन कृषि प्रधान क्षेत्रों से जल का आयात जल्दी ही विवादस्पद होने की संभावना है। यह भी पाया गया है कि जल का पुनः शुद्धिकरण भी कोई व्यवहारिक विकल्प नहीं है, क्योंकि प्रति व्यक्ति इसका मूल्य अर्धवार्षिक प्रति व्यक्ति आय के बराबर है। इन्हीं कारणों से स्थानीय जल संसाधनों का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

यमुना और अरावली पहाड़ियों का भाग दिल्ली का रिज क्षेत्र मुख्यतः दिल्ली को परिभाषित करते हैं। ये दोनों महत्वपूर्ण जल संसाधन हैं। इसीलिए सभी प्राचीन और मध्यकालीन बस्तियां या तो रिज पर या यमुना के किनारे बसी थीं। ऐसे अमूल्य प्राकृतिक संसाधनों और स्थानीय जल संसाधनों को अल्पकालीन लाभ के लिए नष्ट किया जा रहा है। जल एक स्थानीय संसाधन है और अपनी जल समस्याओं के लिए हमें स्थानीय हल खोजने होंगे। यहाँ पर दिल्ली के तीन भूमिगत जल संसाधनों के विषय में बताया गया है।

रिज क्षेत्र

रिज क्षेत्र जल का महत्वपूर्ण संसाधन है। दिल्ली का यह प्राचीनतम प्राकृतिक संसाधन क्वार्टशाइट के जमावों से बना है और 200 करोड़ वर्ष का प्राकृतिक इतिहास अपने में समेटे हैं। यह दो तिहाई से अधिक वर्षा के जल को सोख लेता है। पूरे रिज क्षेत्र में वर्षा के जल से भरे ये आकूत भंडार है, जिनमें विशुद्ध जल संरक्षित है। अतः इन क्षेत्रों को संरक्षित किया जाना आवश्यक है। हम पहले भी प्रधानमंत्री और दिल्ली हाई कोर्ट से हस्तक्षेप करने और रिज का विनाश रूकवा कर इसे जल अभ्यारण्य और सामूहिक भूमिगत जल संसाधन के रूप में घोषित करवाने की मांग कर चुके हैं। सम्पूर्ण रिज क्षेत्र का संरक्षण बहुत ही आवश्यक है, जैसा कि अध्ययन दर्शाते हैं कि भूमिगत जल केवल रिज क्षेत्रों में है। रिज का आधे से भी कम क्षेत्र (78 वर्ग कि.मी. संरक्षित जंगल के रूप में चिन्हित किया गया है।

दिल्ली में प्रति वर्ष औसतन 60 सेमी वर्षा होती है। जिससे प्रति वर्ष

60 मिलयन क्यूबिक मीटर जल प्राप्त किया जाता सकता है। रिज क्षेत्र इसलिए भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके द्वारा संरक्षित जल किसी भी अन्य कृत्रिम या प्राकृतिक स्रोत के मुकाबले कम है। एक लीटर मिनरल वाटर बोटल के वास्तविक मूल्य के पाँचवे हिस्से के हिसाब से यदि 2/– रुपये प्रति लीटर इस जल को बचाया जाए तो इससे प्रति वर्ष 19 हजार करोड़ रूपये कमाए जा सकते हैं।

बाढ़ के मैदान

बाढ़ के मैदान भी इस प्राचीन शहर के अदृश्य जल भंडार हैं, बिल्कुल उपेक्षित हैं और नष्ट किए जा रहे हैं। भारत की अधिकांश नदियों का बहाव वर्ष भर बदलता रहता है और मानूसन के दौरान यह अपने चरम पर होता है। इस दौरान नदियां किनारो तक बहती है और काफी चौड़ी हो जाती है। इस प्रक्रिया में नदी के बाढ़ क्षेत्रों में काफी मात्रा में गाद और जल का जमाव हो जाता है। बाढ़ क्षेत्रों में गाद और रेत से बनी मिट्टी होती है, जो अपने भीतर पानी सोख पाने की क्षमता रखती है। हम एक छोटा सा प्रयोग कर सकते हैं। गिलास में बाढ़ क्षेत्रों की मिट्टी डालकर यदि उसमें पानी डाले तो हम पाएंगे कि इसने 60 प्रतिशत जल सोख लिया है। दूसरे शब्दों में बाढ़ क्षेत्र रेत के भीतर एक अदृश्य झील जैसे हैं। एक खुली झील से जहाँ वाष्पीकरण के जरिए जल वाष्पीकृत हो जाता है, वहीं बाढ़ क्षेत्रो की इन झीलों में जल ज्यों का त्यों संरक्षित रहता है।

एक छोटी सी गणना से हम इस जल भंडार का महत्व समझ सकते हैं दिल्ली में लगभग 100 वर्ग कि.मी. बाढ़ क्षेत्र है, जिसकी औसत गहराई 40 मीटर है, जिसका तिहाई हिस्सा अभी अनछुआ है। यदि हम इसकी जल ग्रहण क्षमता कहीं अधिक सीमित केवल आधी भी माने तो इतने ही क्षेत्र से हमें 1 बिलियन क्यूबिक मीटर जल प्राप्त हो सकता है। लगभग इतना ही जल प्रति वर्ष दिल्ली को चाहिए। नदी का बाढ़ क्षेत्र हर साल पानी अपने भीतर सोख लेता है और जल भंडारों को पुनः भर देता है, लेकिन यह तभी संभव है, जब नदी को अपनी मरजी से बहने दिया जाए। नदी के पानी को नहरों की ओर मोड़ देना और बाढ़ क्षेत्रों में निर्माण कार्य करना बाढ़ क्षेत्रों के इन जल भंडारों के लिए खतरा है। इस पानी के आर्थिक मूल्य की गणना करना उचित होगा। दिल्ली में 10,000 लीटर 10 क्यूबिक मीटर के जल टैंकर का मूल्य 1,000 रुपये है। जबकि बाढ़ क्षेत्र का

पुनर्भंडारण मूल्य 10,000 करोड़ प्रति वर्ष है।

नदी और बाढ़ क्षेत्रों के साथ छेड़छाड़ विनाशकारी है। यमुना के साथ छेड़छाड़ का अर्थ है विश्वसनीय जल स्रोतों का विनाश। दिल्ली को उजाड़ना है। बे पानी होकर दिल्ली का उजड़ना अच्छा नहीं है, लेकिन दुर्भाग्य से सरकार दिल्ली का उजाड़ना ही तय कर चुकी है और यमुना नदी के बाढ़ क्षेत्रो में अक्षरधाम, खेलगांव जैसे निर्माण पहले ही हैलीपैड, मैट्रो डिपो आदि शुरू हो चुके हैं तथा मॉल–होटल जैसे निर्माण कार्य किए जाने की योजना बना ली गई है। जल का भयंकर अभाव झेल रहे शहर में नदी के बाढ़ क्षेत्र में निर्माण कार्य वैसा ही है, जैसे कोई उसी डाल को काटने की ठान चुका हो जिस पर वह बैठा है।

भूमिगत जल भंडार

हमारे भूमिगत जल भंडारों में आपातकाल के समय शहर के लिए जल संरक्षित है। अधिकाशं उथला भूमिगत जल भूमि के पहले स्तर में पाया जाता है, जहाँ वर्षा के कारण जल भंडारण होता है। दिल्ली में वर्षा के जल से समृद्ध होने वाले ये भूमिगत जल भंडार लगभग 40 मीटर तक है। इनके नीचे आमतौर पर पत्थर जैसे सख्त स्तर हैं। उसके नीचे वे जल भंडार है, जो मौसमानुसार वर्षा से समृद्ध नहीं होते, बल्कि नदी या अन्य भूमिगत स्रोतों से संचित होते हैं। ये जल भंडारण प्रक्रिया बहुत धीमी होती है और इस प्रक्रिया में 50 वर्ष तक लग सकते हैं।

इस प्रकार के जल भंडारों को आपातकाल के लिए सुरक्षित रखना चाहिए, लेकिन दिल्ली के डेवलर्पस द्वारा इनका भी इस्तेमाल किया जा रहा है। उदाहरण के लिए गुड़गाँव में इनका भरपूर शोषण किया गया हैं। एक बार इन जल भंडारणों के सूख जाने पर इनका दोबारा समृद्ध होना मुश्किल है।

हम कितनी अमूल्य जीवन जल को बरबाद करते जा रहे हैं। हमने उसका मूल्य–निर्धारित करने का भी प्रयत्न नहीं किया है। क्योंकि जीवन का मूल्य निर्धारित नहीं करते। इसलिए जल–जीवन को समान मानकर इनका मूल्य निर्धारित नहीं किया। आज कम्पनियां पानी का मूल्य तय करके हमारा पानी हमें ही बेच रहीं है।

हम अपना ही पानी दूसरों की बोतल में बन्द होने पर मोटी रकम देकर खरीद रहें है। अभी तो दूध के भाव मिल रहा है, लेकिन आने वाले

कल में घी के भाव भी नहीं मिलेगा। जिन्हें आज खाने के लिए रोटी नहीं है। वे दिल्ली में रहकर दूध और घी के भाव पानी खरीद कर पी सकेंगे। नहीं। इसका अर्थ दिल्ली से पहले गरीब उजड़े। फिर अमीर भी उजडेंगे। क्योंकि पानी जब खत्म होगा तो गरीब–अमीर सभी का उजाड़ निश्चित है।

कम्पनियॉ लोगो को उजाड़ने में जुटी है। दिल्ली के पानी का संकट दिल्ली के अधिकारी, व्यापारी और नेता मिलकर कर रहें है। जिससे समाज बिखरेगा और उजड़ेगा। उक्त तीनों भी आखिर में उजड़ेगी। पानी के बिना जीवन नहीं है। सरकार यमुना में अक्षर मॉल, खेलगांव आदि बनाकर सभी को बेपानी बनाने का तय कर चुकी है।

भारत की नदियों पर संकट गहराया

आर्थिक विकास का अब नया निशाना नदियां हैं। नदियों के विकास के नाम बड़ी नई घोषणायें इनका विनाश करने की योजनाऐं तैयार कर रही हैं। नदियां मरेगी, समाज बेफ्रिक सोया है। आज समाज नदियों से दूर हो रहा है। नदियों के पास भौतिक रूप से इन्हें दूषित और शोषित करने की चाह से अब ये मल मूत्र, उद्योगों का मैला ढोने वाली बनकर समाज के पास आयी हैं। सौ साल पहले तक जीवनदायिनी "मॉ" बनकर समाज के पास रहती थी। नदियों को मॉ की तरह सादर उपयोग तो हम करते थे, लेकिन इनको आज की तरह इनका शरीर बेचकर इनका भोग नहीं करते थे। अब ये हमारी सरकारों ने आर्थिक सुधार कार्यक्रम में नदियों को भोग की वस्तु माना है। इन्हें अब मेहरी की तरह केवल भोग्या वस्तु बनाया है। हमारे मंत्री कह रहे हैं। नदियों की 5 प्रतिशत जमीन बेचकर इन्हें सुन्दर आकर्षक बनायेंगे।

नदियों को अब कोई मॉ जैसा व्यवहार नहीं करना चाहता ? पूरा समाज वेश्या या महरी जैसा व्यवहार ही नदियों से करने हेतु तैयार है ? नहीं मैं तो मॉ जैसा व्यवहार करूंगा। भारत की नदियां मॉ है, इन्हें बिकने नहीं देंगे। इनके किनारे बनी सभ्यता घाट पर पली संस्कृति अब हमारी केवल विरासत ही नहीं, आज भी हमारा जीवन है। जो नदियों को जीवित रखने हेतु समर्पण भाव से नदियों से व्यवहार करते है। वे सुखी समृद्ध बनते हैं। उजड़े हुऐ पुनः बस जाते है। बेघर–बेकार, लाचार–बीमार समाज दूसरों को सहारा देने योग्य समृद्ध बन जाता है।

आर्थिक सुधार, हरित क्रांति ने हमारी बहुत सी छोटी–छोटी नदियों को दूषित करके मारा और सुखाया है। हमारी अरवरी नदी, कथित हरित क्रांति की शिकार होकर सूखी थी। 80 के दशक में इस नदी के समाज की आत्मा जगी और इन्होंने अपनी नदी को पुनर्जीवित करने का सहज काम शुरू किया। 20 साल के सतत् काम से ऊपर से नीचे एक नदी पुनर्जनन का पूरा हुआ। काम पूरा होने से पहले ही अरवरी नदी जीवित हो गई। अरवरी के समाज ने मिलकर स्वयं अपनी संसद बनाई। अरवरी संसद ने यहां की लूट करने आने वाली पानी की कम्पनियों को रोका। संसद के डर से कम्पनियां वापस भागी।

राजनेताओं की शराब फैक्ट्री इस क्षेत्र में पानी को लूटने आई। उन्हें सरकारी अदालत ने छूट दी, लोगों ने रोकने का संघर्ष जारी रखा। राजनेता कुछ भी आगे पिछे करके अपने कानून अपने स्वार्थ पूर्ति हेतु अनुकूल बना लेते हैं। इसलिए विजय मलाया राजनेता की किंग फिशर की एक फैक्ट्री अभी अरवरी नदी क्षेत्र से बाहर लगाने में कामयाब हुई हैं। इसके विरूद्ध भी अरवरी संसद की लड़ाई जारी है। इस लड़ाई में भी हमें जीत हांसिल होगी।

जहां नदियों का प्रदूषण और शोषण रोकने की आवाज उठी है, वहां नदियां आज भी शुद्ध–सदानीरा बनी है। जहां यह आवाज लूटने वाले नेताओं ने फूट डालकर दबा दी है, वहां नदियों का शरीर बिक रहा है, लुट रहा है। यमुना को दिल्ली में देश की दोनो सत्ताधारी पार्टियों ने फूट डालकर समाज को नदियों से तोड़कर अलग करने की कोशिश की है। दिल्ली में राजनेता आर्थिक विकास का सपना दिखाकर तोड़ने में सफल होते दिखते है। क्योंकि यहां का समाज इनके साथ सीधा जुड़ा है। इस समाज का आर्थिक विकास ही जीवन का एक मात्र रास्ता दिखता है।

इसलिए ही दिल्लीवासी यमुना मॉ को बेचकर खाने हेतु तैयार दिख रहे हैं। तभी तो 11 दिन के यमुना सत्याग्रह की उर्जा इन्हें यमुना बचाने हेतु खड़ा नहीं कर पायी है। दिल्ली के समाज को "उधार लेकर घी पीने" की आदत पड़ गई है। इसलिए बेचकर खाने का आदी बन गया है। तभी तो यमुना पर हो रहे सभी सरकारी हमले इन्हें स्वीकार हैं। सत्याग्रह में निराशा नहीं है। यमुना की आवाज और पुकार कभी तो दिल्लीवासियों के कानों में जायेगी ? ये खड़े होंगे। यमुना मॉ को बचायेंगे। शुद्ध–सदानीरा बनायेंगे।

मैं स्वयं तो अब जितना–जैसा भी मुझसे होगा यमुना के लिए ही करूगा।

आप जानते हैं, हमने अब तक जो किया वह भी यमुना मॉ का ही काम है। अरवरी नदी पुनर्जीवित होकर यमुना को ही जल प्रदान कर रही है। यह नदी यमुना के जलग्रहण क्षेत्र में ही है। हमने अब तक ग्रामीणों को ही नदियों के लिए बचाने हेतु खड़ा किया है। अब हमारें ग्रामीण साथियों का निर्णय है। नदियों को नष्ट भ्रष्ट करने वाला तो शहरी समाज ही है। ग्रामीण तो धीरे–धीरे अपनी ताकत से शुद्ध–सदानीरा बनाते हैं।

शहरी और राजनेता एक झटके में नदी का सब कुछ तहस–नहस कर देते हैं। नदियां अब टिकने वाली नहीं हैं। अतः अब हमें शहरी समाज को तथा नेताओं को भी नदियों के लिए संवेदनशील बनाना चाहिए। इसलिए हम दिल्ली में आकर यमुना पर विनाश रोकने का काम शुरू कर रहे हैं। यह संकट अब सभी नदियों पर ऐसा ही है। इसलिए हम सब नदियों को बचाने हेतु खड़े होकर काम शुरू करने हेतु 30–31 अक्टूबर 2007 को यमुना सत्याग्रह स्थल पर दिल्ली में "**नदी सम्मेलन**" राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कर रहें है।

जैसी हालात यमुना की है, वैसी हालात सभी शेष नदियों की है। आओ मिलकर नदियों के साथ समाज का मन–मानस जोड़ें। समाज नदी से जुड़ेगा, नदियां समाज को समृद्धि देगी। जीवन देगी। सुख शान्ति, संस्कृति–सभ्यता को प्राणवान बनाये रखेंगी। भारतीय सभ्यता नदियों किनारे पली–बढ़ी है। नदियों पर संकट हमारी सभ्यता संस्कृति और समृद्धि–स्वास्थ्य सब पर ही है। जीवन–जीविका चलाने हेतु भारत की नदियों का शुद्ध–सदानीरा बनना जरूरी है। जैसे अरवरी नदी बनी, वैसे ही देश की सभी नदियों का शुद्ध–सदानीरा बनना आसान है। बस नदियों के जन–मानस में नदी बचाने का भाव भर जाये। नदियों को शुद्ध–सदानीरा बनाने का भाव भरना ही हमारा काम है। इसी हेतु नदी सम्मेलन 30–31 अक्टूबर को दिल्ली में आयोजित हो रहा है। आप इसमें शामिल होकर नदी बचाने में अपने क्षेत्र के पानी की लड़ाई रोकने हेतु अपनी भूमिका तलाश करें।

भारत की नदियों पर गहरायें संकट से मुक्ति दिलाने के उपाय खोजने में जुड़ें।

यमुना मां के लिए समर्पित, बहिन अतरावती के गीत

1. ओ हो रे मेरे भैया, न्यूकहरी यमुना मईया।
तुम से बोल के मेरी बात सुनो कान खोल के।।
मैं उत्तराखण्ड से आई, मैं जड़ी बूटियां लाई अमृत घोल के।
मेरी बात सुनो कान खोल के।।
ये अक्षर धाम बना रहे, ये खेलगांव बनवा रहे, दिल खोल के।
मेरी बात सुनो कान खोल के, ये मैट्रो बनवा रहे ओर नाले भी गिरवा रहे विष घोल के।
मेरी बात सुनो कान खोल के।।
ये जितने नेता सारे ये बिजनसमैन बन रहे तोल तोल के।
मेरी बात सुनो कान खोल के।।
ये लाल कृष्ण अडवाणी इसे जाने दुनिया सारी इसने कर दी मेरी खुवारी, डोल डोल के मेरी बात सुनो कान खोल के।

2. यमुना भजन, अतरवाती

क्यों चुप बैठी क्यों छुप बैठी जरा अमृत वाणी बोल–यमुना अपने मन की खोल।
मैं न्यू कहरी में दुख सहरी तेरा किया बिस्तरा गोल–यमुना अपने मन की खोल।
अक्षर धाम बने खेलगांव बने तू सबकी पोथी खोल–यमुना अपने मन की खोल।
मैं केश करू, मैं धरना धरू, मैं बजवा दूंगी ढ़ोल–यमुना अपने मन की खोल।
राजेन्द्र खड़े वहां लोग जुड़े, वे करते अपना रोल–यमुना अपने मन की खोल।

3. यमुना मां भजन

खेलगांव अब शुरू हुआ अब होरी सब तैयारी रात दिन बुलडोज़र चल रहे लग रही लेवर भारी।
दो–दो तो इसमें गेट बने है पहरेदार लगे हैं।
चारो तरफ से टीन लगादी एंगल बहुत गड़े हैं। दूर–दूर से बच्चे आकर करेंगे खेल।
राजेन्द्र ने यहां पर आकर आन्दोलन चलाया आन्दोलन के नाम को सुनकर

डी.डी.ए घबराया। यमुना जी के पेट में आकर घोस दी थी आरी।
अतरावती यूं कहती है में कोर्ट में केश करूंगी, डी.डी.ऐ. की बोडी खा कर अपन पेट भरूंगी। यमुना मां का बदला लूंगी कसम उठा के कहरी।

4. बेईमान अडवाणी तुम अक्षर धाम बनाके।

डी.डी.ऐ की मिलीभगत से सबके धार तुड़वायेंगे बुए बुवाए खेत उजाड़े ।
तुझे जरा शर्म नहीं आई मर्यादा तुमने खत्म की यूं कहरी यमुना माई महावीर मेरी देवे गहवाई। बुलडोज़र चलवायेंगे गांव–गांव से आकर के यहां खेत करे थे।
आके गांव–गांव से बुलवा करके तोड़ दिए धमकाने से अपनी फोस बुला करके तुम सबको बन्द करावायेंगे।
अतरावती यूं कहती है तेरी खाल में भूस भरूंगी खेलगांव के पीछे बैठकर में सत्याग्रह करूगी राजेन्द्र जी कहते तुम एंगल भी लगवाओगें।

5. मैं तो हो गई राजेन्द्र जी डी.डी.ऐ से तंग ।

डी.डी.ऐ. ने क्या किया ये अक्षरधाम बना डाले ।
मैं तो हो गई राजेन्द्र जी बहुत धनी वे ठग।
डी.डी.ऐ. ने क्या किया ये पुस्ता भी लगवा डाले ।
मैं तो गई राजेन्द्र जी उनके ही अब संग ।
डी.डी.ऐ. ने क्या किया ये खेलगांव बनवा डाले ।
मैं तो हो गई राजेन्द्र जी देख–देख कर दंग ।
डी.डी.ऐ. ने क्या ये मैट्रो चलवा डाले ।
मैं तो हो गई राजेन्द्र जी कर दूंगी।
अब जंग दिल्ली वालो ने क्या किया ये नाले भी गिरवा डाले ।
मैं तो कहरी राजेन्द्र जी कर दूंगी इने बंद।

6. ओ हो जी यमुना माईया सबकी करे सफाई तू। निर्मल जल ले आई बड़ी दूर से तू ।।

आज बड़ी मजबूर से तू उत्तराखण्ड़ से आई। मीठी जल भर लाई तूने सबकी प्यास बुझाई ।। जल भरपूर से तू आज बड़ी मजबूर से तू है। जल की महारानी तेरा दूषित कर दिया पानी ।। तू है सबकी कल्याणी माता रूप से तू आज बड़ी।
ये जितने दिल्ली वाले ये सब है पेट के काले ।।

इनने गैर गन्दे नाले कंजूस से तू आज बड़ी मजबूर से ।
तेरे मन्दिर बहुत बने उतने ही घाट बने ।।
वहां जितने लोग खड़े है आए तू उनका दुख निमटाए। वे हंसते–हंसते जाए तेरे नूर से ।। ये अक्षर धाम बना रहे ये खेलगांव बनवा रहें । और बच्चों को बुलवारे बड़ी दूर से । तू आज बड़ी ये जितने नेता सारे ये कर रहे, जुल्म और चाले ये सारे पिटने वाले बेकूफ से।। यमुना तेरी खेती में अक्षर धाम बने देखे, ये भवन बड़े भारी यहां टिकट लगे देखे।।
यमुना तेरी खेती में सरकार बड़े देखे। यह दर्द बड़ा भारी सब गांव खड़े देखे।।
यमुना तेरी खेती में किसान बसे देखे। यह दर्द बड़ा भारी खेलगांव बने देखे।। यमुना तेरे पुस्ता ये राजेन्द्र खड़े देखे। ये अतरवती कहती यहां लोग जुड़े देखे।। यमुना तेरी खेती में बने फूल लगे देखे। ये रंग बिरगें है शिवजी पे चढ़े देखे।। यमुना तेरी खेती में घने पेड़ लगे देखे। ये छोटे बड़े हैं फलो से लधे देखे।।
वे सेव संतरे है शिवजी पे चढ़े देखे। ये जल बड़ा निर्मल है शिवजी पे चढ़े देखे।।
यमुना तेरे कोठ पे घने घाट बने देखे। कार्तिक के मेले में वहां लोग जुड़े देखे।।
यमुना तेरे कोठ पे श्याम गिरते देखे । उनका भवन बड़ा भारी रमण गिर खड़े देखे।।

7. यमुना मां तू तुझे बता तेरे क्या लगी बेमारी के। पुछेगी हाल बहन मेरी मैं ।।

आडवाणी ने मारी आडवाणी ने जुल्म करे।
मेरे उपर बुलड़ोज़र चलवाके, बुलडोज़र चलवाकर के।
या ने अक्षर धाम बनाके बुए बुआए खेत । उजाड़े खत्म करी सब क्यारी ।।
अक्षर धाम के बैक साईड में या ने पुस्ता भी लगवाया।
पुस्ता के किनारे पे याने खेलगांव बनवाया ।।
खेलगांव अब शुरू हुआ से लगरी लेवर सारी। राजेन्द्र सिंह यू कहरे है हम खेलगांव तोडेंगे ।। ये जितने सब डी.डी.ऐ. वाले हाथ सभी जोडेंगे।
यहां जब सब की भी लगेगी कहरी दुनिया सारी।।

8. राजेन्द्र जनमे तेरे यमुना तेरे खेत में, खेलगांव में याने जन्म

लिया है।

आजादी का तिलक दिया है, याने झंडा गाडा तेरे खेत में ।।
यमुना जी, सुनील, विनोद भी दौड़े आए, प्रकाश जी को साथ में लाए ।।
उनने धरना दिया तेरे खेत में, यमुना जी तेरे खेत में।।
दुस्टन ने तेरे पेड़ उखाड़े, हरे भरे सब खेत उजाड़े ।
भवन बनाए तेरे खेत में, यमुना जी तेरे खेत में।
राजेन्द्र सिंह कसम उठाई, जय जय मेरी यमुना माई ।
तूझे मुक्ती दिलाउ तेरे खेत में यमुना जी तेरे खेत मे।।

9. मैं खेलूंगी यमुना मैया तेरे बालू रेत में, मैं तरूंगी यमुना मईया तेरे निर्मल नीर में।

तोरी लगे तुझमें, घिया लगे तुझमें, लाल लाल टिमाटर लग रे यमुना तेरे खेत में।
खीरा लगे तुझमें, ककड़ी लगे तुझमें, लाल लाल तरबूज लगरे यमुना तेरे खेत में।
नाव चले तुजमें, किस्ती चले तुझमें, मैं बैठूंगी यमुना मईया तेरे आंगन बोट में।
मैं मरूंगी यमुना मईया तेरे निगम बोद्ध में।
मेरी राख सिलेगी यमुना मईया तेरे निर्मल नीर में।

10. भूत काल में यमुना मां तेरी दुध सी धारा बहती।

वर्तमान में यमुना मां मल, मूत्र की धारा बहती।
भूतकाल में यमुना मां के जल में मछली पलती।
वर्तमान में यमुना मां तेरे जल में मछली मरती।
गाय सभी चरती थी यहां दुध की धारा बहती।
यमुना मां तेरे जल के उपर कितनी चलती किस्ती ।
यमुना मां तेरी खेती में सब सब्जी मिलती सस्ती कितनी।
यहां पर बसती थी यमुना के किनारे रहती ।
जितने भी नेता सारे–सारे थे ये कपटी ।
यमुना मां की खेती पर ये करते छिना झपटी ।
जेब सभी की कटती है अब न्याय की धारा बहती।
काली दहये खेलन आयो री मेरो बारों सो कैन्हिया।

काहे की या ने गेंद बनाई, काहे की को बल्ला लायो से ।
मेरो बारो सो कैन्ईया पर रेश्म की गेंद बनाई।
चन्दन बल्ला लायों री मेरो बारो सो कैन्हया ।
मारो टोल गेंद गई दह में गेंद की संग समायो री मेरी बारें से कैन्हया।

11. मीरा तेने नयनो गंवाऐ रोय–रोय, दुनिया कहे मीरा भई री बावरी।

लाल शर्म दई खोय, मीरा तने नयनो गवांऐ रोय–राये ।
छोटी सी तेरी अदक चुन्दरीया फटे न मेली होय, मीरा तने नयनों गवाऐं रोय–रोय ।
जहर का प्याला राणा जी ने भेजा पीवत अमृत होय।
कदम–कदम मोय भारी दर्शन दे जा रे बिहारी।
तुम तो रे कोहना बंसी बजाते मैं हूं सुनने वारी।। रे दर्शन देजा रे बिहारी तुम तो ओड़ो कम्ल काला में रेशम की साड़ी रे दर्शन देज़ारे बिहारी तुम तो कोहना बिन्द्रा बनके में बरसोना वारी रे दर्शन देजा बिहारी।

यमुना सत्याग्रह के 111 दिन

1 अगस्त 2007	खेलगांव की जगह यमुना के फ्लड प्लेन में चुनने को गलत मानते हुए। उस स्थान को यमुना की मानते हुए पेड़ लगाकर यमुना सत्याग्रह शुरू किया।
2 अगस्त 2007	सत्याग्रह जारी बहुत से लोगों से बातचीत चालू हुई है।
3 अगस्त 2007	पजांब के किसानों को यमुना सत्याग्रह जोड़ने का आहवान पिंगलवाड़ा जाकर किया। ड़ौला के लोग आकर जुड़े।
4 अगस्त 2007	चंडीगड़ में कम्यूनिष्ट पार्टी के किसान संगठन के साथ बात करके उन्हें यमुना सत्याग्रह में जुड़ने का आहवान किया।
5 अगस्त 2007	दिल्ली के किसान संगठन झील खुरंजा मिल्क प्रोडूसर कोपरेटिव सोसायटी के सदस्यों की बैठक आयोजित करके उन्हें यमुना सत्याग्रह में जोड़ने की कोशिश शुरू करी। कुर्सिया घाट के मल्हाओं और पडिंतो का जुड़ाव सत्याग्रह में दिखाई दिया।

6 अगस्त 2007	दिनेश राय उपाध्यक्ष दिल्ली विकास अभिकरण के साथ बैठक आयोजित हुई। इसमें खेलगांव की साईट बदलने का दबाव दिल्ली सरकार पर बनाया।
7 अगस्त 2007	कावड़ियों को यमुना सत्याग्रह में जोड़ने की योजना बनाई।
8 अगस्त 2007	कावड़ियों से यमुना बचाने की बातचीत हुई।
9 अगस्त 2007	सत्याग्रह से इण्डिया इन्टर नेशनल सेन्टर में जाकर जल का भ्रष्टाचार मिटाने हेतु जन संगठन बनाने की बातचीत करी।
10 अगस्त 2007	यमुना सत्याग्रह का दसवां दिन मनाया। बहुत लोग आये। आज सरकार खेलगांव का काम शुरू नहीं कर पायी।
11 अगस्त 2007	यमुना किनारे के किसानों से उनके खेती पर बातचीत करके उन्हें समझाने व तैयार करने गया।
12 अगस्त 2007	लोनी की तरफ गॉवो में जाकर उन्हें यमुना को बचाने हेतु तैयार किया। जन्तर–मन्तर पर साकेतिक सत्याग्रह का संदेश दिया। प्रेस को विस्तार से बताया।
13 अगस्त 2007	यमुना की आजादी हेतु प्रधान मंत्री के ज्ञापन दिया। यह ज्ञापन जन्तर–मन्तर से भेजा।
14 अगस्त 2007	जल संसाधन मंत्री प्रो.सोज सहाब को यमुना सत्याग्रह की जानकारी दी। सत्याग्रह में अधिक लोगो का जुड़ाव।
15 अगस्त 2007	यमुना किनारें पदयात्रा की। यमुना की आजादी का ध्वजारोहण यमुना में महिलाओं ने फहराया। दिल्ली के संगठन और समाज जुड़ने लगा।
16 अगस्त 2007	वशिष्ट नारायणसिंह राजसभा सदस्य से मिला। श्री रघुवंश प्रसाद सिंह ग्रामीण विकास मंत्री से मिलकर यमुना सत्याग्रह को विस्तार से बताया।
17 अगस्त 2007	महामहिम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सभी मंत्रियों व सांसदों को पत्र भेजे।
18 अगस्त 2007	श्री राम स्कूल के बच्चे सत्याग्रह में आये। उन्हें यमुना संकट समझाया।
19 अगस्त 2007	कुऐं में सत्याग्रह हुआ।

20 अगस्त 2007	हरियाणा के किसानों की सभा में उन्हें यमुना सत्याग्रह में जुड़ने की बातचीत की।
21 अगस्त 2007	सप्तऋषि, यमुनोत्री में यमुना की ऊर्जा प्राप्त करने गया। वहां के युवाओं को यमुना सत्याग्रह में जुड़ने का आहवान किया। वहां के लोग जुड़े।
22 अगस्त 2007	उत्तराखण्ड़ जल बिरादरी को यमुना सत्याग्रह समझाया। इन्हें यमुना के लिए सत्याग्रह में जुड़ने की जिम्मेदारी दी।
23 अगस्त 2007	यमुना किनारें के लोगों से सम्पर्क किया, सहारनपुर में प्रो. पी.के. शर्मा को यमुना के कार्यों से मेरठ विश्वविद्यालय के छात्रों को जोड़ने की व्यवस्था बनाई।
24 अगस्त 2007	जन्तर–मन्तर पर सत्याग्रह किया।
25 अगस्त 2007	सत्याग्रहियों को चारो तरफ से दिवार बनाकर कैद किया। भोजन भी नहीं लाने दिया। इस समस्या को शान्ति पूर्वक हल निकालने के रास्ते में लग रहें।
26 अगस्त 2007	सत्याग्रह स्थल पर श्री राजेन्द्र सिंह के साथ अन्य साथियों ने मौनव्रत व उपवास किया।
27 अगस्त 2007	सत्याग्रह के 27 वें दिन भी सत्याग्रह स्थल में मौनव्रत व उपवास पर बैठे।
28 अगस्त 2007	रक्षा बन्धन का पवित्र त्योहार के अवसर पर सभी सत्याग्रहियों ने पेड़ो को राखी बांधी।
29 अगस्त 2007	मौनव्रत व उपवास जारी रहा।
30 अगस्त 2007	मौनव्रत व उपवास के चलते आगे की रणनीति पर विचार विमर्श।
31 अगस्त 2007	राजेन्द्र सिंह से सुनील प्रभाकर ने उपवास के चलते सरकार के द्वारा बात न सुनने पर उसे जगाने का प्रयास किया गया।
1 सितम्बर 2007	सत्याग्रह स्थल पर मौनव्रत व उपवास जारी।
2 सितम्बर 2007	सत्याग्रह स्थल पर एन.डी.ए. के पूर्व मंत्री जार्ज फर्नाड़िस सत्याग्रह स्थल पहुंचे उन्होंने आन्दोलन की सराहना व्यक्त की। उन्होंने अक्षर धाम मन्दिर निर्माण की गलती होने पर

	अपने को दोषी बताया उसके लिए क्षमा मांगी, और कहा कि खेलगांव को रोकने के लिए सरकार से आग्रह करूंगा।
3 सितम्बर 2007	सत्याग्रही मौन व्रत व उपवास पर बैठे।
4 सितम्बर 2007	यमुना सत्याग्रह ने कृष्ण जन्मष्टमी मनाने का कार्यक्रम बनाया व रैली का अयोजन किया।
5 सितम्बर 2007	कृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम का आयोजन, सत्याग्रह में अन्य दिनों से ज्यादा लोग जुड़े।
6 सितम्बर 2007	सत्याग्रह स्थल में जल बिरादरी की तरफ से प्रेस कान्फ्रेन्स की गई।
7 सितम्बर 2007	हरियाणा के कालेजों, विश्वविद्यालयों, सरकारी कालेज, जाट कालेज आदि समाजिक विशेषज्ञों के पत्रकारों आदि के साथ संवाद।
8 सितम्बर 2007	जन्तर–मन्तर पर धरना कार्यक्रम व उस कार्यक्रम का रूप युवा उल्टे कपड़े पहनकर संसद भवन तक उल्टे चलते गए।
9 सितम्बर 2007	सत्याग्रह के अगले कदम पर कार्यकर्ताओं से बातचीत की।
10 सितम्बर 2007	जाति भेद मिटाओं सुन्दर समाज बनाओं महारैली विशाल संकल्प सभा को सम्बोधित किया।
11 सितम्बर 2007	चौ. ब्रहम्पाल नागर के कार्यक्रम 12 सितम्बर के आयोजन की तैयारी हेतु समिति गठित की।
12 सितम्बर 2007	चौ. ब्रहम्पाल नागर के कार्यक्रम में स्थानीय जनता का जनसैलाब पर्यावरण व यमुना बचाओं पर प्रस्तुत गीतों ने उपस्थित जनता को ओतप्रोत किया।
13 सितम्बर 2007	यमुना सत्याग्रह मुददे पर उसे बचाने के लिए सम्मेलन दूसरे दिन यमुना बचाओं की रैलियां निकालने का कार्यक्रम बनाया।
14 सितम्बर 2007	सत्याग्रहियों द्वारा बेनर लेकर राजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में यमुना बचाओं यात्रा नगंली, रजापुर, सरायकांले खां व गांव को प्रस्थान, राजेन्द्र सिंह ने यमुना एवं पानी की लड़ाई को हैबिटेट सेन्टर में ताकत से उठाने की जानकारी दी।

15 सितम्बर 2007	यमुना बचाओं यात्रा चिल्ला गांव के अलावा कई गांव में पहुंची।
16 सितम्बर 2007	सत्याग्रहियों द्वारा उल्टे कपड़े पहनकर जन्तर–मन्तर के लिए प्रस्थान।
17 सितम्बर 2007	सत्याग्रहियों के बीच 19.9.07 की महांपचांयत को सफल बनाने के लिए कार्य योजना पर विचार विमर्श एकता परिषद के राजगोपाल पी.वी. द्वारा समर्थन व्यक्त।
18 सितम्बर 2007	सत्याग्रहियों के द्वारा यमुना बचाओं की मांग को विधान सभा के सम्मुख 6 सदस्यों के द्वारा रखा, तथा 19.9.07 को विधान सभा सदस्यों को यमुना सत्याग्रह स्थल पर आने का निमंत्रण देना।
19 सितम्बर 2007	पी.वी. राजगोपाल, मेधा पाटेकर, राकेश टिकेत, हर्षवर्धन, उदित राज, कुलदीप नैयर, युदवीर सिंह, गोविन्दा चार्य आदि ने सत्याग्रह स्थल पहुंच कर समर्थन व्यक्त किया।
20 सितम्बर 2007	यमुना बचाओं आन्दोलन के लिए समसपुर, शकरपुर, मडावली एवं पटपटगंज गांव के किसानों की भागीदारी 21.10.2007 पटपटगंज, समसपुर, चिल्लागांव में सभा आयोजन कार्यक्रम।
21 सितम्बर 2007	सत्याग्रह स्थल में स्वामी परिपूर्णान्त पहुंचे, उन्होंने सत्याग्रह स्थल पर संतो को पहुचेन की अपील की। सभी संतो को लाने का वायदा किया।
22 सितम्बर 2007	यमुना सत्याग्रह स्थल में उस्मानपुर गांव से चौ. अजीत सिंह अपने साथियों के साथ आन्दोलन को समर्थन देने पहुंचे।
23 सितम्बर 2007	सत्याग्रह स्थल में अरावली इन्सीटीयूट ऑफ मैनेजमैन्ट जोधपुर में पुराने विद्यार्थी पहुचें। राजेन्द्र सिंह व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मीना सिंह ने उपवास किया।
24 सितम्बर 2007	आन्ध्रप्रदेश के किसानों ने आन्दोलन का समर्थन किया दिल्ली पीजेन्टस मल्टीपरपज कोपरेटिव सोसायटी के महासचिव से यमुना सत्याग्रह पर और विस्तार से चर्चा की।
25 सितम्बर 2007	भारतीय जन संसद सयुक्त मोर्चा के अध्यक्ष बाबा रामकृष्ण देव जी सत्याग्रह पहुचंकर समर्थन व्यक्त किया।

26 सितम्बर 2007	दिल्ली पिजेन्टस मल्टीपरपज सोसायटी के अध्यक्ष श्री विभूति सिंह ने यमुना सत्याग्रह स्थल पर पहुंचकर समर्थन व्यक्त किया।
27 सितम्बर 2007	श्री राम स्कूल अरावली गुडगांव के छात्र–छात्रा सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। छात्र–छात्राओं को विस्तार से यमुना बचाओं आन्दोलन के बारे में बताया।
28 सितम्बर 2007	भगत सिंह बिग्रेड ने सत्याग्रह स्थल पर पहुंचकर यमुना नदी का गीत प्रस्तुत किया दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं ने युथफॉर जास्टिस के फोरम के साथ सत्याग्रह की रैली निकालकर यमुना के पेट में बनाए जाने वाले खेलगावं का विरोध किया।
29 सितम्बर 2007	यमुना सत्याग्रह स्थल पर 2 अक्टूबर को कार्यक्रम पर चर्चा हुई।
30 सितम्बर 2007	यमुना सत्याग्रह स्थल में समसपुर गांव से श्री मती शकुन्तला देवी यमुना खादर से बहन डोली भी पहुंची, उन्होंने उपवास किया।
1 अक्टूबर 2007	यमुना सत्याग्रह में उपवास, राजघाट तक पदयात्रा की तैयारी दिल्ली के लोगों को जोड़ने पर बातचीत। दिल्ली के लोगों की जिम्मेदारी लेने पर गोष्ठी का आयोजन।
2 अक्टूबर 2007	सत्याग्रह स्थल पर गांधी जयन्ती का आयोजन के साथ आन्दोलन स्थल से राजघाट तक पदयात्रा, राजघाट पर सभा, पदयात्रा में कई राज्यों के लोगों ने भागीदारी निभाई। गांधी शान्ति प्रतिष्ठान अध्यक्षा राधा भटट बहन ने यमुना सत्याग्रह में भागीदार रहें बहन व भईयों को पुरूस्कार से सम्मानित किया। यह तरूण भारत संघ ने कराया।
3 अक्टूबर 2007	जन्तर–मन्तर पर उपवास राजेन्द्र सिंह ने शुरू किया राजघाट व सत्याग्रह स्थल में भागीदारी।
4 अक्टूबर 2007	कॉमनवैल्थ देश के सदस्यों के साथ गांधी शान्ति प्रतिष्ठान से जन्तर–मन्तर प्रातः प्रभात रैली निकाली उनका यमुना बचाने में समर्थन मिला। आन्दोलन का समाचार कवरेज हेतु प्रेस के लोगों से बातचीत के उपरान्त राजघाट पहुचंकर

	एक साझा पदयात्रा राजघाट से विश्वशान्ति स्तूप तक सत्याग्रहियो ने की।
5 अक्टूबर 2007	उपराज्यपाल के साथ सत्याग्रहियों की बैठक, उन्होंने नदियों को शुद्ध–सदानीरा और पहले की तरह देखने पर बल दिया उन्होंने इस मुददे को अधिकारियों, नेताओं के सामने रखने का प्रयास करने को कहें। राजघाट पर सत्याग्रह में राजेन्द्र सिंह बोले।
6 अक्टूबर 2007	यमुना सत्याग्रह यात्रा राजघाट स्थिति यमुना सत्याग्रह स्थल से चलकर कुर्सिया घाट तक पहुंचे। सत्याग्रहियों ने नाटक के माध्यम से यमुना पर अत्याचारों की और ध्यान आकर्षण किया। हरि राम मल्लाह ने सत्याग्रह शुरू किया।
7 अक्टूबर 2007	सत्याग्रहियों ने हवन के माध्यम से यमुना को शुद्ध–सदानीरा बनाने का संकल्प लिया। यमुना को बचाने हेतु रक्षा संकल्प के लिए 1000 शहर के नागरिक एकत्र हुए।
8 अक्टूबर 2007	दिल्ली सरकार को जगाने और कॉमनवैल्थ खेलगांव के विरोध में अरावली इन्सटीटूयट ऑफ मैन्जमेन्ट के 250 छात्र–छात्राओं एवम् यमुना किनारे के बच्चों व महिलाओं ने राजघाट से दिल्ली सचिवालय तक राजेन्द्र सिंह के साथ पदयात्रा की।
9 अक्टूबर 2007	यमुना सत्याग्रह स्थल में सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री एम.सी. मेहता (मेग्सेसे पुरूस्कार से सम्मानित) भागीदारी कर समर्थन किया। सुप्रीम कोर्ट के लिए 150 छात्र–छात्राओं ने पदयात्रा ले जाने का प्रयास लेकिन पुलिस वालों ने आई. टी.ओ. से आगे नहीं जाने दिया। वापस गांधी शान्ति प्रतिष्ठान में रहकर सत्याग्रह किया। इसमें श्री एस.एन. सुब्बाराव जी ने साथ दिया।
10 अक्टूबर 2007	सत्याग्रही राजघाट से जन्तर–मन्तर पद यात्रा करके गये यमुना सत्याग्रह के बारें में बातचीत की व आगे की रणनीति बनाई।
11 अक्टूबर 2007	सत्याग्रह स्थल पर शकरपुर, मण्डावली गांव के अनेक किसानों के द्वारा सत्याग्रह संचालन समिति बनाई।

12 अक्टूबर 2007	उपराज्यपाल, मुख्यमंत्री को यमुना के संकट से अवगत कराया। राजभवन दिल्ली में देश की जल और पर्यावरण विचार विमर्श की बैठक में सबकी बात सुनी। मुख्यमंत्री उपराज्यपाल ने तुरन्त यमुना बचाने जरूरी है। बहुत जोर दिया।
13 अक्टूबर 2007	राजघांट से जन्तर–मन्तर तक पदयात्रा। यमुना सत्याग्रह व जनादेश की भावी कार्यक्रमों की योजना एस.एन.सुब्बराव, कुलदीप नैयर, राधा भटट, भारत भूषण जी के साथ बनाई।
14 अक्टूबर 2007	गांधी शांति प्रतिष्ठान में प्रेस कान्फ्रेन्स में इंग्लैण्ड के गेराल्ड कोनिगम ने कहा कि वे खेलगावं में इग्लैण्ड में जाकर सामाजिक संस्थाओं के बीच यमुना बचाओं की जानकारी लोगों के बीच व मीडीया के बीच रखेंगे।
15 अक्टूबर 2007	दिल्ली के मुख्य क्षेत्र माने जाने वाले सेन्ट्रल पार्क में 350 लोगों ने मोमबत्ती जलाकर अपना रोष व्यक्त किया। यूथ फॉर जस्टिस के कपील मिश्रा ने दिल्ली को यमुना हेतु जगाने का संदेश दिया।
16 अक्टूबर 2007	राजेन्द्र सिंह की राहुल गांधी से भेंट कर देश भर में जल संरक्षण करने की बातचीत यमुना सत्याग्रह की पूरी जानकारी दी उन्होंने सोनिया गांधी से मिलने का आग्रह किया, साथ ही यमुना बचाने की बातचीत हुई।
17 अक्टूबर 2007	दिल्ली सर्पोट समूह की बैठक हुई दिल्ली की संस्थाओं का सहयोग प्राप्त, दर्जनों संस्थाओं ने नैतिक समर्थन की घोषणा की। डा. करण सिंह के साथ श्री राजेन्द्र सिंह नेहरू मैमोरियल फंड में मीटींग।
18 अक्टूबर 2007	हर की पोड़ी गंगा स्नान एम.सी. मेहता संस्थान सार्क देशों के वकीलों को यमुना सत्याग्रह की जानकारी दी। यमुना की शुद्धता हेतु एम.सी मेहता एवं राजेन्द्र सिंह ने मिलकर यज्ञ किया।
19 अक्टूबर 2007	यमुना सत्याग्रह से पडोसी देश के लोगों को समझाया।
20 अक्टूबर 2007	यमुना सत्याग्रह में स्थानीय लोगों के जुड़ाव हेतु सत्याग्रहियों की तैयारी कराई।

21 अक्टूबर 2007	सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह के कार्यकर्ताओं को राजघाट से हटाने का विरोध किया।
22 अक्टूबर 2007	संकल्प स्थल गांव माडन रिवाडी, खेतडी कुण्ड, कुण्ड बेरियर। सभा करके यमुना सत्याग्रह में हरियाणा–राजस्थान के लोगो को जोड़ने की तैयारी की।
23 अक्टूबर 2007	जसोला सत्याग्रह शुरू किया। गोपाल सिंह को एस.एन. सुब्बराव जी से मिला कर, युवाओं को सम्बोधित किया।
24 अक्टूबर 2007	कालन्दी कुंज बैराज तक देश भर के 560 युवाओं को प्रदूषण के खतरे दिखाये यमुना नष्ट होने व इसे बचाने के उपायों पर चर्चा हुई।
25 अक्टूबर 2007	दिल्ली जागो यात्रा का शुभारम्भ किया, प्रो. सैफुददीन सौज़ से भेट कर उन्हें यमुना में हो रहें प्रदूषण पर उनका ध्यान आकर्षण किया। यमुना बचानें का आग्रह किया।
26 अक्टूबर 2007	मेरठ में प्रो. राणा के साथ मिलकर यमुना को बचाने हेतु एक साझा आयोजन में साथ होने की तैयारी की।
27 अक्टूबर 2007	श्री राम स्कूल के निदेशक शिक्षक व विद्यार्थियों को यमुना बचाने का संकल्प दिलाया।
28 अक्टूबर 2007	दिल्ली में जल पदयात्रा करी। ज्योतिरादित्या सिंधिया से मिलकर यमुना बचाना क्यों जरूरी है। इस पर उन्हें समझाया। उन्होंने इस कार्य में साथ देने का वचन दिया।
29 अक्टूबर 2007	राजेन्द्र सिंह जनादेश के सारे कार्यक्रम में रामलीला मैदान में दिन भर अघोषित जेल में रहें।
30 अक्टूबर 2007	नदी सम्मेलन में विभिन्न राज्यों से जल बिरादरी, तरूण भारत संघ से जुड़े साथियों ने भागीदारी दी। देश भर के 18 राज्यों के प्रतिनिधी शामिल हुए। जनहित याचिका उच्चन्यायालय में राजेन्द्र सिंह जी ने डाली।
31 अक्टूबर 2007	सत्याग्रह हटाने की पी.डब्लू.डी. की चेतावनी प्राप्त हुई। जल बिरादरी का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। यमुना हेतु काम करने का साझा निर्णय हुआ।
1 नवम्बर 2007	अन्य दिनों की तरह यमुना सत्याग्रह जारी रहा। शहरों में

	आन्दोलन को किस तरह से आगे बढाया जाये चर्चा की गई।
2 नवम्बर 2007	यमुना सत्याग्रह स्थल में आन्दोलन से सम्बधित जन गीतों का आयोजन किया व गीतों के माध्यम से यमुना बचाने का संदेश उपस्थित लोगों को दिया।
3 नवम्बर 2007	यमुना सत्याग्रह स्थल में श्री विजय प्रताप सिंह, प्रो. साव्य सांची ने जामिया मिलिया विश्वविद्यालय की छात्राओं ने भागीदारी रही इन्होंने सत्याग्रह से मिलकर काम करने की योजना बनाई। सत्याग्रह के मुख्य नेता राजेन्द्र सिंह ने कहा खेलगांव नहीं रूका तो सत्याग्रह जारी रहेगा।
4 नवम्बर 2007	सत्याग्रह स्थान पर बैठे लोगों की बैठक का आयोजन कर आन्दोलन की भावी रणनीति पर विचार विमर्श तथा 11 नवम्बर से प्रारम्भ यात्रा में शामिल होने का आग्रह किया।
5 नवम्बर 2007	डब्लू.डब्लू.एफ. लोधी रोड के लिए यमुना सत्याग्रह स्टेट होल्डर की मिटींग में शामिल तथा दिल्ली पिजेन्टस मल्टीपरपज कोपरेटिव सोसायटी एवं झील खुरजां कोपरेटिव सोसायटी के पदधिकारी एंव वरिष्ठ सदस्य शामिल हुऐ।
6 नवम्बर 2007	कुर्सिया घाट यमुना सत्याग्रह पहुंचने तथा इसके बाद कॉमनवैल्थ खेलगांव की साइट सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे।
7 नवम्बर 2007	दिल्ली जागो यात्रा के समापन समारोह में शामिल होने साझासफर कार्यक्रम में जनपद पर पहुचें यात्रा के सयोंजक नकवी जी ने बताया कि यात्रा के दौरान 15 दिन में 12 लाख लोगों से सम्पर्क किया। छत्तीसगढ़ जल बिरादरी के अध्यक्ष गोतमबन्धु उपाध्याय उपस्थित हुये सत्याग्रह के 100 वें दिन यमुना नदी के किनारे दीपक जलकार मनाया जाये।
8 नवम्बर 2007	सत्याग्रह का 100 वें दिन सभी प्रातः 8 बजे सत्याग्रह स्थल पर पहुंचें सत्याग्रह स्थल पर सफाई करने के बाद। श्री राजेन्द्र सिंह ने सभी से यमुना की शुद्धता व सदानीरा बनाने हेतु कार्य करने का सकंल्प दिलाया। आज 100 वें दिन का यज्ञ भी हुआ।
9 नवम्बर 2007	दिपावली के पावन त्योंहार पर श्री राजेन्द्र सिंह जी की अगुवाई में सभी सत्याग्रही यमुना किनारे गए व दिप प्रज्वलित

	किया। गाजियाबाद से डा. प्रतिभा व श्री विक्रान्त शर्मा भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे।
10 नवम्बर 2007	श्री अर्जुन सिंह मानव संसाधन विकास मंत्री के साथ होने वाली बैठक हेतु एक पूर्व तैयारी मिटिंग रखी जिसमें राजेन्द्र सिंह, मनोज मिश्रा, संजय कॉल, प्रो. विक्रम सोनी, कुलदीप नैयर, दिवान सिंह व मा. बलजीत सिंह मौजूद रहे।
11 नवम्बर 2007	आज तक न्यूज चैनल पर यमुना सत्यागृह देखकर प्रेरित हुए श्री एस.कपूर सत्याग्रह स्थल पर आए व मयूर विहार के आस–पास की सभी कोलोनियों एवं सोसायटी को यमुना सत्याग्रह से जोड़ने की बात कही।
12 नवम्बर 2007	श्री अर्जुन सिंह जी केन्द्रीय मंत्री के कार्यालय पर आयोजित विशेष केबिनेट मिटिंग बुलाई गई। श्री मनोज मिश्रा, राजेन्द्र सिंह, कुलदीप नैयर, विक्रम सोनी ने यमुना सत्याग्रह का पक्ष मजबूति से रखा, व उपराज्यपाल महोदय नें 22 नवम्बर को टेकनिकल लोगो की एक बैठक बुलाने का आश्वासन दिया। मिटिंग में सभी केन्द्रीय मंत्री एवं मुख्य मंत्री शीला दीक्षित भी मौजूद थी।
13 नवम्बर 2007	श्री किशोरी लाल आज उपवास पर बैठे। यमुना सत्याग्रह के समर्थन में कमला नेहरू कालेज में एक खुली वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।
14 नवम्बर 2007	चाचा नेहरू के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में सत्याग्रह स्थल पर मनाने के लिए ऐथन्स पब्लिक स्कूल नोएडा, कमला नेहरू कालेज पर्यावरण विज्ञान केन्द्र व अन्य विद्यालयों के विद्यार्थी एकत्रित हुए। मनोज मिश्रा जी व बलजीत सिंह के साथ यमुना किनारे तक गए व यमुना सत्याग्रह के पक्ष में अपना समर्थन देने का संकल्प किया। शाम को श्री राजेन्द्र सिंह ने सी.एस.सी. से आये सुरेश भाई व विद्यार्थियों को यमुना नदी व यमुना सत्याग्रह के विषय में बताया।
15 नवम्बर 2007	यमुना सत्याग्रह स्थल पर मंडावली, समसपुर व पटपडगंज के किसान एकत्रित हुए। राजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में यमुना भूजल बचाओं पदयात्रा करने का निर्णय लिया गया। जो यमुना के पूर्वी व पश्चिम तट के किनारे रखी। 1.12.2007 से 9.12.2007 तक प्रस्तावति है।

16 नवम्बर 2007	छठ के विशेष अवसर पर आज यमुना सत्याग्रही द्वारा वजीराबाद, कुर्सियाघाट व आई.टी.ओ. पर यमुना किनारे पर्चे बटवांए व लोगों से बातचीत की गई। साथ ही गांधी शान्ति प्रतिष्ठान में आयोजित अन्तराष्ट्रीय शताब्दी समारोह में राजेन्द्र सिंह ने यमुना सत्याग्रह का पक्ष रखा।
17 नवम्बर 2007	यमुना किनारे छह जगह छठ मनाई जाती है। आज प्रातः मयूर विहार के सामने नानकसर व सांगली पर पर्चे बांटे व यमुना सत्याग्रह के पक्ष में लोगों से बातचीत की गई। एन. डी.टी.वी. द्वारा आयोजित यमुना कार्यक्रम में राजेन्द्र सिंह, बलजीत सिंह, प्रो. विक्रम सोनी, संजयकॉल व दिवान सिंह ने यमुना खादर के पक्ष में अपनी बात रखी। दिवान सिंह आज उपवास पर रहें।
18 नवम्बर 2007	आज सत्याग्रह स्थल पर उत्तराखण्ड से श्री जगबहादूर थापा व डा. शमशेर सिंह बिस्ट यमुना सत्याग्रह के समर्थन में पहुंचे। यमुना भूजल बचाओं पदयात्रा कि तैयारी दिनभर चलती रही।
19 नवम्बर 2007	यमुना सत्याग्रह स्थल पर सुनील प्रभाकर जी आज उपवास पर रहे। बलजीत सिंह व अन्य साथियों द्वारा यमुना यात्रा हेतु रूट निश्चित करने का कार्य किया।

15.10.2007 सत्याग्रह का 76 वां दिन

प्रातः राजस्थान से आए हुए सत्याग्रही श्री भगवान सहाय मीणा ने सत्याग्रह स्थल की सफाई की तथा इसी के साथ दिन की कार्यवाही शुरू हुई। शकरपुर गांव से श्री किशोरी लाल सत्याग्रह स्थल पर आये। आज किशोरी लाल जी ने मौन व्रत व उपवास पर बैठे। समसपुर गांव से श्री भूपसिंह, श्री प्रीतम सिंह, श्री सुखबीर सिंह, श्री धरम सिंह व पटपटगंज गांव से जसंवत स्वरूप श्री राम स्वरूप, श्री सोहन लाल, श्री गिरधारी एवं श्री बाले, श्री चैन सिंह तथा मण्ड़ावली गांव से श्री मुरली चौधरी भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। दिन भर सभी सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह के बारे में विचार विमर्श किया, शाम को प्रार्थना सभा के बाद मा. बलजीत सिंह ने श्री किशोरी लाल का उपवास एवं मौनव्रत पुरा करवाया।

16.10.2007 सत्याग्रह का 77 वां दिन

प्रातः सत्याग्रह स्थल की सफाई के साथ आज की दिनचर्या शुरू हुई तथा भगवान सहाय मीणा आज उपवास पर बैठे अन्य ग्रामीणों के साथ श्रीमती अतरावती एवं श्रीमती शिमला देवी भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंची लगभग 3:00 बजे श्री मनोज मिश्रा एवं श्रीमती सुधा मोहन भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। 4:00 बजे श्री राजेन्द्र सिंह सत्याग्रह स्थल पहुंचे तथा सत्याग्रह को वजीराबाद एवं जसौला गांव के पास भी चलाने का प्रस्ताव रखा। वजीराबाद पर सत्याग्रह शुरू करने की जिम्मेदारी मा. बलजीत सिंह एवं जसौला में सत्याग्रह चलाने की जिम्मेदारी श्री रामस्वरूप एवं श्री प्रीतम सिंह को सौंपी गई। इसके साथ–साथ 30.10.2007–31.10.2007 को जल बिरादरी का एक चिन्तन शिविर लगाने का फैसला किया गया शाम को श्री राजेन्द्र सिंह ने प्रार्थना सभा के पश्चात भगवान सहाय मीणा का उपवास पूरा कराया। इस कार्यक्रम में अब दिल्ली से बाहर यमुना से जुड़े लोग जुड रहें है। अब यमुना सत्याग्रहियों की संख्या बढ़ रही है। राजेन्द्र सिंह के साथ बाहर के लोग शामिल हुऐ है।

17.10.2007 सत्याग्रह का 78 वां दिन

श्री छोटे लाल मीणा एवं भगवान सहाय मीणा ने प्रातः सत्याग्रह स्थल की सफाई की तथा दिन के कार्य की शुरूआत की शकरपुर से भी श्री किशोरी लाल सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। मंडावली गांव से भी श्री मुरारी जी पहुंचे। यमुना सत्याग्रह के बारे में परस्पर वार्तालाप किया। शाम को प्रार्थना सभा के पश्चात आज की कार्यवाही पूरी हुई।

18.10.2007 यमुना सत्याग्रह का 79 वां दिन

श्री राजेन्द्र सिंह के आदेश अनुसार मा. बलजीत सिंह श्री छोटे लाल मीणा जी को साथ लेकर वजीराबाद यमुना सत्याग्रह शुरू करने के लिए रवाना हुए। वहां पर पेन्टुन पुल पर सत्याग्रह की शुरूआत की। दिल्ली पीजैन्ट मल्टीपरपज कोपरेटिव सोसयाटी से श्री दीपक गुप्ता एवं सोसायटी के प्रधान श्री विभूति सिंह एवं सचिव मा. बलजीत सिंह सत्याग्रह स्थल पर बैठे। श्री राजेन्द्र सिंह के कहने के अनुसार बलजीत सिंह श्री छोटे लाल, व श्री प्रीतम सिंह गांधी शान्ति प्रतिष्ठान पहुचें, जहां पर पानी की समस्या को लेकर सहगल फाउंडेशन के द्वारा एक सेमीनार का आयोजन श्री राजेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ इस सेमिनार में जनोदश 2007 के बहुत

से लोग भी शामिल थे। श्री राजेन्द्र सिंह, बलजीत सिंह, मनोज मिश्रा, श्रीमती सुधा मोहन, श्रीमती मधु भटनागर ने दीप जलाकर सेमिनार का उदघाटन किया। मा. बलजीत सिंह ने

गोष्ठी का आरम्भ करते हुए कहा कि सरकार नदी के किनारें पर बैठे हुए किसानों को हटाकर यमुना नदी के क्षेत्र को कंकरीट में बदल रही है। इस भूमि पर यह किसान 1949 से एक पटटे के तहत बैठे हुए है। पहले किसानों से भूमि छीन कर एन.डी.ए. सरकार ने अक्षरधाम बनाया तथा अन्य कांग्रेसी सरकार नदी के पेट में खेलगांव बनवा रही है। यदि इस कार्यो पर रोक नहीं लगाई तो जल्दी ही दिल्ली बे पानी हो जायेगी। जल बिरादरी से जुड़े हुए श्री मनोज मिश्रा ने फोटो सहित सरकार की गलत नीतियों की पोल खोली तथा नदी पर अत्याचार न करने की अपील की। श्री सेवक शरण महाराज जी ने अपने भाषण में कहा कि वह मथुरा से दिल्ली तक यमुना को बचाने के लिए एक पदयात्रा निकालेंगे। उन्होंने सभी दिल्ली वासियों को इस सत्याग्रह जुड़ने का आहवान किया। हरियाणा जल बिरादरी से आए हुए श्री इब्राहिम ने दिल्लीवासियों से भाई राजेन्द्र के हाथ मजबूत करने की बात कही। श्री राजेन्द्र सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में यमुना सत्याग्रह की आवश्यकता एवं उसकी और अधिक शक्ति से चलाने की बात कही । उन्होनें कहा कि यदि आज की पीढ़ी इस आन्दोलन को नहीं चलायेगी तो आगे आने वाली पीढ़ी हमें कभी नहीं माफ करेगी। इस अवसर पर यमुना सत्याग्रह के 75 दिन नामक पुस्तक का विमोचन श्री सेवक शरण जी के हाथों से हुआ। इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय से आए हुए प्रो. आनन्द जी ने इस आन्दोलन को अपने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों तक पहुंचाने का वायदा किया।

19.10.2007 यमुना सत्याग्रह का 80 वां दिन

श्री मुरारी शर्मा जी ने सत्याग्रह स्थल की साफ सफाई की। सत्याग्रह स्थल पर श्री किशोरी भी आए। समसपुर गांव से श्री बलजीत सिंह, भूप सिंह, प्रीतम सिंह, धरमसिंह, सुखबीर सिंह तथा शकरपुर से श्री महावीर सिंह भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। श्रीमती अतरावती भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे, शाम को लगभग 3 बजे कनाडा से श्री मेल कास्टलीन, विकी एवं तरूण भारत संघ के श्री गोपाल सिंह, राकेश सिंह, भवानी सिंह, विनोद कुमार भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। श्री किशोरी ने गीतों से सभी का मनोरंजन किया। 6 बजे करीब प्रार्थना सभा के पश्चात कार्यक्रम समाप्त हुआ।

20.10.2007 यमुना सत्याग्रह का 81 वां दिन

जयपुर से श्री सत्येन्द्र सिंह सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। अन्य सत्याग्रही भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। सभी सत्याग्रहियों ने जसौला गांव में सत्याग्रह चलाने की सम्भावना पर विचार विमर्ष किया। शाम को प्रार्थना सभा के पश्चात आज की कार्यवाही समाप्त हुई।

21.10.2007 यमुना सत्याग्रह 82 वां दिन

श्री छोटे लाल मीणा व मा. बलजीत सिंह के साथ वजीराबाद के सत्याग्रह के लिए गए समसपुर गांव से श्री भूपसिंह 9:00 बजे सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे, बाद में श्री राजेन्द्र सिंह भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे तथा सभी सत्याग्रहियों से सत्याग्रह के बारें में बातचीत की। लगभग 20 लोग समसपुर, शकरपुर, पटपटगंज एवं यमुना खादर से आए और शाम तक सत्याग्रह स्थल पर रहें। शाम को बहन अतरावती व सुशीला बहन अपने साथ 4 महिलाओं को लेकर सत्याग्रह स्थल पर पहुंची। करीब 6:30 बजे शाम को प्रार्थना सभा के बाद आज की दिन चर्या पूरी हुई।

22.10.2007 यमुना सत्याग्रह का 83 वां दिन

श्री छोटे लाल एवं मुरारी लाल शर्मा ने सत्याग्रह स्थल की सफाई की तथा सत्याग्रह की शुरूआत हुई। यमुना खादर से श्री चन्द्रपाल व श्री तेजपाल भी यमुना सत्याग्रह पर पहुंचे। इसी बीच समसपुर गांव से अनेक किसान भाई सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। एकता परिषद के मनीष और अनीष भी सत्याग्रह स्थल पर आये। पाण्ड़व नगर से बहन अतरावती भी पहुंची तथा सारे दिन यमुना सत्याग्रह पर वार्तालाप चलता रहा। शाम को प्रार्थना सभा के साथ आज के कार्यक्रम की समाप्ति हुई। पांच स्थानों कुर्सियाघाट, राजघाट, जन्तर–मन्तर, उच्चतम् न्यायालय के पीछे, खेलगांव साईटपर सत्याग्रह चालू है। राजेन्द्र सिंह आज सभी जगह गये।

23.10.2007 यमुना सत्याग्रह का 84 वां दिन

छोटेलाल मीणा, बलजीत सिंह जी वजीराबाद यमुना सत्याग्रह के लिए रवाना हो गये। शाम तक वजीराबाद सत्याग्रह स्थल पर रहे। आज वजीराबाद, कुर्सिया घाट, राजघाट, जन्तर–मन्तर, खेलगांव साईट पर सत्याग्रह चालू है। राजेन्द्र सिंह सभी जगह गये।

24.10.2007 यमुना सत्याग्रह का 85 वां दिन

डी.ऐ.वी. कालिज से कालन्दी कुन्ज तक यमुना सत्याग्रह यात्रा शुरू हुई। यात्रा यमुना किनारें पहुंची इसमें 600 लड़के लड़कियां शामिल हुऐ। इन्हें (जल पुरूष) राजेन्द्र सिंह ने सब कुछ बताया, यमुना को गन्दा किसने किया। विकास ने यमुना का विनाश कैसे किया। आज दिल्ली में ग्यारह स्थानों पर सत्याग्रह चालू है। राजेन्द्र सिंह आज जसोला सत्याग्रह में ही दिन भर रहें। आज यमुना सत्याग्रह के समर्थन में अनेक लोग सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे आज जशोला विहार एवं दक्षिणी दिल्ली में रंगपुरी में नए यमुना सत्याग्रह शुरू हुए। वजीराबाद सत्याग्रह स्थल पर बलजीत सिंह व छोटेलाल मीणा, दीपक गुप्ता, विभूति सिंह एवं सुनील प्रभाकर बैठे। जसोला विहार से यमुना सत्याग्रह तक एक रैली भी निकाली जिसमें डा. सुब्बाराव के नेतृत्व में 18 राज्यों से आए बाल कलाकारों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों से आए हुए बाल कलाकारों द्वारा अपने–अपने राज्यों के नृत्य पेश किए यह कार्यक्रम लगभग 7:00 बजे तक चला इसके पश्चात श्री राजेन्द्र सिंह ने डा. सुब्बाराव को शाल उड़ाकर सम्मान किया, तथा सुब्बाराव जी के साथ–साथ सभी बच्चों को इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए धन्यवाद किया।

25.10.2007 यमुना सत्याग्रह का 86 वां दिन

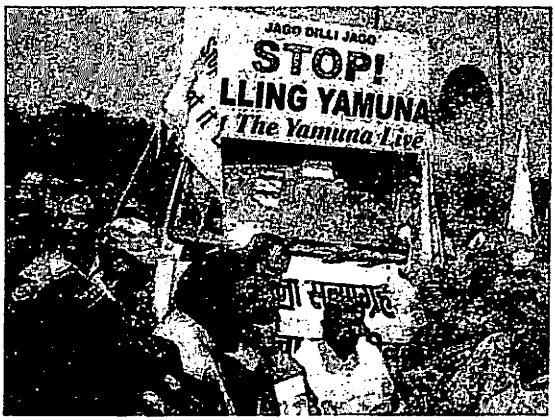

सत्याग्रह स्थल पर श्री मुरारी शर्मा, छोटेलाल मीणा, प्रीतम सिंह, किशोरी, जगदीश व बहन अतरावती भी सत्याग्रह स्थल पर मौजूद रही। बलजीत सिंह, जगतस्वरूप, रामस्वरूप, भूपसिंह, प्रीतम सिंह, महावीर सिंह, भवानी शंकर, विनोद कुमार व अन्य सत्याग्रहियों के साथ श्री राजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में राजघाट पर पहुंचे। जहां से भाई नक्वी जी दिल्ली जागो यात्रा शुरू कर रहें थे। इस यात्रा का आरम्भ आदरणीय वी.पी.सिंह के द्वारा झण्डी दिखाकर किया इस यात्रा में अनेक लोग शामिल हुए। राजघाट सत्याग्रह में राजेन्द्र सिंह कुछ समय रहें। जन्तर–मन्तर, खेलगांव साईट और जसोला में गये।

26.10.2007 यमुना सत्याग्रह का 87 वां दिन

सत्याग्रह की शुरूआत श्री मुरारी शर्मा, श्री छोटे लाल मीणा ने सत्याग्रह स्थल की सफाई के साथ शुरू हुई। इसके बाद लगभग 9:00 बजे श्री राजेन्द्र सिंह विदेशी पत्रकारों के साथ सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। श्री राजेन्द्र सिंह ने विदेशी पत्रकारों को बताया कि किस प्रकार जंगल एवं किसानों को हटाकर यमुना नदी के क्षेत्र को कंकरीट के जंगलो में बदला जा रहा है। शाम को लगभग 5:00 बजे दिल्ली जागो यात्रा भी नक्वी की अध्यक्षता में सत्याग्रह स्थल पर पहुंची सभी सत्याग्रहियों ने दिल्ली जागो की रैली में शामिल सभी लोगों का मालाओं से स्वागत किया तथा सत्याग्रह स्थल से अक्षरधाम मन्दिर के सामने से एक रैली निकाली जिसमें सभी सत्याग्रहियों नारे लगाते हुए वापिस सत्याग्रह स्थल पर पहुचें, जहां पर यात्रा में शामिल सभी लोगों को प्रशाद के रूप में केले बांटे। लगभग 6:30 बजे श्री राजेन्द्र सिंह भी सत्याग्रह स्थल पर पहुचे तथा सभी सत्याग्रहियों ने अपने–अपने विचार यमुना सत्याग्रह एवं दिल्ली जागो यात्रा के नारे रखे। श्री राजेन्द्र सिंह ने अन्त में कहा कि अब यमुना सत्याग्रह परिपक्व हो गया है तथा श्री नक्वी जी ने बहुत अच्छा कार्य शुरू किया है तथा अब हमें उम्मीद है कि

जल्दी ही हमें सफलता मिलेगी।

27.10.2007 यमुना सत्याग्रह का 88 वां दिन

प्रातः छोटेलाल मीणा एवं मुरारी शर्मा ने सत्याग्रह स्थल की सफाई की तथा दिन की कार्यवाही शुरू हुई। धोण्डली गांव से डा. नरेन्द्र शास्त्री भी सत्याग्रह स्थल पर पहुचें तथा यमुना सत्याग्रह का पूरा समर्थन देने की बात कहीं इसके बाद शिवकुमार, मुरली, किशोरी, शंकर, तेजपाल, महावीर सिंह, रामपाल, राजूसिंह, दिनेश, रोहताश भाटी, गंगा सहाय, दलबीर सिंह, राजकुमार भारती आदि भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। सभी ने मिलकर यमुना सत्याग्रह के बारे में विचार विमर्श किया। जसोला, कुर्सियाघाट, खेलगांव साईट पर राजेन्द्र सिंह रहे। पदयात्रा में शामिल हुए।

28.10.2007 यमुना सत्याग्रह 89 वां दिन

छोटेलाल मीणा व मुरारी शर्मा ने सत्याग्रह स्थल की सफाई की। इसके बाद डा. महेन्द्र शास्त्री सत्याग्रह स्थल पर आए। इसके बाद भूपसिंह जी, श्री किशोरी, शिवकुमार, सुनील प्रभाकर आदि सत्याग्रही रामलीला मैदान गये। पदयात्रा में शामिल होने के लिये। दिल्ली में पूरी यात्रा करी।

29.10.2007 यमुना सत्याग्रह 90 वां दिन

प्रातः उठकर मुरारी शर्मा एवं छोटे लाल मीणा ने सारे सत्याग्रह स्थल की सफाई की तथा दिन के कार्यक्रम की शुरूआत की। इसके पश्चात श्री छोटे लाल मीणा वजीराबाद के सत्याग्रह के लिए रवाना हुए। मण्डावली गांव से श्री जगदीश, रोहताश भाटी, मुरली तथा शकरपुर गांव से किशोरी लाल, बाले एवं श्री महावीर सिंह भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे समसपुर गांव से भूप सिंह एवं बलजीत सिंह भी सत्याग्रह स्थल पर पहुचे। मास्टर जी ने सभी सत्याग्रहियों के साथ बैठकर आगे की भावी योजना बनाई। इसी के साथ

आज की कार्यवाही सम्पन्न हुई। रामलीला मैदान में जनादेश में राजेन्द्र सिंह जी ने जनादेश और यमुना सत्याग्रह के मिलकर काम करने की जानकारी दी।

30.10.2007 यमुना सत्याग्रह का 91 वां दिन

यमुना सत्याग्रह पर पूर्व कार्यक्रम के अनुसार जल बिरादरी की संसद के लिए पटपटगंज गांव के पंचायत घर में बैठने की व्यवस्था की गई तथा सभी राज्यों से आए हुए जल बिरादरी के प्रतिनिधियों को ठहराने की एवं भोजन की व्यवस्था समसपुर, पटपटगंज, मड़ावली एवं शकरपुर गांवो के सहयोग से किया गया यह कार्यक्रम पटपटगंज, मण्डावली एवं शकरपुर गावों के सहयोग से किया गया। यह कार्यक्रम पटपटगंज गांव के पंचायत घर में प्रातः 9 बजे शुरू हुआ जिसमें भिन्न राज्यों से आए हुए प्रतिनिधियों ने यमुना सत्याग्रह मल्टीपरपज कोपरेटिव सोसायटी के महामंत्री ने यमुना के किनारों एवं यमुना क्षेत्र की भूमि के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा इस यमुना सत्याग्रह में सोसायटी के किसानों की भागीदारी के बारे में चर्चा की। श्री राजेन्द्र सिंह ने यमुना सत्याग्रह के आगे की रणनीति बनाई। यह संसद शाम 6:00 बजे तक चलती रही। रात में नदियों की शुद्धता और सदानीरा बनाने की कार्ययोजना बनाई।

31.10.2007 यमुना सत्याग्रह का 92 वां दिन

आज यमुना सत्याग्रह पर नदी संसद का दूसरा दिन है। नदी संसद की शुरूआत जल बिरादरी के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में **नदियों का सम्मेलन सम्पन्न** भारत के मतदाताओं को नदियों और अपने जीवन का शुभ् एक साथ साझा दिखाने वाला सिद्ध होगा। भारत के लोकतंत्र में आज का तंत्र नदियों को बेचकर खाने में ही जुटा है। लोक की आवाज नहीं है। नदी सम्मेलन नदियों की लोक आवाज बनाने हेतु आयोजित हुआ

है। यह 30–31 को भारत की नदियों की लोक संरक्षण परम्परा को जीवित करने हेतु लोक आवाज का खुला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। नदी संरक्षण और नदी पुनर्जनन का काम करने वाले सभी नदी मित्रों ने यमुना सत्याग्रह को सफल बनाने का संकल्प लिया।

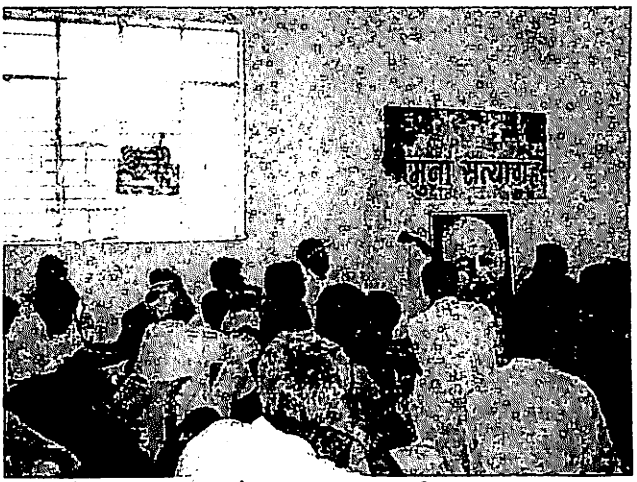

नदियों का जीवन लेना और देना दोनों ही काम मनुष्य के सत्कर्म और दुष्कर्म पर निर्भर होते है। हम नदियों के साथ अपने सत्कर्म से जीते हैं, तभी यह समाज के लिए और नदी के लिए शुभ् होता है। दुष्कर्म सबके लिए अशुभ् रहता है। नदियों से अपने जीवन में केवल लेने की चाह और देने के नाम पर केवल प्रदूषण करते रहें, तो हमारा आज और आने वाला कल दोनों पर ही खतरा मंडरायेगा। इसलिए नदियों से लेन–देन में शुभ्–अशुभ् का ख्याल रखना जरूरी है।

5 प्रतिशत नदियों को बेचकर 95 प्रतिशत को हरा–भरा बनाने की बात बहुत ही अशुभ् है। जब कुछ एक बार बिक जाता है, तो उसमें साझा हित और साझे भवि य का विचार ही नष्ट हो जाता है। बिकी हुई विरासत वापस नहीं मिलती है। ईस्ट ईडिंया कम्पनी तो केवल व्यापार करने आई थी। पूरे देश की मालिक बन गई थी। आज तो बेचकर खाने की बात हो रही हे। दुनियां में कहीं भी नदियों को बेचकर उनका पुनर्जनन नहीं हुआ। जब विकास की धारा में चीन का उदाहरण देते हैं तो हमें यह भी सोचना होगा कि वहां की सरकार 48 छोटी–बड़ी नदियों के पुनर्जनन के लिए परेशान होकर योजनाबद्ध तरीके से कार्यरत है। हमारें नेताओं की बुद्धि ठीक होनी है। यह काम मतदाता ही करता है। मतदाता की बुद्धि भी ऐसी होगी तो नदियों का विनाश निश्चित है। अतः मतदाता की मति को नदियों के साथ जोड़ने हेतु नदियों की यात्राओं की योजना बनाई गई। 17–18 दिसम्बर को राजस्थान में इस योजना को अन्तिम रूप दिया जायेगा।

हिमालयन और पैन्सुलर नदियों के दो अलग–अलग सम्मेलन साथ ही साथ चले। आर्थिक विकास दोनों तरह की नदियों पर एक जैसे संकट पैदा कर रहा है। इस पर बात हुई, अतः आर्थिक विकास के नाम पर नदियों का विनाश, क्यों हो रहा है ? इस पर चर्चा हुई। नदियों का पुनर्जीवन करने की योजना पर सभी छोटी–छोटी नदियों की अलग–अलग योजनाओं और बैठक में बात हुई। कार्ययोजना और अपने सामाजिक प्रयासों से नदियों को बचाने का प्रत्यक्ष काम शुरू करने के निर्णय लिये गए। नदियों के पुनर्जन्म हेतु समाज की तैयारी कराने की योजना बनवाने हेतु साथियों की एक समिति बनाई है। अन्त में यमुना सत्याग्रह द्वारा यमुना की जीवन रक्षा में जुड़ने की और समय देकर के यमुना का जीवन बचाने हेतु सभी ने अपनी–अपनी भूमिका बताई।

30–31 अक्टूबर को यमुना तट पर नदियों का सम्मेलन यमुना सत्याग्रह स्थल पर सम्पन्न हुआ है। इसमें सभी नदियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया है। नदियों के मित्र विविध रूपों में एक साथ आ रहें हैं। इस सम्मेलन में नदी संकट से बचाने का संकल्प पूरा करने की कार्ययोजना तैयार की है। सम्मेलन के बाद सत्याग्रह स्थल पर सभी गये वहां यमुना संसद शुरू हुई।

मनोज मिश्रा जी ने सरकार के दोगलेपन का उदाहरण देते हुए कहा कि एक सुप्रीम कोर्ट के वकील ने घूमते हुए चार पेड़ कटते देखे तो उसने तुरन्त ही मुख्यमंत्री जी को फोन करके कहा कि पेड़ क्यों कट रहें इन्हें तुरन्त रूकवाया जाये। वे पेड़ कटने रूक गये। खेलगांव का एक वकील डी.डी.ए. की तरफ से ही पैरवी कर रहा है। यहां पर भी तो पेड़ कट रहें

है, यमुना को मारा जा रहा है। फिर यहां पर कार्य क्यों नहीं रूक रहा है। क्योंकि सरकार को यहां पर पैसा सिर्फ पैसा दिख रहा है। उन्होंने कहा कि 2003 के कॉमनवैल्थ के लिए 1700 करोड़ रूपये थे अब 23000 हजार करोड़ रूपये हो गये ये सारा पैसा जनता की जेब से जा रहा है। राजेन्द्र सिंह जी ने कहा कि पहले हम यह नारा लगाते थे कि सरकार हमसें डरती है। पुलिस को आगे करती है। अब उन्होंने पुलिस को नहीं ब्लकि पी.डब्लू. डी. को आगे कर रही है। कह रही है कि यह जमीन पी.डब्लू.डी. की है। इसे खाली करो। यमुना में स्थाई विनाश का काम अक्षर धाम मंदिर के निर्माण से सन् 2000 में आरम्भ हुआ था। अब इसी काम को दुबई की एक कम्पनी द्वारा कॉमनवैल्थ खेलसंघ, भारत सरकार की मौन स्वीक ति से करा रही है। भारत सरकार के वैज्ञानिक, राजनेता, अधिकारी, व्यापारी, पुजारी सबही जानते है। यमुना का खादर खत्म होने से दिल्ली बेपानी होगी। ये सब जानबूझ कर अपने निजी स्वार्थ हेतु यमुना के फ्लड प्लेन को खत्म करा रहें है। जब तक सरकार इस खेलगांव को नहीं रुकवाती है। जब तक ये यमुना सत्याग्रह सतत् चलता रहेगा।

सेवक शरण जी वृन्दावन मथुराः— जी ने कहा कि सरकार वन्य जीव सेन्चुरी की बात करती है, लेकिन मानव सेन्चुरी की बात नहीं करती है। सरकार नदी के पेट से मानव को उजाड़कर कम्पनियों का कब्जा करा रही है। कृष्ण ने कंस को बाहुबल, बुद्धिबल, से ही कंश को पराजित किया, कर्म अहंकार कमी को शून्य बना देती है। शहर का व्यक्ति अंहकार मुक्त नहीं हो सकता है। गांव का व्यक्ति अंहकार मुक्त हो सकता है। क्योंकि वह प्राकृतिक संसाधन से जुड़ा होता है। इसलिए हमें शहर से ज्यादा गांव के व्यक्तियों को जोड़ना है।

सजंय कॉल ने कहा कि हमें लोगो को जोड़ने हेतु हमें कुछ न कुछ जोड़ना पड़ेगा दिल्ली में 70 विधायक

व 7 सांसदों से भी व्यक्तिगत तौर पर मिलना चाहिए। इसके लिए 5 व्यक्तियों की टीम गठित हुई।

आज सत्याग्रह के 92 वें दिन पर सत्याग्रह स्थल पर सभी लोगों ने संकल्प लिया कि हम आगे से नदियों को नहीं बेचने देंगे तथा जल बिरादरी के लोग अपने–अपने जगहों पर नदियों को बचाने का सत्याग्रह शुरू करेंगे। सभा के अन्त में पी.वी.राजगोपाल जी व उनके साथी सत्याग्रह स्थल पर आये। राजगोपाल सिंह जी ने कहा कि पुलिस कमीश्नर ने कहा कि देश में रोटी के लिए 25 दिन से सडको पर पैदल चलकर दिल्ली आ रहें है। और दिल्ली सरकार गरीबों के खेत उजाड़ कर खेलगांव बना रहा है, शर्म की बात है। आज की सभा की समाप्ति श्री पी.वी. राजगोपाल सिंह जी के धन्यवाद के साथ हुई।

1.11.2007 यमुना सत्याग्रह का 93 वां दिन

प्रातः मुरारी शर्मा एवं सुनील प्रभाकर ने सत्याग्रह स्थल की सफाई करने के पश्चात दिन के कार्यक्रम की शुरूआत की। प्रातः लगभग 10 बजे शकरपुर से किशोरी लाल भी सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। आस–पास के गांव से लोग भी सत्याग्रह स्थल पर पहुचें। सभी सत्याग्रह स्थल पर आगे के कार्यक्रम की रणनीति बनाई। शाम को सत्याग्रह स्थल पर प्रार्थना की तथा आज की कार्यवही समाप्त हुई। श्री राजेन्द्र सिंह जी ने सम्मेलन सम्पन्न के निर्णय व समाचार को बताया। कि यमुना बचाओ, दिल्ली बचेगी, देश समृद्ध बनेगा। यमुना की शुद्धता और सुन्दरता हेतु गरीब तो समर्पित हुए। बड़े–धनी, माफिया हाथों से अक्षरधाम उसी यमुना में बन गया। खेलगांव भी इन्हीं घातक हाथों से बन रहा है। हवाई पटटी, मॉल–होटल बनाने वाले भी वैसे ही है। दिल्ली सरकार पूरी यमुना के किनारें, बड़ी–बड़ी इमारतों हेतु बड़ों को पूरी तरह देने को तैयार है। सरकारी कब्जों और माफिया के हाथों से यमुना को बचाने हेतु 1 अगस्त 2007 से यमुना सत्याग्रह जारी है।

यमुना दिल्ली की जीवन दायनी है। मामूली स्वार्थ पूर्ति हेतु **यमुना मां** की हत्या करना हमारें लिए शर्मनाक है। अक्षरधाम से यमुना में अवैध काम शुरू हुआ था। अब मैट्रो डिपो, हैलीपेड होटल यमुना के पेट में बनाकर हम आज तो अपनी मां की हत्या कर रहें है। आने वाले कल में हमारा जीवन भी कठिन होगा। यमुना में जमीन की कीमत देखकर आज दिल्लीवाले इसे बेच रहें है। भूजल की अनदेखी कर रहें है। अब जमीन से

ज्यादा कीमती पानी है। यहां के भूजल पुनर्भरण से दिल्ली हेतु पानी संरक्षित करके रखना है। अतः हम देश की धरोहर यमुना को बचायें। यमुना को नष्ट करके केवल अक्षर धाम को लाभ पहुंचाना गलत है। इसे रोकें। आप यमुना की रक्षा करने हेतु दिल्ली के समाज को जोड़े। यमुना को आज **आपकी 'मां'** जैसा व्यवहार और सम्मान चाहिए।

उच्चन्यायलय द्वारा गठित न्यायमूर्ति ऊषा मेहरा समिति ने उच्चन्यायलय को ही अपनी रपट में लिखा है। *"In view of the aforesaid, it is submitted that the hon'ble court may be graciously pleased to reiterate its earlier order dated 3.5.2005 passed in W.P.(c) No 669/2004 directing all authorities to maintain the riverbed as a wet land or water body, and order demolition of a construction of permanent nature brought in place in the riverbed and to restore the character of the riverbed as a water body. So far as essential public service of metro rail lines is concerned, the committee may not have any objection for construction of elevated metro tracks over the Yamuna River or its bed provided the Railway Stn., Railway Yard, residential facilities etc are all shifted beyond the riverbed. It is also submitted that in view of "The Polluter Pays" principle enunciated by the Hon'ble Supreme Court, the DDA and the DMRC be penalized for causing damage to the eco-system and water recharge capacity of the river. Necessary exemplary action against the Vice Chairman, DDA for various deliberate and willful violations of the order dated 3.5.2005 be taken"*

"दिल्ली विकास प्राधिकरण (डी.डी.ए.) व दिल्ली मैट्रो रेलवे निगम (डी.एम.आर. सी.) को दण्डित करना चाहिए क्योंकि इन्होंने यमुना की पारिस्थितिकी तंत्र को बिगाड़ा है। साथ ही साथ यमुना खादर में निर्माण करके यहां के भूजल पुनर्भरण की प्रक्रिया में व्यवधान डाला है। अतः उच्चतम् न्यायालय के 3.5.2005 के निर्णययानुसार डी.डी.ए. के उपाध्यक्ष को दण्डित किया जाये। साथ ही साथ माननीय उच्चन्यायालय ने कहा है, "नदी का संरक्षण किया जाये। नदी के बेड को सुरक्षित करें तथा नमी और

पुनर्भरण क्षेत्र (खादर) में हुए निर्माण को तुरन्त प्रभाव से हटायें। रिवर बेड और जल संरचना को बचायें।"

अब न्यायपालिका नदी विनाश को रोकने में हमारें साथ है। लेकिन राज्य सरकार पर हमें शंका है। क्योंकि "राज चलाने वालों को विकास के नाम पर विनाश करने की बीमारी लग जाती है" इन्हें विकास के आगे दुसरा कुछ भी नहीं दिखता है। इनकी आखें खौलने हेतु कुछ संवेदनशील राजनेता, अधिकारियों, व्यापारियों, पुजारियों, शोधार्थियों एवम् वैज्ञानिकों के साथ यमुना सत्य शोधयात्रा करना जरूरी है।

आप जानते है! यमुनोत्री द्वार 11 नवम्बर को बन्द हो रहा है। यमुना जी 6 माह के लिए खरसाली गांव में आ जाती है। इस बार दिल्ली के लोग वहां से यमुना जी को उसी पवित्र स्वरूप में दिल्ली लेकर आयें जैसी वो यमुनोत्री में है, ऐसी ही दिल्ली में होवें। ऐसा करने से हमारी संवेदना जागेगी। यमुना के साथ फिर हम सब **मां** जैसा व्यवहार शुरू करेंगे। इसको अब बेचने नही देंगे। नदी बेचना **मां** बेचने जैसा ही है। यमुना **मां** को शुद्ध–सदानीरा बनाने वाली यात्रा में आपका साथ चाहिए।

2.11.2007 यमुना सत्याग्रह का 94 वां दिन

प्रातः 8 बजे श्री राजेन्द्र सिंह दिप्ती मलहोत्रा, नरेन्द्र मलहोत्रा के साथ सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। दीप्ती को जामिया मिलिया विश्वविद्यालय ने यमुना सत्याग्रह के बैनर, पोस्टर पर्चे देकर भेजा। ये अपने विश्वविद्यायल के छात्रों के साथ यमुना सत्याग्रह का संवाद चलायेगी। वहां भी सत्याग्रह का कार्य शुरू होगा। ईफान मलिक भी अपने बच्चों के साथ सत्याग्रह स्थल पर शामिल हुए। श्री राजेन्द्र सिंह ने सभी बच्चों को यमुना सत्याग्रह की जानकारी दी। इसके बाद सुनिल प्रभाकर व किशोरी लाल ने यमुना गीत गाकर बच्चों का उत्साह वर्धन किया। इस गीत के माध्यम से बच्चों को भी संदेश दिया की यमुना हम सभी को जीवन देने वाली नदी है।

3.11.2007 यमुना सत्याग्रह का 95 वां दिन

आज प्रातः 7:30 बजे श्री राजेन्द्र सिंह, विजय प्रताप सिंह व प्रो. साव्य सांची सत्याग्रहस्थल पर पहुंचे। प्रो. साव्य सांची जी ने यमुना सत्याग्रह स्थल पर जामिया मिलिय विश्वविद्यालय के छात्रों का स्वागत किया। मा. बलजीत सिंह जी ने छात्रों को यमुना सत्याग्रह की जानकारी दी। दिल्ली को यमुना समझाने की बातें करी तथा सवेंदना जगाने का कार्यक्रम बनाया यात्रा का पर्चा तैयार किया।

यमुना बचाने जुटे–मिले साथ चले

यमुना में स्थाई विनाश का काम अक्षर धाम मंदिर के निर्माण से सन् 2000 में आरम्भ हुआ था। अब इसी काम को दुबई की एक कम्पनी द्वारा कॉमनवैल्थ खेलसंघ, भारत सरकार की मौन स्वीकृति से करा रही है। भारत सरकार के वैज्ञानिक, राजनेता अधिकारी, व्यापारी, पुजारी सबही जानते है। यमुना का खादर खत्म होने से दिल्ली बेपानी होगी। ये सब जानबूझ कर अपने निजी स्वार्थ हेतु यमुना के फ्लड प्लेन को खत्म करा रहें है।

समाज यमुना के बारे में मौन है। मरती, बेपानी बनती, यमुना को देख रहें। हम इस काम में शामिल है ? फिर मौन क्यों ? यमुना को बचाने हेतु खड़े क्यों नहीं हुए ? जहां कही यमुना की आवाज है। वहां हम दिल्लीवासी अपनी आवाज इसमें नही जोड रहें है।

उपराज्यपाल दिल्ली ने आश्वासन में कहा "यमुना में नये निर्माण कार्य नहीं होगें" मुख्यमंत्री भी यमुना को प्यार करती है, फिर भी यमुना से गरीबों को उजाड़कर नये सरकारी कब्जे क्यों हो रहे ? बहुराष्ट्रीय कम्पनियां यमुना के खादर के पानी की कीमत जानती है। हम और हमारी सरकार पानी की कीमत नहीं जानते है। इसलिए यमुना के पानी के भण्ड़ार खादर को विदेशी कम्पनियों को निर्माण करके बेचने के ठेके दे रहें है। यमुना सत्याग्रह के 100 दिन पूरे होने पर स्थिति वैसी ही बनी हुई है।

यमुना नदी को दिल्ली में नष्ट होने का "सत्य" हम जानते है। इस हेतु हम सत्याग्रह कर रहें है। अब पूरी नदी का सत्य हमें जानना है। इसके लिए सरकारी और गैर–सरकारी वैज्ञानिकों के एक दल के साथ इस सत्य को जानने हेतु "यमुना शोध" यात्रा शुरू करनी है। पदयात्रा 11 नवम्बर को सप्तऋषि यमनोत्री से शुरू होगी। इसमें शोधार्थी एवंम् प्रकृति में प्राण डालने वाले पर्यावरण प्रेमी भाग लेंगे। यह यमुनोत्री से दिल्ली होते हुए इलाहबाद तक जायेगी।

यात्रा का उद्देश्यः–

1. विकास के नाम पर नदियों के विनाश को रोकना।
2. देश के राजनेताओं, अधिकारियों, व्यपारियों तथा सरकारी वैज्ञानिकों का मन–मानस यमुनामय और प्रकृतिमय बनाना।

3. यमुना को शुद्ध सदानीरा बनाने हेतु राज–समाज के मन–मानस को अनुकूल बनाना।
4. नदी की भूसांस्कृति सरंचनाओं, जैविक विविधता का सम्मान करते हुए, नदी बैसिन संगठनों को सरकारी मान्यता दिलाने की जरूरत का अहसास कराना है।
5. शिक्षार्थियों–शोधर्थियों को प्रकृति से सीखने की दृष्टि बनाना जिससे हमारे साझे भविष्य का विनास रोककर समृद्धि का रास्ता बनता जाये।

नदी सरंक्षण के नाम पर सरकार सब नदियों के चेहरों को बेचकर नदियों का चेहरा सुधारने की बात कर रही है। इसे रोकना है। यह कार्य सरकार सबसे पहले यमुना में ही शुरू करने वाली है। इसलिए नदियों के विनाश कार्य को रोकने की सबसे पहले यमुना में ही जरूरत है। इसलिए तत्काल यमुना बचाने हेतु सभी **"हम मिले–जुटे और यमुना बचाने चलें।"**

कार्यक्रमः– 17 से 21 शोधार्थियों की टोली में जल, नदी, पर्यावरण, भूविज्ञान, समाज कार्य, बर्फ–पहाड़ की समझ रखने वालों के साथ–साथ प्रकृति प्रेमी और विकास प्रेमी भी रहेंगे। विकास का विनाश रोकने वाले तथा संरक्षण के साथ विकास कार्यो में प्रकृति को पुनर्जीवित बनाकर, उजड़े समाज की लाचारी, बेकारी, बीमारी दूर करके पुनर्वास और समृद्धी कायम करने वाले समाज व र्मी भी दल में रहेंगे। यमुना से मां जैसा व्यवहार करने वाले भाई–बहिन जल को मानव अधिकार और जल को जीवन का आधार मानने वाले शिक्षक विद्यार्थी भी शामिल रहेंगे। हम यमुना क्षेत्र के सभी विश्वविद्यालय के कुलपतियों को भी इस यात्रा में जोड़ने की प्रार्थना कर रहें है। सरकार के साथ यमुना संरक्षण की स्वराज्य संवाद चलाने की गुहार है। इस से पहाड़ की हरियाली नदी की शुद्धता और सदानीरा बनाने की चेतना जगानी है। इस साझे कार्य में हम सब जुटे।

4.11.2007 यमुना सत्याग्रह का 96 वां दिन

प्रातः मुरारी शर्मा व सुनील प्रभाकर ने यमुना सत्याग्रह की साफ सफाई की उसके बाद सत्याग्रह स्थल पर गांव के आस–पास के लोग आने शुरू हो गये। आज गांधी शान्ति प्रतिष्ठान में श्री सेवक शरण, राजेन्द्र सिंह, मा. बलजीत सिंह. ललीत शर्मा, प्रदीप बालियान, नन्दनी जैन व सजींव चर्तुवेदी, जी आये यहां पर एक छोटी सभा की गई। जिसमें यमुना सत्याग्रह को आगे

चलाने की भावी रणनीति बनाई। सभी ने छठ पूजा के दिन बिहारियों को जोड़ने की बात की। गायत्री परिवार ने श्री राजेन्द्र सिंह जी से कहा कि हम 99 वें दिन सत्याग्रह स्थल पर हवन व यमुना जी की आरती करने को कहा। श्री राजेन्द्र सिंह जी ने सेवक शरण जी से कहा कि आप यमुना यात्रा के आरम्भ में रहें और यमुना यात्रा शुभारम्भ अपने साथियों के साथ करें। इसीदिन दिपावली का पर्चा राजेन्द्र सिंह ने तैयार किया।

यमुना बचेगी, दिल्ली की दिपावली मनेगी

त्योंहार शुद्धता व समृद्धि का संदेश देते है। यमुना में गंन्दगी और बदबू का ही आलम होता बदबू बढ़ाने का काम हम ही कर रहें है ? बदबू पैदा करना ही एक मात्र काम रह गया है ? क्या हम इस बदबू दार यमुना को सहन करते ही रहेंगे ? कभी तो नहीं कहे। इस बार दिपावली के दिन यमुना की पुकार को अन्तर–आत्मा से उसके किनारे जाकर सुने। दिल्लीवासी अपने गन्दे नालों को बदबू मुक्त बनायें। स्वंय नहीं कर सकते तो सरकार से पुछे नालो की सफाई के लिए हुआ खर्च कहां गया ? नाले साफ क्यों नहीं हुए ? अब पहले हम स्वयं कुछ अच्छा करे फिर सरकार से पुछे।

हम अच्छे बने। यमुना को अच्छी बनाये। यह काम आसान है। हम मिलकर यमुना के साथ मां जैसा व्यवहार शुरू करें। यमुना संस्कृति जीवित करें। यमुना को पहले जैसी बनायें। यमुना बेचकर शुद्ध नहीं बन सकती। इस समय भारत सरकार और दिल्ली सरकार के उच्चतम् पदों पर बैठे लोग यमुना को पहले जैसी शुद्ध बनाने की दुहाई दे रहें है। लेकिन गलत काम यमुना पर ही पहला सरकारी हमला है। इसे रोकने या सृजनात्मक रूप में यमुना को शुद्ध–सदानीरा बनाने की पहल होनी चाहिए। राज–समाज की मिलकर ताकत लगेगी तो यमुना शुद्ध–सदानीरा बनेगी। अभी यमुना शुद्धि के नाम पर में राज और ठेकेदार ही लगे है। ठेकेदार केवल यमुना के नाम पर राज को लूट रहा है। राज यमुना का मैला हटाने के नाम पर मैली राजनीति कर रहा है।

राजनीति मे शुद्धता ही नदियों को शुद्ध बना सकती है। राजीव गांधी ने इसकी शुरूआत की थी। आज फिर यही बड़ा काम है। हम छोटे–छोटे

काम से ही बड़ा बदलाव कर सकते है। छोटे काम विनाश नहीं करते, समृद्ध बनाते है। बड़े काम सदैव विनाश करके विकृत बनाते है। अतः हम यमुना शुद्धता हेतु स्वयं अपने और यमुना के साथ सद व्यवहार से काम शुरू करें। हम यमुना जल में कुछ भी मैला नहीं ड़ाले, मैला ड़ालने वाले को रोंके। यमुना का मैला हम स्वयं सब रोकेंगे। फिर दड़े भी रूकेंगे। छोटे–छोटे मिलकर बड़ो को रोक सकते है। हम अपनी छोटी–छोटी जो भी कोशिश सम्भव हो उससे काम शुरू करें। यमुना शुद्ध होने लगेगी।

दिपावली 2007 यमुना के साथ मनाये। अपने घर की शुद्धि, यमुना शुद्धि के साथ जोड़े। जब हमारी नीजि जिन्दगी–साझी सम्पदा को सुधारने में जुड़ती है तो उसका बड़ा असर हमारें जीवन पर सदैव सुखदायी ही होता है। साझी जिन्दगी साझा सुख और आनन्द बढ़ता है। यमुना साझी है। इस साझे दुख को साझे सुख में बदलना चुनौती पूर्ण कार्य है। इस चुनौती को दिल्लीवासी स्वीकारें। दिल्लीवासी इसे उत्सव के तरह मनायें, दिपावली की शुद्धता से यमुना को जोड़े।

एक वक्त था, जब यमुना हमारी शुद्धता करती थी। आज यमुना नदी की शक्ति इतनी नहीं रही है। यह हमें अब शुद्ध नहीं बना सकती है। अब हमें ही इसे शुद्ध बनाने का अभियान चलाना होगा। यमुना सफाई का काम शुरू किया तो दिल्ली सरकार को भी साथ ले सकते है। या उसे कह सकते है, आपने यमुना को गन्दा किया है। इसे साफ आप नहीं कर सकते तो राज भी नहीं कर सकते है। ऐसा कहने हेतु समाज को ही स्वयं कुछ अच्छी पहल करनी पड़ती है। आओ हम इस दिपावली पर कुछ अच्छी पहल करें। यमुना शुद्धि की बात करें। इस दिपावली पर कुछ तो काम की शुरूआत करें। स्वयं सोचे और यमुना को शुद्ध–सदानीरा बनायें। यमुना धरती की हरियाली बढ़ाये, इसमें गन्दे नाले की तरह नहीं बहाये। यमुना को शुद्ध सदानीरा बनाने के संकल्प के साथ दिपावली मनायें।

5.11.2007 यमुना सत्याग्रह का 97 वां दिन

यमुना सत्याग्रह स्थल की साफ सफाई मुरारी शर्मा जी ने की, और इसी के साथ आज की दिनचर्या शुरू हुई। सत्याग्रह स्थल पर श्री राजेन्द्र सिंह व अरवरी संसद के अर्जुन गुर्जर, कन्हैया लाल गुर्जर, सेडूबाबा और महिलाऐं भी आयी। अर्जुन गुर्जर ने अपनी अरवरी नदी की जानकारी दी और कहा कि दिल्ली वाले अपनी नदी को खुद ही मार रहें है। हमनें तो अपनी मरी

नदी को फिर जिन्दा किया है। यें तो जिन्दा यमुना नदी को मार रहें है। अगर ये अपनी यमुना नदी को मारेंगे तो दिल्ली को पीने का पानी नहीं मिलेगा। श्री राजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में डब्लू.डब्लू.एफ लोधी रोड़ के लिए यमुना स्टेट होल्डर की मिटींग में शामिल होने के लिए रवाना हुए। इसके पश्चात सभी सत्याग्रही जनपद पर साझा मंच के कार्यक्रम में शामिल होने पहुचें।

6.11.2007 यमुना सत्याग्रह का 98 वां दिन

श्री राजेन्द्र सिंह सत्याग्रही साथियों के साथ पहले कुर्सिया घाट यमुना सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे तथा इसके बाद कॉमनवैल्थ गेम साईट पर चल रहें सत्याग्रह स्थल पर गये तथा संभी सत्याग्रहियों को 100 वां दिन मानने की बात पर विचार विमर्श किया तथा सभी अपने–अपने विचार रखें।

7.11.2007 यमुना सत्याग्रह का 99 वां दिन

श्री राजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में जागो दिल्ली जागो यात्रा के समापन समारोह में शामिल होने, साझा मंच जनपद पर पहुचें जहां पर नकवी जी अपने सभी साथियों के साथ पहुंचे। उसके बाद सभी लोग सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। जहां पर नकवी जी ने बताया कि उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान 15 दिन में 12 लाख लोगो से सम्पर्क किया तथा 2.50 लाख लोगों के हस्ताक्षर करायें। उन्होंने अपनी यात्रा के बारे में भी सत्याग्रहियों को बताया किस प्रकार से दिल्ली जागो अभियान के माध्यम से दिल्ली के 10 प्रतिशत लोगों से सम्पर्क हुआ तथा इन लोगों को यमुना सत्याग्रह से जोड़ने पर विचार विमर्श हुआ इस मौके पर छत्तीसगढ़ जल बिरादरी के अध्यक्ष श्री गौतम बन्दोपाध्याय उपस्थित थे। उनके साथ और भी कुछ वरिष्ठ साथी थे। श्री गौतम जी ने अपने राज्य के लोगों को भी यमुना सत्याग्रह से जोड़ने की बता कही। इसके पश्चात सभी ने फैसला किया कि सत्याग्रह का 100 वां दिन यमुना नदी के किनारे दीपक जलाकर मनाया जाए।

8.11.2007 यमुना सत्याग्रह का 100 वां दिन

प्रातः 8 बजे श्री राजेन्द्र सिंह सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे। पहले बनाए गए कार्यक्रम के अनुसार सभी सत्याग्रही एक पदयात्रा के रूप में यमुना नदी किनारें पहुचें तथा वहां पर दीप जलाकर सत्याग्रह का 100 वां दिन मनाया गया, श्री राजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में सभी सत्याग्रहियों ने यमुना नदी में आज के बाद गन्दगी ना डालने का संकल्प लिया तथा इस नदी को सुरक्षित

रखने के लिए भी श्री राजेन्द्र सिंह ने शपथ दिलाई। वहां पर इसके बाद नदी के किनारें पर हवन भी किया गया इसके पश्चात कुछ सत्याग्रहियों ने अपने विचार रखें।

श्री राजेन्द्र सिंह ने आशा जताई कि अब हम शक्ति एवं मजबुताई के साथ खड़े है तथा वह दिन अब दूर नहीं जब सत्ता में बैठे हुए लोगों को हमारी बात माननी पडेगी।

यमुना सत्याग्रह के 100 दिन पूरे होने तक उच्च न्यायालय–भारत सरकार और दिल्ली सरकार की अब नदियों को बचाने में रूचि बढ़ेगी। ऐसा लगता है। 30 जनवरी 2007 को राजघाट नई दिल्ली में जल बिरादरी ने नदियों की शुद्धता और सदानीरा बनाने हेतु देशभर से आये सभी मित्रों ने संकल्प लिया था। वापस जाकर सभी ने अपनी–अपनी नदियों की शुद्धि की आवाज उठाई। न्यायलयों में गये। अच्छी कानूनी जीत हासिल करी है। यहां एक निर्णय दे रहा है। यह लड़ाई उत्तर प्रदेश जल बिरादरी के साथी प्रो.एस.प्रकाश, डा. पी.के. शर्मा और ग्रामीणों के संगठन और दबाव से कागजी जीत मिली है। जल बिरादरी के साथी सक्रिय होकर सभी नदियों में नदी की आवाज बन रहें है। काली नदी सहारनपुर की एक लड़ाई का निर्णय यहां है।

यमुना सत्याग्रह

शाम होते ही सुनसान झोंपड़ी और आसपास में मशीनों के धमाके बेचैनी बढ़ाते है। एक अगस्त को शीसम के पेड़ के नीचे, मो मच्छर खाते थे, राते सत्याग्रह पर आत्मविश्वास बढ़ाती थी। यमुना नदी के जमीन का उपयोग बदलने का हक डी. डी. ए. को नही है। इसलिए यमुना में केवल पेड़ ही लग सकते हैं। यह हमारा विश्वास बढ़ता जा रहा है। हम अहिंसक

सत्याग्रह पर ही रहे। देखते है सरकार महात्मा गांधी को मजबूरी के रास्ते के तौर पर देखती है या बापू का बताया रास्ता अपनाती हैं। अभी तो सरकार हिंसक बातों को नारों को सुनती है। बस! वहां पुलिस को आगे करती है।

जहां अहिंसक रास्ते से सत्याग्रह चल रहा है, वहां सरकार नहीं पहुँचती, नहीं सुनती। ऐसा तो नही, सरकार वहां भी जाती है। यमुना सत्याग्रह के 104 वें दिन श्री अर्जुन सिंह जी की अध्यक्षता में कोर केबनेट की बैठक में यमुना सत्याग्रह की प्रस्तुति सुनी गई। हमने अपनी सब बाते अच्छे से रखी। केबनेट ने भी भली प्रकार सुना। इस बैठक में गृहमंत्री श्री शिवराज पाटील, शहरी विकास मंत्री श्री जयपाल रेड्डी तथा संस्कृति मंत्री, खेल मंत्री, मुख्यमंत्री, उपराज्यपाल, पंचायत राज्य मंत्री आदि बहुत से मंत्री मौजुद रहे। सभी ने यमुना सत्याग्रह की सब बातों को ठीक से सुना। जल्दी ही इस पर निर्णय सुनाने की बाते भी करी। न्याय पालिका भी सुन रही है। अब नदी की आवाज तो सरकार और न्यायपालिका को सुनाना चाहिए। अर्थ नेताओं, प्रधानमंत्री योजना आयोग के उपाध्यक्ष , वित्तमंत्री सभी तो नदी के लिए बजट तय कर चुके है। सुधार तो तभी होगा, जब अतिक्रमण रुकेगा। सरकार ही खेलगांव यमुना में बनाकर अतिक्रमण करायेगी तो नदी सुधार की सरकारी योजना ही फैल होगी। ये सब बात आज 11.11.07 की रात खेलगांव साईट पर रातभर दिमाग में आती रही। नींद आज अच्छी नहीं हुई। मशीनों की गडगडाहट से धरती का हिलना नींद खोल देता रहा। हर बार यमुना सत्याग्रह पर पेड़ लगाये। इन्होंने उन्हें काटा। अब यहां और गहरा करके यहां की रेत हटाकर इसे गहरा करके यमुना के पेट में सीमेन्ट कंकरीट का नया जंगल क्यों बना रहे हैं?

अब सत्याग्रह में दिल्ली शहर के लोग जुड़ रहें हैं।

सत्याग्रही के बतौर हम अपनी बात पर ही है, लेकिन यमुना के किसान जगतपुर में अपनी जमीन एक विदेशी कम्पनी को बेच रहे हैं। सरकार विदेशियों को अपने घर बनवा कर बेचने का काम दे रही है। किसान यमुना को बेच रहे है। नही! सरकार को रोकने हेतु किसान आगे आते है। किसानों को यमुना की जमीन बेचने हेतु सरकार रोक नही सकती। यमुना का क्या होगा? बेचारी यमुना ऐसी ही बिकती रहेगी? नही! यमुना की बिक्री रोकने हेतु यमुनावासियों यमुना को अपनी मां मानने वालों को खड़ा होकर यमुना किनारे पदयात्रायें यमुना की बिक्री रोके।

उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड,
पिकप भवन, तृतीय तल, बी–ब्लाक, विभूति खण्ड
गोमती नगर, लखनऊ–226010

सिविल मिसलेनियस रिट याचिका वाद संख्या 8453 वर्ष 2007 संघर्ष समिति व अन्य एवं उ.प्र. सरकार व उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के संबंध में माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद द्वारा पारित आदेश दिनांक 15.2.2007 में दिये गये आदेश के अनुपालन में व्यक्तिगत सुनवाई के उपरान्त श्री दीपक सैनी के प्रत्यावेदन पर पारित निर्णय।

श्री दीपक सैनी, अध्यक्ष ग्रामीण सघर्ष समिति द्वारा जिलाधिकारी सहारनपुर तथा क्षेत्रीय अधिकारी उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, सहारनपुर को प्रेषित प्रत्यावेदन दिनांक 06.702006 द्वारा ननौता स्थित चीनी एवं आसवनी इकाई आदि द्वारा कृष्णा नदी में व्याप्त रासायनिक प्रदूषण का बिन्दू उठाया गया। इस संबंध में माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद में याची द्वारा जनहित याचिका सं. 8453/07 ग्रामीण संघर्ष समिति बनाम स्टेट आफ यू.पी. व अन्य दायर की गई। माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद द्वारा रिट याचिका सं.8453/07 में दिनांक 15.2.2007 को याचिका निस्तारित करते हुए पारित निर्णय के सदर्भित मुख्य अंश निम्नवत है :–

".....Considering the submission and looking to the facts of the case and also in view of the stand taken by respondent nos. 1 to 4 to look into the grievance of the petitioners and the people of the village Nanouta, Bhaneda, Chandenamal, Daberi and Dameri district Sharanpur and after make necessary inquiry

and also having given opportunity of hearing to respondent nos 5 to 7 including the petitions take appropriate decision on the aforesaid representation of the petitioner expeditiously preferably. Within a period of three months from the date of production of a certified copy of this order before them and thereafter, to take such remedial steps which are necessary to check pollution so that the people of the aforesaid villages can get pure and safe potable water....."

माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद के उपरोक्त आदेश के अनुपालन में प्रत्यावेदन पर सुनवाई हेतु दिनांक 30 अगस्त 2007 की तिथि निर्धारित की गई है एवं बोर्ड के पत्र दिनांक 17.8.2007 द्वारा याचीकर्ता, याचिका में वर्णित औद्योगिक इकाईयों एवं क्षेत्रीय अधिकारी, उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड सहारनपुर को सुनवाई की तिथि की सूचना प्रेषित करते हुए अपने पक्ष के समर्थन में अभिलेखीय सदस्यों के साथ उपस्थित होने के निर्देश दिय गये। व्यक्तिगत सुनवाई में उपस्थित याचीकर्ता श्री दीपक सैनी, अध्यक्ष, ग्रामीण संघर्ष समिति, तथा उद्योग मै. किसान सहकारी चीनी मिल्स लि. (शुगर यूनिट), मै. यू.पी. को–ओपरेटिव शुगर फैक्ट्री फेडरेशन लि, आसवनी इकाई, एवं मै. एस.एम.सी. फूड्स लि., के प्रतिनिधि एवं क्षेत्रीय अधिकारी, उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, सहारनपुर उपस्थित हुए।

याचीकर्ता के प्रत्यावेदन में निम्न मुख्य बिन्दु उठाये गये है:–

1. मै. किसान सहकारी चीनी मिल लि. ननौता, सहारनपुर, मै. यू.पी. को–ओपरेटिव शुगर फैक्ट्री लि. आसवनी इकाई, ननौता, सहारनपुर, मै. एस.एम.सी. फूड्स लि., ननौता, सहारनपुर, मै. राज सल्फर फैक्ट्री, ननौता, मै. दुर्गा फैक्ट्री ननौता, सहारनपुर से जहरीला व विनाशक पानी कैमिकल सहित कृष्णा नदी में जा रहा है।
2. रसायनिक प्रदूषण उक्त फैक्ट्री से निकलकर कृष्णा नदी में फैला रहता है, जिससे वातावरण प्रदूषित होता है व नजदीक गांवो के हैण्ड पम्प के पानी में भी साफ दिखाई दे रहा है।
3. इसके प्रभाव से जमीन की उर्वरकशक्ति खराब हो रही है और रासायनिक पानी से त्वचा व पेट डायरिया आदि भंयकर बीमारी फैल रही है।

प्रत्यावेदन में मै. किसान सहकारी चीनी मिल्स लि., ननौता व डिस्टीलरी आदि से निकलने वाला रासायनिक पानी को कृष्णा नदी में डालने से रोका जाये और रासायनिक पानी को संशोधित कराने का भी आदेश पारित कराया जाये। व्यक्तिगत सुनवाई में श्री दीपक सैनी पुत्र श्री सुरेश चन्द्र सैनी, अध्यक्ष, ग्रामीण संघर्ष समिति ग्राम–अगवनहैड़ा, सरसावां, तहसील–नकुड़, सहारनपुर द्वारा कहा गया कि प्रभावित क्षेत्र में प्रत्यावेदन में वर्णित औद्योगिक इकाईयों के उत्प्रवाह निस्तारण के कारण कृष्णा नदी का जल प्रदूषित हो रहा है जिस कारणवश क्षेत्र में जन स्वास्थय एवं प्रदूषण संबंधी समस्याएं व्याप्त हो रही है।

मै. यू.पी. को–ओपरेटिव शुगर फैक्ट्री फेडरेशन लि., आसवनी इकाई के उपस्थित प्रतिनिधि द्वारा बताया गया कि आसवनी इकाई में प्रदूषित उत्प्रवाह के शुद्धिकरण एवं शतप्रतिशत प्रयोग हेतु शून्य उत्प्रवाह निस्तारण की स्थिति प्राप्त किये जाने हेतु पूर्ण प्रयास किये गये है। मुख्य पर्यावरण अधिकारी उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, द्वारा सूचित किया।

मै. किसान सहकारी चीनी मिल्स लि. शुगर यूनिट के उपस्थित प्रतिनिधि द्वारा बताया गया कि उद्योग में पूर्ण उत्प्रवाह शुद्धिकरण संयंत्र स्थापित है एवं शुद्धिकृत उत्प्रवाह की गुणता मानकों के अनुरूप रखी जाती है। उद्योग दिनांक 12.5.2007 से पेराई सत्र समाप्त होने के कारण बन्द है। मुख्य पर्यावरण अधिकारी, उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा सूचित किया गया कि उद्योग के विरूद्ध बोर्ड के पत्र दिनांक 28.3.2007 द्वारा जल अधिनियम, 1974 की धारा 33 ए के अर्न्तगत कारण बताओं नोटिस जारी किया गया है। इसके अतिरिक्त बोर्ड के पत्र दिनांक 17.7.2007 एवं 24.8.2007 द्वारा उत्प्रवाह शुद्धिकरण संयंत्र में आवश्यक सुधार कराये जाने एंव प्रभावी संचालन की कारगर कार्यवाही किये जाने के संबंध में भी नोटिस जारी है।

मै. एस.एम.सी. फूड्स लि. के उपस्थित प्रतिनिधि द्वारा बताया गया कि उद्योग में पूर्ण उत्प्रवाह शुद्धिकरण संयंत्र स्थापित है एवं शुद्धिकरण उत्प्रवाह की गुणता मानकों के अनुरूप रखी जाती है। उद्योग द्वारा जल अधिनियम, 1974 की धारा 25/26 के अन्तर्गत राज्य बोर्ड से सहमति जल प्राप्त की गई है जो दिनांक 31.12.2007 तक विधि मान्य है। उपस्थित प्रतिनिधि द्वारा सूचित किया गया है उद्योग से निस्तारित शुद्धिकरण उत्प्रवाह का अधिककाधिक प्रयोग सिचाई कार्यो हेतु किया जा रहा है। मुख्य पर्यावरण

अधिकारी, उ.प्र. प्रदूषण निंयत्रण बोर्ड द्वारा सूचित किया गया कि उद्योग के विरूद्ध बोर्ड के पत्र दिनांक 31.1.2007 द्वारा जल अधिनियम, 1974 की धारा 27(2) के अन्तर्गत सहमति आदेश खण्डित किये जाने हेतु कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। उद्योग के निरीक्षण दिनांक 23.4.2007 के दौरान उद्योग से निस्तारित शुद्धिकृत उत्प्रवाह की गुणता मानको के अनुरूप पाई गई है।

क्षेत्रीय अधिकारी उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, सहारनपुर द्वारा सूचित किया गया है कि मै. राज सल्फर फैक्ट्री उत्पादनरत नहीं है तथा मै. दुर्गा स्ट्रा बोर्ड द्वारा उत्प्रवाह शुद्धिकरण संयंत्र स्थापित किया गया है तथा उद्योग से निस्तारित उत्प्रवाह शतप्रतिशत उत्प्रवाह सिचाई कार्यो में प्रयुक्त हो जाता है।

याचीकर्ता श्री दीपक सैनी द्वारा इन इकाइयों पर राज्य बोर्ड द्वारा की गई कार्यवाहियों पर संतोष व्यक्त करते हुए बताया गया कि क्षेत्र में औद्योगिक इकाईयों को बन्द कराना मुख्य उद्देश्य नहीं है परन्तु यह आवश्यक है कि इन इकाइयों के संचालन से क्षेत्र का पर्यावरण प्रदूषित नहीं हो एवं जन स्वास्थ्य को कोई खतरा न हो। इसके अतिरिक्त यह भी उचित होगा कि क्षेत्र मे व्याप्त भूजल प्रदू ाण की समस्या के दृष्टिगत इन औद्योगिक इकाइयों द्वारा प्रभावित क्षेत्रों में वैकल्पिक जलापूर्ति की व्यवस्था एवं जन स्वास्थ्य के हित में चिकित्सीय व्यवस्था जैसे अन्य सामाजिक कार्य भी किये जाने चाहिए। इस संबंध में उक्त इकाइयों के प्रतिनिधियों द्वारा यह कहा गया कि वे स्वयं ही इस तरह के सामाजिक कार्य करते आ रहें है साथ ही उनके स्तर का कोई अन्य तत्सम्बन्धी आदेश/निर्देश दिया जाता है तो वे उसका भी अनुपालन सुनिश्चित करेगें।

अतः उपरोक्त को दृष्टिगत रखते हुए याचीकर्ता श्री दीपक सैनी के प्रत्यावेदन को निम्न निर्देशों के साथ निस्तारित किया जाता है :–

1. मै. यू.पी. को–ओपरेटिव शुगर फैक्ट्री लि. आसवनी इकाई द्वारा उद्योग का संचालन उ. प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी बन्दी आदेशों के अनुपालन में बन्द रखा जाये। उद्योग द्वारा बायोमिथिनेशन संयत्र एवं बायोकाम्पोस्ट प्लान्ट में सुधार कराया जाये एवं केन्द्रीय प्रदूषण निंयत्रण बोर्ड के चार्टर प्राविधानों के अनुपालन में वांछित कार्यवाही पूर्ण करते हुए प्रगति रिपोर्ट जमा की जाये। उद्योग

प्रबन्धन द्वारा जिला प्रशासन से संम्पर्क कर प्रभावित क्षेत्र मे स्वच्छ जलापूर्ति कराये जाने हेतु आवश्यक कार्यवाही की जाये एवं क्षेत्र में अन्य सामाजिक कार्य जैसे–वृक्षारोपण, क्षेत्र के निवासियों के स्वस्थ्य की जांच हेतु स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से कैम्प लगाया जाना आदि के संबंध में कार्ययोजना 15 दिन उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को प्रस्तुत करें।

2. मै. किसान सहकारी चीनी मिल्स लि. शुगर यूनिट ननौता, सहारनपुर द्वारा आगामी पेराई सत्र से पूर्व उत्प्रवाह शुद्धिकरण संयंत्र में वांछित सुधार कार्य पूर्ण करते हुए संयंत्र को स्टेबालाइज किया जाये तथा आगामी पेराई सत्र में संचालन से पूर्व जल अधिनियम, 1974 के अन्तर्गत सहमति प्राप्त की जाये। क्षेत्र में अन्य सामाजिक कार्य जैसे–वृक्षारोपण, क्षेत्र के निवासियों के स्वास्थ्य की जांच हेतु स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से कैम्प लगाया जाना आदि के संबंध ा में कार्ययोजना 15 दिन में उ.प्र. प्रदूषण निंयत्रण बोर्ड एंव जिला प्रशासन को प्रस्तुत करें।

3. मै. एस.एम.सी. फूड्स लि. ननौता, सहारनपुर द्वारा उत्प्रवाह शुद्धिकरण संयंत्र को नियमित रूप से संचालित करते हुए सुनिश्चित किया जाये कि परिसर से निस्तारित उत्प्रवाह की गुणता निर्धारित मानकों के अनुरूप हो। इसके अतिरिक्त उद्योग द्वारा परिसर से निस्तारित शुद्धिकृत उत्प्रवाह के शतप्रतिशत सिचाई कार्यो में प्रयोग किये जाने से संबंधित कार्ययोजना 15 दिनों में जमा की जाये तथा क्षेत्र में अन्य सामाजिक कार्य जैसे– वृक्षारोपण, क्षेत्र के निवासियों के स्वास्थ्य की जांच हेतु स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से कैम्प लगाया जाना आदि के संबंध में कार्ययोजना 15 दिन में उ.प्र. प्रदूषण निंयत्रण बोर्ड को प्रस्तुत करें।

उपरोक्त वर्णित निर्देशों का अनुपालन समस्त संबंधित इकाइयों द्वारा निध ार्रित समयावधि में करते हुए अनुपालन आख्या प्रस्तुत की जाये। उपरोक्त वर्णित निर्देशों के साथ याची श्री दीपक सैनी, अध्यक्ष ग्रामीण संघर्ष समिति, ग्राम–अगवनहैडा, सरसांवा, तहसील– नकुड़ सहारनपुर का प्रत्यावेदन को निर्धारित किया जाता है। आदेश की प्रति उभय पक्षों को कार्यालय द्वारा पंजीकृत डाक से भेजा जाये।

(डा.सी.एस.भटट)
सदस्य सचिव

इसी तरह की उत्तर प्रदेश में तालाब–पोखरों कुओं आदि पर से अवैध कब्जे हटवाने के संबंध में माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद द्वारा रिटयाचिका संख्या 38910/03 इकबाल अहमद व अन्य बनाम डी.डी.सी. देवरिया में पारित आदेश की अनुपालना कराने में सफलता मिली है। इस कार्यवाही के कुछ अंश संलग्न है।

आयुक्त एवं सचिव,
राजस्व परिषद, उ.प्र.
अनुभाग–5, लखनऊ।
सेवा में
समस्त जिलाधिकारी,
उत्तर प्रदेश।

संख्या 5,54/जी–5–9डी/05, दिनांक 5 फरवरी 2007

विषयः– वन, तालाब, पोखरों, कुओं, जल प्रणालियों, गढ़ही, नदी का जल और वाटर रिजरवायर से अवैध कब्जे हटाने के संबंध में माननीय उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 22.1.2007 के क्रम में अनुपालन के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक माननीय उच्च न्यायालय में रिट याचिका संख्या – 38910 वर्ष 2003 इकबाल अहमद व अन्य आदि में पारित आदेश दिनांक 6–3–2006 के क्रम में पुनः निर्गत ओदश दिनांक 22.1.2007 (प्रतिलिपि संलग्न) का सन्दर्भ ग्रहण करें।

उक्त संदर्भित रिट याचिका में माननीय उच्चन्यायालय के आदेश दिनांक 22.1.2007 के क्रम में नियमानुसार कार्यवाही करें तथा उक्त आदेश के परिप्रेक्ष्य में दिनांक 13.2.2007 तक प्रगति रिपोर्ट माननीय उच्च न्यायालय में जिलाधिकारी प्रस्तुत करें तथा कृत कार्यवाही से परिषद को भी अवगत करायें।

संलग्न–उपरोक्तानुसार।

भवदीय

अमित मोहन प्रसाद)
आयुक्त एवं सचिव
संख्या व दिनांक उपरोक्त
माननीय उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 22.1.2007 की प्रतिलिपि प्रमुख सचिव राजस्व उ.प्र. शासन को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

Hon. S.N. Srivastava, J.
Sri Sanjay Goswami, Learned Satanding Counsel, has filed an Affidavit of Sri Anand Prakash Upadhaya, Joint Secretary, Civil Secretariat, U.P., Lucknow.
From Perusal of this Affidavit, it transpires that the State of U.P. has constituted a high Powered Committee with the approval of the Hon'ble Minister of Revenue and the Hon'ble Chif Minister. Chif Secretary of the State of Uttar Pradesh has been nominated as President nominated as Convener of the aforesaid Committee. There are today 19 Members of the Committee including sri R.K. Valsh, Joint Secretary, Environment Department, Government of India, New Delhi. It further appears form this Affidavit that the Committee so constituted by the State shall look-after following works :-

1. *To improve and protect the water resources,*
2. *To identify the new water resource,*
3. *To utilize the existing resources optimally,*
4. *To identify and implement measures for controlling pollution,*
5. *To check the encroachment over water bodies,*
6. *Any other matter concerning the management of the water resources etc.*

"Right of drinking water is also included in right to live of a citizen, hence this Court is of the view that excavation and maintenance of the Tanks, Water Channels, Pokhars, Jheels and Water Reservoirs etc. is essential and the steps are required to be taken so that all works of excavation and maintenance be finished within two months.

जिला विकास अधिकारी,
आगरा।

श्री संजय गोस्वामी,
स्थायी, अधिवक्ता
माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

पत्रांक 59 /अनु.सहा./आदर्श जलाशय/ 2006–07

विषयः– वन, तालाब, पोखरों, कुओं, जल प्रणालियों, गढही, नदी का जल और वाटर रिजरवायर से अवैध कब्जे हटाने के संबंध में।

महोदय्

उपरोक्त विषयक आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परि ाद, उ.प्र. अनुभाग–5 लखनऊ के पत्र संख्या 1135/जी–5–9डी/05 दिनांक 14.3. 2007 के द्वारा वन, तालाब, पोखरों, कुओं, जल प्रणालियों, गढही, नदी का जल और वाटर रिजरवायर से अवैध कब्जे से सम्बधित सूचना की सी.डी. माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद में उपलब्ध कराने के निर्देश दिये गये है।

उक्त के संबंध में जनपद आगरा द्वारा व ि 2006–07 में सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना एवं आदर्श जलाशय योजनान्तर्गत निर्मित/जीर्णोद्वार किये गये 636 तालाबों की सी.डी. आपकी सेवा में आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित हे।

कृपया प्राप्ति स्वीकार करने का कष्ट करें।

संलग्न :– सी.डी.

भवदीय

जिला विकास अधिकारी, आगरा।

प्रतिलिपिः–1. मुख्य स्थायी अधिवक्ता, माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद की सेवा में सूचनार्थ प्रेषित।

2. आयुक्त एवं सचिव राजस्व परिषद उ.प्र. अनुभाग–5 लखनऊ की सेवा में सूचनार्थ प्रेषित।
3. जिलाधिकारी, आगरा की सेवा में अवलोकनार्थ प्रेषित।
4. अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) आगरा को सूचनार्थ प्रेषित।

जिला विकास अधिकारी, आगरा

कार्यालय जिलाधिकारी आगरा।

संख्या :– 457 / डी.एल.आर.सी. दिनांकः 16 अप्रैल 2007

विषयः– रिटयाचिका सं. 3413, एम.एस. 2006 राजेन्द्र बनाम अपर आयुक्त देवीपाटन मण्डल, गोण्डा व अन्य में पारित माननीय उच्च न्यायालय, लखनऊ के आदेश दिनांक 23.3.2007 के संबंध में।

समस्त अधिकारी,
नाम स.
जनपद आगरा।

उपरोक्त विषय अधोहस्ताक्षरी के पत्र संख्या 451 / डी.एल.आर.सी. दिनांक 10 अप्रैल 2007 के साथ संलग्न आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र. के पत्र दिनांक 9 अप्रैल 2007 एवं माननीय उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 23.3.2007 के क्रम में दिनांक 14.4.2007 को हुई बैठक का संदर्भ ग्रहण करें।

उक्त के क्रम में बैठक में हुए विचार विमर्श के अनुसार माह दिसम्बर 2006 में आपके द्वारा भेजी गयी सूचना के अनुसार माननीय राजस्व परिषद उ.प्र. लखनऊ को भेजी गयी सूचना की छायाप्रति आपको इस आश्य से संलग्न कर भेजी जा रही है कि आप पुनः इसका परीक्षण अपने स्तर से करालें और कातिय स्थानों पर त्थलीय सत्यापन भी करा लें, जिससे दिनांक 23 व 24 अप्रैल 2007 को राज्य स्तरीय कमेटी के स्थलीय सत्यापन के दौरान किसी प्रकार की अनियमितता नहीं रहें।

संलग्न उपरोक्तानुसार :–

1. प्रतिलिपि नगर आयुक्त नगर निगम आगरा को इस कार्यालय के पत्र दिनांक 10 अप्रैल 2007 के क्रम में सूचनायें एंव आवश्यक कार्यवाही हेतु।

2. अधिशासी, अधिकारी
नगर पालिका परिषद,एत्मादपुर/बाह/फतेहपुरसीकरी/अछनेरा/शमशाबाद/नगर पंचयात किरावली/खेरागढ/जगनेर/फतेहाबाद/पिनाहट/दयालबाग एवं स्वामीबाग को सूचानार्थ एंव तत्काल उपरोक्तानुसार प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करायें जाने हेतु।

केश रेडियोग्राम

उपजिलाधिकारी,
बाह/खेरागढ/एत्मादपुर/किरावली/फतेहाबाद/आगरा (दस्ती)
डब्लू तहसीलदार,
बाह/खेरागढ/एत्मादपुर/किरावली/फतेहाबाद/आगरा (दस्ती)
अधिशासी, अधिकारी
नगर पालिका परिषद, एत्मादपुर/बाह/फतेहपुरसीकरी/अछनेरा/शमशाबाद/नगर पंचयात किरावली/खेरागढ/जगनेर/फतेहाबाद/पिनाहट/दयालबाग (दस्ती)/स्वामी बाग (दस्ती)

प्रेषक
जिलाधिकारी,
आगरा।

संख्या 456/डी.एल.आर.सी. दिनांकः 13.4.
2007

जनपद आगरा के नगर निगम, नगर पालिका परि ाद एंव नगर पंचायत की सीमा के अन्तर्गत स्थित नगरीय क्षेत्रों के तालाबों/जलाशयों/बावडियों आदि से सम्बधित जो सूचनायें आपके द्वारा पूर्व में उपलब्ध करायी गयी थी, उन सूचनाओं को पुनः एक बार परीक्षण/स्थलीय निरीक्षण आदि करके यह देख लें कि वह सूचनायें सही है अथवा नहीं। सूचनाओं का सत्यापन करके दिनांक 14.4.2007 को प्रातः 11 बजे समस्त सूचनाओं के साथ बैठक में स्वयं उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

सन्देश हेतु नहीं

(जितेन्द्र सिंह)

अपर जिलाधिकारी (प्रशासन)

आगरा।

कार्यालय जिलाधिकारी, आगरा

संख्याः— 451 डी.एल.आर.सी. दिनांकः—14.
अप्रैल2007

विषयः— रिट याचिका संख्या 3413 एम.एस. 2006 राजेन्द्र बनाम अपर आयुक्त देवीपाटन मण्डल, गोण्डा व अन्य पारित माननीय उच्च न्यायालय, लखनऊ के आदेश दिनांक 23.3.2007 के संबंध में।

1.उपाध्यक्ष
आगरा विकास प्राधिकरण, आगरा।
2.अपर आवास आयुक्त
आवास विकास परिषद, कमलानगर, आगरा।

3.नगर आयुक्त,
नगर निगम आयुक्त, आगरा
4.समस्त उपजिलाधिकारी/तहसीलदार, जनपद आगरा।
5.समस्त अधिशासी, अधिकारी,
नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत, जनपद आगरा।

उपरोक्त विषयक इस कार्यालय के पत्र संख्या 210/डी.एल.आर.सी. दिनांक जनवरी 15.2007 का सन्दर्भ ग्रहण करें। जिसके साथ मुख्य सचिव उ.प्र. शासन राजस्व अनुभाग–2, लखनऊ के पत्र एवं उक्त याचिका में पारित माननीय उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 6.12.2006 को छायाप्रति इस आश्य से संलग्न कर भेजी गयी थी कि आप तदानुसार आवश्यक प्रभाव कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित करें तथा इस कार्यवाही से अवगत करायें। उक्त क्रम में प्राप्त आयुक्त एंव सचिव, राजस्व परि ाद उ.प्र. अनुभाग–5, लखनऊ के पत्र संख्या 759/जी.–5–1डी./07, दिनांक 09 अप्रैल 2007 एवं उसके साथ संलग्न माननीय उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 23.3. 2007 की छायाप्रति आपको इस आश्य से संलग्न कर भेजी जा रही है कि आप उपलब्ध अभिलेखो के आधार पर दी गयी सूचना का पुनः अपने स्तर से परीक्षण करा लें तथा कतिथ्य स्थानों पर स्थलीय सत्यापन भी करवा लें। परि ाद के उक्त पत्रानुसार राज्य स्तरीय कमेटी द्वारा दिनांक 23 व 24 अप्रैल 2007 को जनपद आगरा का भ्रमण एंव स्थानीय सत्यापन तथा अभिलेखीय सूचना का सत्यापन किया जाना है। इसे शीघ्र प्राथमिकता प्रदान की जायें।

(जितेन्द्र सिंह)

अपर जिलाधिकारी प्रशासन, आगरा

प्रेषक,
आयुक्त एवं सचिव,
राजस्व परिषद, उ.प्र.
अनुभाग–5, लखनऊ

सेवा में,

जिलाधिकारी,

आगरा।

पत्र संख्याः 759/जी–5 दिनांकः 1 अप्रैल 2007

विषयः– रिट याचिका संख्या 3413 एम.एम./2006 राजेन्द्र बनाम अपर आयुक्त, देवीपाटन मण्डल, गोण्डा व अन्य में पारित माननीय उच्च न्यायालय, लखनऊ के आदेश दिनांक 23.3.2007 के संबंध में।

महोदय्

माननीय उच्च न्यायालय क उर्पयुक्त आदेश के क्रम में गठित राज्य स्तरीय कमेटी की बैठक आज दिनांक 9.4.2007 को कमेटी के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री शैलेन्द्र सक्सेना "सेवा निवृत्त" की अध्यक्षता में हुई। जिसमें जनपद आगरा के सम्बन्ध में आपके द्वारा नागर क्षेत्र के तालाब, पोखरों, हिल टाप आदि की प्रेषित सूचना पर चर्चा हुई। जनपद आगरा में एक नगर निगम व 11 अन्य नगर निकाय है। 26.1.1950 को नगर निगम आगरा में अभिलेखों के अनुसार 75 तालाब थे जबकि 15.10.2006 क अभिलेखों के आधार पर तालाबों की संख्या घटकर 56 रह गयी है परन्तु अभिलेखीय सूचना के अनुसार क्षेत्रफल में बढ़ोत्तरी दिखायी गयी है। जिससे विरोधाभास प्रतीत होता है। जनपद के अन्य 11 नगर निकाय में पूर्व में 51 तालाब थे, जबकि वर्तमान में तालाबों की संख्या 55 दिखायी गयी है इसमें भी रकबे में कमी आयी है।

उपरोक्त स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए राज्य स्तरीय कमेटी द्वारा दिनांक 23 व 24 2007 को जनपद आगरा का भ्रमण तथा स्थलीय सत्यापन एवं अभिलेखीय सूचना की सत्यता के परिक्षण का निर्णय लिया गया है।

अतः आपसे अनुरोध है कि इस अवधि में आप उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर दी गयी सूचना का पुनः परीक्षण करलें तथा जिला स्तरीय कमेटी द्वारा कतिपय स्थानों का स्थलीय सत्यापन भी करवा लिया जाये ताकि कमेटी के समक्ष प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न न हो।

संलग्नः– माननीय उच्च न्यायालय के आदेश
दिनांक 23.3.2007 की छाया प्रति।

भवदीय

(अमित मोहन प्रसाद)

आयुक्त एंव सचिव

माननीय उच्च न्यायालय लखनऊ में याचिका सं. 3413 एम.एस. राजेन्द्र अपर आयुक्त देवी पाटन मण्डल गोण्डा व अन्य से पारित 23.3.2007 आदेश के क्रम में हुई प्रगति देखें। जहां सक्रियता वहां कुछ तालाबों के कब्जे हटे पुनः बने भी। आगरा में श्री रमण जी, श्री मुकेश जैन तालाबों और यमुना नदी को पुनर्जीवित बनाने को चलने जगाने में जुटे है। इन्हीं ने ये सब कागजात उपलब्ध करायें।

मैं पिछले दो महिनों में तीन बार आगरा गया हूँ। आगरा के साथियों की यमुना जलशुद्धि सक्रियता देखकर अच्छा लगा। मुझे प्रसन्नता इस बात की है। तीन साल पहले आगरा जब गया था, तब आगरा के लोग मेरे साथ पानी की बात करने में जी चुराते थे। इसबार तो यमुना को बचाने, शुद्ध–सदानीरा बनाने की बाते और प्रत्यक्ष काम कई मित्रों ने मिलकर शुरू किया। यमुना सत्याग्रह की तरफ से आगरावासियों को इस दिपावली 2007 पर बधाई देना चाहता हूँ।

दिल्ली जागो कार्यक्रम

यमुना नदी में प्रदूषण तथा नदी के मैदानी तट पर सरकारी व गैर सरकारी अतिक्रमण के खिलाफ जागरूकता फैलाने के लिए सिटिजनस फ्रन्ट फॉर वाटर डेमोक्रेसी ने 14 दिनों का अभियान चलाया। जागो दिल्ली जागो–यमुना बचाओ–जीवन बचाओ, नाम से चलाए जा रहे अभियान का आरम्भ 25 अक्टूबर 2007 को एक समारोह आयोजित कर राजघाट पर किया गया था।

जागरूकता अभियान के तहत यमुना नदी में बढ़ते प्रदूषण तथा निर्माण कार्यो के कारण, भविष्य के खतरों से जागरूक करने के लिए खास होडिंगस टाटा 407 गाडी पर लगाकर फ्रन्ट के 100 से अधिक कार्यकर्ताओं ने समूची दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 1150 कि.मी. की यात्रा की।

20–25 लाख लोगो से सीधे संवाद कर यमुना पर साहित्य सामग्री बांटी तथा स्कूल, कालेज, समुदायिक भवन, एपार्टमेंटस, कालोनियों आदि में बैनर्स, स्टिकरर्स आदि लगाकर जन जागरण अभियान चलाया। 2,50,000 से अधिक हस्ताक्षर सफेद कपड़े पर करवा कर जन भावनायें एकत्रित की गयी।

दिल्ली की जनता ने बड़ी संख्या में अपना रेफरन्डम देकर सरकार को चेताया है कि यमुना पर किसी भी प्रकार का सरकारी, गैर सरकारी, कानूनी–गैर कानूनी, धार्मिक अथवा व्यवसायिक सभी प्रकार के निर्माण तुरन्त हटायें जाये। यमुना को खेलगांव, माल व सभी तरह के अतिक्रमण से मुक्त किया जाये। यमुना को पूर्ण रूप से प्रदूषण व निर्माण से निजात दिलाई जाये। जनता ने यमुना की सफाई पर अब तक खर्च किये गये 1500 करोड़ पर श्वेत पत्र जारी करने की मांग सरकार से की है तथा शंका जताई कि भविष्य में परियोजनाओं पर हजारों करोड़ खर्चा करने के पश्चात यमुना की सफाई की क्या गारन्टी है ? मैली यमुना ने सरकार के एक्शन प्लानों की कलई खोल दी है। अब यमुना के किनारे भूमि पर भू–माफियाओं की गिद्ध दृष्टि पड़ गई है। इसी कारण कोड़ियों के भाव सरकार अधिग्रहण कर इस जमीन पर व्यवसायिक केन्द्र, मॉल, खेलगांव एक साजिश के तहत बना रही है। यमुना के तटीय मैदानी क्षेत्र भूजल–रिचार्ज करते हैं तथा मानसून के समय ही मात्र 27 दिनों में इतना भूजल रिचार्ज होता है जिससे 25 प्रतिशत दिल्लीवासियों को पानी की आपूर्ति होती है। कंक्रीटाइज होने के पश्चात शहर में भूजल का संतुलन बिगड़ जायेगा व 25 प्रतिशत आबादी को इसकी मार झेलनी पड़ेगी। वर्षा के महिनों में बाढ़ के खतरों से शहर घिर जायेगा।

दिल्ली की जनता ने मांग की है कि यमुना नदी को प्रदूषण से मुक्ति मिलनी चाहिए। यमुना के मैदानी क्षेत्रों को भूजल संरक्षण के लिए संरक्षित क्षेत्र सरकार घोषित करें। सभी प्रकार के निर्माण इन क्षेत्रों से तुरन्त हटाये जायें। यमुना को प्राकृतिक वन व सम्पति, ईकालोजिकल फंकशंस तथा हाईड्रोलोजिकल गतिविधियों के लिए सुरक्षित किया जाये। यमुना नष्ट होने के साथ दिल्ली में पानी की आपूर्ति का एक मात्र स्त्रोत भी नष्ट हो जायेगा। दिल्ली भूजल के गिरते स्तर व प्रदेशों के आपसी झगड़ों के कारण जल संकट से पहले ही जूझ रही है। यदि विकास तथा खेलों के नाप पर

इसी प्रकार विनाशकारी गतिविधियां जारी रहीं, तब दिल्ली में जीवन समाप्त हो जायेगा।

जागो, दिल्ली जागो जागरूकता अभियान के समापन पर इण्डिया गेट पर टोली–जेनिक स्टूडियों में एक जल गोष्ठी का आयोजन कर प्रेस को भी सम्बोधित किया गया। प्रेस को सम्बोधित करते समय एस.एस. नकवी, सह संयोजक–सिटिजन फ्रन्ट डेमोक्रेसी ने वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के रिवेमपिंग दा रिवर कंजवेशन स्ट्रेटीजी योजना पर चिंता व्यक्त की। मंत्रालय की देश की नदियों को साफ करने के लिए खर्च की रकम का भुगतान, नदियों के किनारे की जमीन को बेचकर पूरा करने की योजना को देश के जल संसाधनों के विनाश तथा समाज के हितों एंव प्राकृतिक नियमों के विरूद्ध बताया। ऐसा करने से नदियों का चरित्र खत्म हो जायेगा व यह सब व्यवसायिक तथा औद्योगिक मानसिकता देश की नदियों तथा उनके मैदानी क्षेत्रों पर भ्रष्टाचार का एक हमला है।

सरकारी योजनायें, गंगा व यमुना एक्शन परियोजनायें भ्रष्टाचार के कारण ही फेल मॉडल साबित हुई है। जिससे देश की जनता की हजारों करोड़ की रकम गन्दे पानी में बह गयी है। नदियां गन्दी और गन्दी हुई है। नदियों का संरक्षण का हल जनता की भागीदारी तथा जागरूकता फैलाकर ही संभव है। समाज अपी जिम्मेदारी से बच नहीं सकता अन्यथा उसको दोहरी हानि उठानी पडेगी। प्रथम मोटे–मोटे कर्जों की भरपाई दूसरे अपने स्वास्थ्य तथा जल संकट के रूप में।

डा. वन्दना शिवा ने हाल में सोनिया गांधी द्वारा चीन के दौरे के दौरान जारी वक्तव्य भारत को चीन के लोगों से नदियों के संरक्षण करने का सबक सीखना चाहिए, खेद प्रकट करते हुए कहा कि चीन अपनी नदियों को पहले ही नष्ट कर चुका है। वहां पर गहरा जल संकट है तथा बची–बचाई नदियां प्रदूषित तथा नहरों के स्वरूप में जिन्दा है। ऐसे में भारत के लोगों को विनाश का पाठ चीन से सीखकर क्या लाभ मिलेगा ? विकास तथा औद्योगिकरण की दौड़ में खोये हुए यूरोपियन देश जो पहले ही अपने जल संसाधन नष्ट कर जल को बाजार बनाने पर तुले है। इसी मानसिकता के कारण ही भारत देश की नदियों पर खतरे व विनाश के बादल मंडरा रहें है। भारत को अपनी संस्कृति व पूर्व के इतिहास से सबक लेकर जल संसाधनों की व्यवस्था को पुनः जनता की जिम्मेदारी में सौंपना चाहिए।

राजेन्द्र सिंह ने चिन्ता व्यक्त की कि पूर्व में फतेहपुर सीकरी से शिफ्ट होकर दिल्ली को यमुना के किनारे बसाया गया, अब सरकार दिल्ली में यमुना को उजाड़कर उसकी जमीन को बेचकर उस पर व्यावसायिक केन्द्र तथा खेलगांव बना रही है। यमुना उजड़ने के बाद अब दिल्ली कहां जायेगी ? यमुना में तो पेड़ लगाने की आवश्यकता है तथा उसके किनारों का संरक्षण दिल्ली की जल आपूर्ति को ध्यान में रखते हुए करना अतिआवश्यक है, वरना दिल्ली के लोगों को भविष्य तथा आने वाली पीढ़ी दोनों ही खतरे में हैं।

संगोष्ठी में निर्णय किया गया कि समाज को जल संसाधनों के संरक्षण में भागीदारी स्थापित करने के लिए आगे भी जागरूकता अभियान चलाये जायेंगे। यमुना को प्रदूषण व निर्माण से मुक्ति के लिए जनता के रेफरन्डम को सरकार को सौंपकर, कारगर कदम उठाने के लिए बाध्य किया जायेगा। राजेन्द्र सिंह ने प्रेस से कहा हम यमुना पुनर्जन्म के लिए काम कर रहें है। दिल्लीवासियो को जगना और जुड़ना चाहिए।

एस.ए.नकवी

दिल्ली ने यमुना की जमीन लूटी

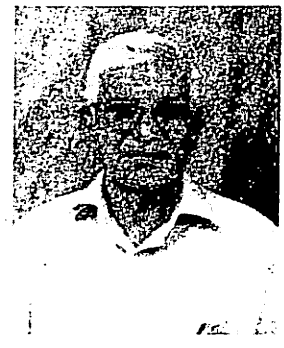

ओखला बैराज एंव वजीराबाद पुल के बीच यमुना नदी के पूर्वी एंव पश्चिमी किनारों की यमुना क्षेत्र की भूमि के बारे में कुछ ऐतिहासिक जानकारियां :–

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में ओखला बैराज एंव वजीराबाद पुल के नीचे यमुना नदी के पूर्वी एंव पश्चिमी किनारों की यमुना क्षेत्र की 10,000 हैक्टेयर भूमि पहले से –

समसपुर जागीर, पटपटगंज, शकरपुर, मंडावली फाजलपुर, चिल्ला सरौंदा, नंगली रजापुर, सराय कालेंखा, कोटला गांव, दलपुरा, गाजीपुर, कोण्डली, घोण्डली, गामडी, उस्मान पुर, घोण्ड़ा, मौजपुर, चौहान बागर, गढ़ी मैन्डु, खुजरी, शेरपुर, बिहारी पुर, दयाल पुर, सभापुर, करावल नगर, बाबरपुर, सीलमपुर, जाफराबाद, कैथवाड़ा, खिचडी पुर, धडौली, बोहापुर, हसनपुर इत्यादि गावों के किसानों की

भूमि थी। जिस पर इन गावों के किसान खेती करते आ रहें थे। परन्तु अग्रेजी हुकुमत के दौरान अंग्रेजो ने नई दिल्ली को राजधानी के रूप में विकसित किया तो उनके मन में यमुना नदी के दोनों किनारों की इस भूमि को जो नई दिल्ली से सटी हुई है अपनी शिकारगाह एवं शहरगाह के रूप में विकसित करने की बात उनके मन में आई। अंग्रेजो ने इस भूमि का अधि ग्रहण कर लिया तथा यह सभी भूमि एक जंगल के रूप में बदल गई। इस जंगल में जंगली जानवरों का राज हो गया तथा सत्ता में बैठे हुए अंग्रेज लोग इस भूमि का उपयोग शिकार गाह एवं शहर गाह के रूप में करने लगे। कुछ ठेकेदार लोगों की इस जंगल का ठेका सौंपा गया जो शिकार के समय अंग्रेजों के साथ रहकर सहयोग करते थे। इस भूमि को इसी रूप में अंग्रेज 1947 तक प्रयोग करते रहें।

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ तथा इसी के साथ अंग्रेजो को यहां से जाना पड़ा। श्री जवाहरलाल नेहरू देश के प्रथम प्रधान मंत्री बने तथा चौ. ब्रहमप्रकाश दिल्ली राज्य के पहले मुख्यमंत्री बने। उस समय ठेकेदारी एंव जागीरदारी प्रथा समाप्त करके किसानों को भूमि का मालिकाना हक देने की बात चली। इसके तहत चौ. ब्रह्मप्रकाश ने 1949 में दिल्ली पिजेन्टस मल्टीपरपज कोपरेटिव सोसायटी 5150 बल्लीमाराण दिल्ली एवं झील खुरजां दिल्ली मिल्क प्रोडियूसर कोपरेटिव सोसायटी नाम की दो संस्थाओं की स्थापना की तथा यमुना क्षेत्र की इस भूमि को दिल्ली इम्परूवमेन्ट ट्रस्ट द्वारा पटटे पर इन दोनों सोसायटी को सौंपा गया। यह भूमि दिल्ली पिजेन्टस मल्टीपरपज कोपरेटिव सोसायटी को कृषि कार्य के लिए आंवटित की गई तथा झील खुरंजा सोसायटी को यह जमीन चरागाहों के लिए आंवटित हुई। दिल्ली इम्परूवमेन्ट ट्रस्ट एवं सोसायटी के बीच समझोते के अनुसार इस समस्त भूमि का प्रयोग केवल कृषि एंव उससे सहायक क्रियाओं के रूप में किया जायेगा। कृषि के अतिरिक्त किसी अन्य रूप में इस भूमि का प्रयोग वर्जित होगा। इसके अतिरिक्त यदि सरकार को किसी सार्वजनिक कार्य के लिए इस भूमि की आवश्यकता होगी तो सोसायटी को इस भूमि को जिस की सरकार को आवश्यकता होगी सरकार को देनी पड़ेगी।

यह सब वर्ष 2000 तक ठीक ठाक चलता रहा तथा समय–समय पर आवश्यकता पड़ने पर सोसायटीयां सरकार को सार्वजनिक कार्यो के लिए

भूमि उपलब्ध कराती रही है। सभी समाधियों जैसे (राजघाट, शान्तिवन इत्यादि) पावर हाउस, आई.टी.ओ. पुल, वजीराबादपुल, निजामुददीन पुल, गीता कालोनी इत्यादि के लिए सोसायटी ने अपने किसान सदस्यों से भूमि खाली कराकर सरकार को सौंपी।

वर्ष 2000 में जब एन.डी.ए. की सरकार सत्ता में थी गुजरात की एक संस्था स्वामीनारायण अक्षरधाम ट्रस्ट यमुना के किनारें एक भव्य भवन का निर्माण करने के लिए भूमि की तलाश में थी। माननीय श्री आडवाणी जी जो उस समय देश के उपप्रधान मंत्री थे तथा इस ट्रस्ट से जुड़े हुए है ने इस ट्रस्ट को यमुना किनारें जमीन दिलाने का बीडा उठाया। उन्होंने अपने राजनैतिक प्रभाव का प्रयोग करते हुए यमुना नदी के पूर्वी तट पर दिल्ली के उपराज्यपाल से कहकर डी.डी.ए. से अक्षरधाम ट्रस्ट को लगभग 60 एकड़ भूमि अलाट करा दी। याद रहे यह भूमि पहले दिल्ली पिजेन्टस मल्टीपरपज कोपरेटिव सोसायटी एवं झील खुरंजा सोसायटी को आंवटित की हुई थी। राजनैतिक एवं पुलिस बल के बलबूते पर गरीब किसानों को इस जमीन से उजाड़ दिया गया। गरीब किसानों एंव भूमिहर मजदूरों ने अपनी भूमि के लिए संघर्ष भी किया परन्तु राजनैतिक ताकत के सामने गरीब एवं असहाय किसानों एवं भूमिहर मजदूरों की एक ना चली। उन्हें थाने में बन्द कर दिया गया तथा पुलिस के बलबूते एवं अपने आका श्री ए.के. आडवाणी की कृपा से अक्षरधाम ट्रस्ट ने इस भूमि का कब्जा ले लिया तथा देखते–देखते गरीब लोगों की खेती एवं जमीन व गरीब लोगों के मन्दिरों को ध्वस्त कर के अमीर लोगों का एक भव्य एंव आलीशान भवन स्वामीनारायण अक्षरधाम के नाम से बनकर खड़ा हो गया। जिसका उदघाटन करने के लिए माननीय राष्ट्रपति एंव माननीय प्रधानमंत्री भी मौजूद हुए। यह एक ताकत का नंगा नाच यहा के लोगों को देखने को मिला तथा इसके साथ यमुना नदी को बेचने तथा यमुना क्षेत्र को कंकरीट में बदलने का खेल शुरू हुआ। याद रहे यह स्वामीनारायण अक्षरधाम का निर्माण बिल्कुल यमुना नदी के पेट में किया गया इसके पश्चात इस अक्षरधाम के साथ लगी हुई लगभग 60 एकड़ भूमि पर भी डी.डी.ए. ने जबरदस्ती किसानों को उजाड़कर दिवाली के दिन 2000 में कब्जा कर लिया। इसी भूमि पर अब खेलगांव का निर्माण चल रहा है इस भूमि पर किसानों की लहलाती फसलों को रौंद दिया गया तथा किसानों को उनकी फसल का मुआवजा तक नहीं दिया गया। कुछ

किसान भाईयों ने माननीय उच्च न्यायालय से स्टे भी ले लिया था परन्तु राजनैतिक ताकत के सामने सब कुछ बेकार रहा।

यदि इसी प्रकार से यमुना नदी का अतिक्रमण चलता रहा तो बहुत जल्दी यमुना नदी का स्वरूप ही समाप्त हो जायेगा। तथा यमुना नदी एक गन्दे नाले के रूप में परिवर्तित हो जायेगी। इसके साथ यमुना नदी का यह यमुना खादर का क्षेत्र भूजल के रिचार्ज के लिए सबसे उत्तम है। यदि यमुना क्षेत्र पर कब्जा जारी रहा तो भूजल का स्तर दिन पर दिन कम होता जायेगा तथा एक दिन दिल्ली त्रेपानी हो जायेगी। इसके साथ प्राकृति के साथ खिलवाड़ करना भयंकर हो सकता है। यदि 1947, 1978 जैसी बाढ़ यमुना नदी में आ जाती है। तो यमुना नदी का बाढ़ का पानी कहां जायेगा तथा दिल्ली के डुबने का खतरा हो जायेगा। ऐसी अवस्था में सरकार प्राकृतिक आपदा करकर अपना पिंड छुटा लेगी। जबकि सरकार इसके लिए खुद ही जिम्मेदार है।

एक और वास्तविकता आपके सामने रखना चाहता हूँ कि स्वामीनारायाण रूपी अक्षरधाम वास्तव मन्दिर ना होकर एक माल के रूप में काम कर रहा है। इस भवन में अन्दर जाने पर भी 150 रू. का टिकट लगता है, तथा इतने ही पैसे पार्किंग शुल्क के रूप में देना पड़ता है इस प्रकार से अक्षरध्ाम मन्दिर के नाम पर लोगों के ठहरने एवं खाने पीने की सभी सुविधाएं उपलब्ध है। कराके मोटे पैसे इकठठे किए जा रहें है।

प्रस्तावित खेलगांव के बारे में भी यह जानना जरूरी है कि यहां पर खेल के किसी भी आइटम को यहा कराने की व्यवस्था नही है। यहां पर विदेशी खिलाड़ियों को ठहराने की व्यवस्था की जा रही है वह भी केवल 10 दिन के लिए। दिल्ली इतना बड़ा शहर है जिसमें अनेक होटल एवं गेस्ट हाउस है जहां पर इन खिलाड़ियों की ठहराने की व्यवस्था आसानी से की जा सकती है। परन्तु असली बात तो खेल के नाम पर नोट बटोरने की है जिसमें सत्ता में बैठे लोगों की पूरी भागीदारी हैं इसके साथ–साथ यह यमुना का बाढ़ प्रभावित क्षेत्र सबसे अधिक भूकम्प प्रभावित क्षेत्र है तथा रेत में महल खड़ा करना अत्यधिक खतरनाक हो सकता है। यदि 2009 अथवा 2010 में कोई भूकम्प आ जाता है तो विदेशी खिलड़ियों का जीवन कितना सुरक्षित होगा आसानी से सोचा जा सकता है।

1949 की लीज डीड के अुनसार दिल्ली पिजैन्टस मल्टीपरपज कोपरेटिव

सोसायटी एंव दिल्ली इम्परूवमेन्ट ट्रस्ट के बीच जो समझोता हुआ इसकी सबसे पहली शर्त यह थी कि सोसायटी इस भूमि का उपयोग केवल कृषि के लिए करेगी अन्य कोई कार्य मान्य नहीं होगा दूसरी शर्त यह थी कि सार्वजनिक कार्य के लिए यदि सरकार को इस भूमि की आवश्यकता होगी तो सोसायटी इस भूमि को सरेन्डर करेगी। परन्तु स्वामीनारायण अक्षरधाम भवन का बनाना कोई सार्वजनिक कार्य नहीं इसी प्रकार से कॉमनवैल्थ खेल के लिए खेलगांव का निर्माण भी सार्वजनिक हित नहीं है इसलिए इन दोनों संस्थाओं को दी जाने वाली भूमि गैर कानूनी एंव समाज विरोधी है। खेलगांव तो 1982 में भी जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम के समीप एशियन गेम्स के समय दिल्ली में बनाया गया था। परन्तु खेल समाप्त होने के बाद खेलगांव के सभी फलेटों को सत्ता में बैठे हुए लोगों ने अपने सगे सम्बन्धियों को बेच दिया। खेलगांव जो अक्षरधाम के पीछे बनाया जा रहा है। कॉमनवैल्थ खेल के लिए उसे भी खेल खत्म होने पर बेच दिया जायेगा और उसके खरीदार और कोई नहीं बल्कि स्वामीनारायण अक्षरधाम ट्रस्ट को होगा और इस प्रकार से देखते ही देखते स्वमीनारायण अक्षरधाम ट्रस्ट यमुना क्षेत्र की 150 एकड़ भूमि का मालिक बन जायेगा यह सब खेल–खेल के नाम पर खेला जा रहा है।

डी.डी.ए. यह कहती है कि हमने दिल्ली पिजेन्टस मल्टीपरजप कोपरेटिव सोसायटी की लीज 1966 में खत्म कर दी है। परन्तु डी.डी.ए. ने 1966 के बाद भी अनेक पत्रो के माध्यम से सोसायटी से लीज की बात करती रही है। यदि 1966 में लीज खत्म हो गई तो इन पत्रों का क्या औचित्य है। डी.डी.ए. ने 1977 में अपने रिजोलेशन ने 6 में वर्णन किया है कि दिल्ली पिजेन्टस सोसायटी को पुराने रेट पर लगान लगाकर इनसे बकाया वसूल किया जाये तथा इनकी लीज डीड का नवीनीकरण किया जाए परन्तु डी. डी.ए. अपने ही बोर्ड के फैसले मानने को तैयार नहीं है।

डी.डी.ए. ने अपने इस्टेट आफिस के माध्यम से पी.पी.एक्ट. के अन्तर्गत सोसायटी के अनेक किसानों को बेदखल के नोटिस दिए यह किसान भाई सेशन जज के यहां गए तथा इन नोटिस के खिलाफ कार्यवाही की सेशन जजों ने अपने फैसलों में कहा कि किसानों को बेदखल करना गलत है क्योंकि लीज किसानों के नहीं ब्लकि सोसायटी के नाम है तथा सोसायटी को पार्टी बनाकर ही कार्यवाही की जाए तथा यह सारे केस माननीय सेशन

जज द्वारा वापिस एन.डी.ए. इस्टेट आफिसर को भेज दिए गए जो आज भी विचारधीन है।

31 दिसम्बर 1977 के पत्र अनुसार डी.डी.ए. ने महासचिव दिल्ली पिजेन्टस सोसायटी के नाम 1,12,547, 44 रू. का लीज डीड (1973–1977) तक डिमांड नोटिस दिया जिसका 25,000 रू. का भुगतान सोसायटी द्वारा रसीद न 11209 तिथि 28.2.78 को तथा 87547.44 पैसे का भुगतान डीमान्ड ड्राफ्ट न. 040273 तिथि 7.9.91 में किया गया यदि सोसायटी की लीज 1966 में खत्म कर दी गई तो डी.डी.ए. ने लीज का डीमान्ड नोटिस क्यों भेजा व इसका भुगतान क्यों स्वीकार किया। इस प्रकार से डी.डी.ए. पर कोई एतबार नहीं किया जा सकता। इसके बाद डी.डी.ए. के इस्टेट आफिसर के पत्र न. 91/112/162 तिथि 1.8.2007 के अनुसार सोसायटी के बेदखल कर दिया तथा 15 दिन में उसका कब्जा छोड़ने का निर्देश दिया सोसायटी ने तिथि 17.8.2007 को इसके खिलाफ सेशन जज के यहां अपील की। माननीय जज सहाब ने 21.8.2007 की सुनवाई के दौरान सोसायटी के खिलाफ डी.डी.ए. द्वारा कोई भी कार्यवाही ना करने का आदेश दिया जिसकी अगली तारीख 3.12.2007 है। इस प्रकार से कानूनी तौर पर भी सोसायटी आज भी इस भूमि की मालिक है।

इसके साथ–साथ सोसायटी ने डी.डी.ए. की गैर कानूनी कार्यवाही के खिलाफ रोक लगाने के लिए माननीय उच्च न्यायालय में एक रिट पेटिशन दिनांक 23.7.2004 को लगाई तथा माननीय उच्च न्यायालय ने अपने फैसलें दिनांक 19.4.2006 में सोसायटी को पट्टेदार माना तथा डी.डी.ए. को हिदायत दी कि सोसायटी के खिलाफ कोई भी कार्यवाही कानून प्रकिया के तहत ही की जाये तथा उनके सदस्य किसानों के साथ कोई जबरदस्ती ना की जाय। उपर वर्णित सभी तथ्यों की प्रतिलिपियां प्रस्तुत की जा सकती है। मुझे आशा है कि इन सभी तथ्यों को पड़ने के बाद आप वास्तविकता से वाकिफ होगें तथा डी.डी.ए. के नापाक रास्तों को रोकने के लिए सोसायटी का साथ देंगे।

मा. बलजीत सिंह

महासचिव, दिल्ली पिजेन्टस कोपरेटिव मल्टीपरपज सोसायटी, बल्लीमारान, दिल्ली

यमुना सत्याग्रह से जुड़े अनुभव

"किसी का घर टूटेगा यां जमीन छीनेगी तो हर कोई जिंदाबाद मुर्दाबाद भी करेगा और हो सकता है वो सत्याग्रह भी करें लेकिन पृथ्वी पर जीवन की प्रतीक हजारों सालों से जीवंत बह रही जीवनदायनी नदी जिसने हजारों सालों से हम मानवों का आस्तित्व इस पृथ्वी पर बनाए जिसे हमारा समाज यमुना जी के नाम से जानता है सरकारी हठधर्मिता के आगे दम तोड़ रही तो क्या यह चपचाप इस नदी को मुर्दे में बदलते देखने का समय है यां फिर समय है कि इन बेशर्मी पर तुली हुई सरकारों व नदियों की लूट खसूट को अपना जनमसिद्ध अधिकार समझने वाले पूजींपतियो को बता दें कि नदियां यतीम नहीं, यह यमुना यतीम नहीं।" अंतरआत्मा को झकझोरने वाला यह सवाल यमुना सत्याग्रह की शुरूआत से महज कुछ दिन पहले जुलाई के अंत के दिनों में 2007 में पंजाब मे खेती विरासत मिशन संस्था द्वारा आयोजित जल यात्रा में विशेष निमंत्रण पर जल यात्रा का नेत्तृव करने पहुचें जल पुरुष राजेन्द्र सिंह ने पंजाब के समाज की तरफ उछाला था। जल पुरुष के इसी एक सवाल ने मुझको सुनील प्रभाकर से यमुना सत्याग्रही में बदल दिया था। और सौभाग्य दिया एक ऐसे निस्वार्थ आंदोलन के दिन और रातों को बेहद करीब से जीने का जो पिछले 111 दिन से नदियों की लूट खसूट करने वालों कों हिंदोसितां के सत्ता के मठाधीशों की नगरी दिल्ली से लगातार एक ताकतवर संदेश देता चल रहा है कि नदियां यतीम नहीं, यमुना यतीम नहीं और जो लगातार जारी है।

1 अगस्त 2007 को दिल्ली स्थित यमुना खादर के किसानों व कुछ पर्यावरण प्रमियों को नेर्त्तव देकर जल पुरूष राजेन्द्र सिंह ने यमुना यतीम नही की ललकार के साथ देश की अनेकों संस्कृत्तियों की जननी व दिल्ली की लाईफलाईन यमुना के संहार के प्रतीक कामनवैल्थ खेलगांव की संभावित जमीन पर खेलगांव के निर्माण के विरोध में यमुना सत्याग्रह का शंखनाद कर दिया।

यमुना सत्याग्रह के लिए पहले सबसे बड़ी चुनोती थी यमुना के जीवन के लिए यमुना खादर के किसान समाज के दिल में यमुना के लिए अलख जगाना वो भी बिना मुआवजे की राजनीति किए। यह कुछ ज्यादा मुश्किल काम था क्योंकि यह समाज पूर्व एनडीए सरकार के कार्यकाल मे अडवानी जी के आशीर्वाद प्राप्त गुजरात के एक पूंजीपति प्राईवेट ट्रस्ट अक्षरधाम से

एक लड़ाई हार चुका था । यमुना सत्याग्रहियों ने जल पुरुष के नेतृत्व में यमुना खादर के इलाकों में लगातार पद यात्राएं की इस दौरान नुक्कड़ बैठकें की किसानों के खेतों में जा जा कर उन्हें जगाने का काम किया। इसमें दिल्ली पीजेन्टस सोसायटी व झील खुरन्जा सोसायटी ने यमुना सत्याग्रही के रूप में तन मन धन से काम किया । यमुना सत्याग्रहियों की निरंतर अथक मेहनत से यमुना खादर का किसान समाज न केवल जगा बल्कि यमुना सत्याग्रही बन कर इस आंदोलन को दिल्ली में विस्तार देने मे निस्वार्थ भाव से जुट गया।

यमुना सत्याग्रह के सामने चुनौती थी आधुनिक पढ़ाई पढ़ रहे दिल्ली के युवाओं को उनकी यमुना पर सरकारी व पूंजीपतियों के हो रहे कभी अक्षरध ाम तो कभी कामनवैलथ खेलगांव जैसे अतिक्रमणों के खिलाफ यमुना के लिए इंसाफ की लड़ाई का प्रतीक बन चुके यमुना सत्याग्रह के मंच पर लाना। दिल्ली की संस्था यूथ फार जस्टिस जो जल पुरूष के सान्नीध्य में आने के बाद यमुना सत्याग्रही के स्वरूप में आ गई थी ने व यमुना सत्याग्रह के युवा साथियों ने दिल्ली युनिवर्सिटी मे यमुना सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया और "यमुना मांगे जस्टिस के नारे दिल्ली के कालेजों में जम कर गूजें" यमुना सत्याग्रहियों ने बता दिया कि सरकारें यह न सोचें कि देश के युवा समाज के हाथ में कोकाकोला पेप्सी थमा कर उनकी आंखों के सामने उनकी नदियों की जम कर लूट खसूट कर ले उनकी नदियों की हत्या कर दे और युवा मौन रहेंगे ।

यमुना सत्याग्रह ने महिला भाक्ति को साथ में जोड़ा और महिला सशक्तिकरण का काम किया। यमुना सत्याग्रह के साथ जुड़ाव में यमुना खादर की सध ारण सी महिला अतरावती तो इस कदर रमी कि अब वो यमुना के लिए इंसाफ मांग रहे गीत लिखने लगी अपने लिखे गीतों में अब वो डंके की चोट पर कभी अडवानी तो कभी प्रधानमन्त्री से यमुना के लिए इंसाफ की मांग रही है। अब वो गीत यमुना खादर के गांवों की महिलाओं में कान्ति रच रहे है। अब घूंघट में रहने वालीं महिलाएं भी यमुना सत्याग्रह स्थल पर आने लगी हैं। दिल्ली के आधुनिक वर्ग की क्रांतिकारी मधुभटनागर जैसी महिलाएं यमुनासत्याग्रह से जुड़ रही हैं व अपनी ताकत झोंक रहीं हैं हजारों सालों से जीवंत बह रही यमुना को जीवंत बनाए रखने के आंदोलन यमुना सत्याग्रह को गति देने में ।

यमुना सत्याग्रह यमुना पर हुए व हो रहे अत्याचारों व यमुना के साथ खेल के नाम पर हो रहे खेल को इन 111 दिनों में दिल्ली, देश व अन्तरराष्ट्रीय मीडिया के सामने रखने में पूरी तरह सफल रहा। इन 111 दिनों में मीडिया के माध्यम से सरकारों व पूंजीपतियों की मिलीभुगत से नदी पर हो रहे अत्याचारों की दास्तान अब न केवल दिल्ली की जनता बल्कि देश व विदेश के जनता की अदालत में पहुंच चुके है। दिल्ली के प्रिंट मीडिया व इलैक्ट्रोनिक मीडिया के पत्रकारों ने जब से यमुना सत्याग्रह को समझ इसकी आत्मा व सत्यता को जांचा परख उसी दिन से लेकर आज तक नदी के जीवन को बचाने एवं नदी को इंसाफ दिलाने के लिए शुरू हुए इस आंदोलन में पत्रकार साथी अपनी कलम कैमरों, माईक एवं सत्य की पूरी ताकत के साथ नदी के लिए सत्य का आग्रह करते हुए योद्धा की भूमिका में नजर आ रहें हैं। दिल्ली के पत्रकार मित्रों ने सत्या के आग्रह के साथ कदमताल करके बता दिया कि दिल्ली का मीडिया महज सनसनी नहीं और यमुना यतीम नहीं।

यमुना सत्याग्रह ने इन दिनों में दिल्ली व देश की अलग अलग संस्थाओं को यमुना के मामले पर एक मंच पर लाने मे सफल रहा ।

यमुना सत्याग्रह की आत्मा जल पुरूष राजेन्द्र सिंह पिछले तीन महीने से देश भर के अपने सारे कार्यकम स्थगित कर नदी के लिए दिल्ली में यमुना सत्याग्रह के मोर्चे पर डटे हुए है। यमुना सत्याग्रह ने इन 111 दिनों में कई उतार चड़ाव देखे हैं लेकिन राजेन्द्र भाई साहिब के चेहरे पे मैने हमेशा चिंतन देखा है लेकिन चिंता कभी उनके आस पास भी नहीं फटकी। शायद नदियों के लिए व जल के लिए राजेन्द्र जी की इसी सर्म्पण भावना के कारण ही भारत का समाज उन्हे जल पुरश के नाम से पुकारता है। देश भर की जलबिरादरी व दिल्ली की संस्थाएं अब यमुना सत्याग्रह में अपनी अपनी भूमिका की पहचान कर आंदोलन को गति देने में जुट रही हैं । यमुना सत्याग्रह के शुरूआती दिनों से ही जल पुरूष के नेत्तृव में सिटीजन फ्रन्ट फार वाटर डैमोक्रेसी के एस ए नकवी व यमुना जिए अभियान से मनोज मिश्र तन मन से काम कर रहे हैं । एस ए नकवी यमुना की बात दिल्ली के घर घर में ले जाने के लिए जागो दिल्ली जागो यात्रा निकाल कर दिल्ली के तेज रफतार मे खोए समाज को यमुना सत्याग्रह से जोड़ने का काम कियां तो यमुना जिए अभियान के मनोज मिश्रा दिन रात दिल्ली

के दिमाग समझे जाने वाले जागृत समाज को उन्ही की भाशा में यमुना सत्याग्रह के अर्थ समझा कर नदी वाला समाज बनाने में पहले से दिन से एक योद्धा की भूमिका में डटे हुए हैं। इंनटैक ,डब्लयु डब्लयु एफ व अन्य साथी संस्थाएं भी अपनी पूरी क्षमता के साथ जुट गई हैं।

नदी के दिवानों का काफिला लगातार बड़ा होता जा रहा है समाज अब सत्ताधारियों से सवाल करने लगा है कि 10 दिन के खेल के लिए हजारों साल से जीवंत नदी कि हत्या करने की जिद सरकार आखिर क्यों नहीं छोड़ रही क्यों नहीं खेलगांव का निर्माण दिल्ली में ही दूसरी जगह करवाया जा रहा। सत्ताधारियों के चेहरे पर यमुना सत्याग्रह का खोफ अब साफ लगा हैं हलांकी दिल्ली की जमीन पर सत्ता के मठाधीशों को भीड़ से ताम दाम ढंड भेद के बल पर निपटना खूब आता है चाहे भीड़ 50 हजार की हो चाहे 5 लाख की है। लेकिन यमुना सत्याग्रह ने मुझे यह अनुभव करवा दिय कि यह सरकारें भी डरती हैं एसे आंदोलनों से जिनके पास विचार है जिसमें सत्य हैं और जो निजी स्वार्थ पर अधारित नहीं। हलांकि हम लोग तो संख्या में कम नजर आते हैं लेकिन सरकार अब यमुना सत्याग्रह से खोफ खाने लगी है और इससे एक बात साफ हो रही है कि आंदोलन दम पकड़ रहा है।

इन 111 दिनों की बात अगर करें और यमुना खादर के किसान किशोरी व बालेराम व मिश्रो देवी की बात न हो तो शायद कुछ अधूरा रह जाएगा। यही वह ग्रामीण हैं जिन्होने एक दिन भी सत्याग्रह स्थल पर हम सत्याग्रहियों को एक दिन भी भूखा नहीं सोने दिया। ये किसान निर्धन चाहे हो लेकिन चांदी की खनक में खोया समाज इनके सामने दरिद्र नजर आया। किशोरी अपने साईकल पर सवार हो आंदोलन के गीत बनाता गाता हम सत्याग्रहियो के लिए घर से बनवाया खाना लेकर रोज पहुंचता है। गर्मी ,बारिश आंधी सर्दी लेकिन किशोरी का साईकल रोजाना खाना लेकर सत्यग्रह स्थल पर पहुंचा है ओर सत्याग्रही संख्या में जितने भी रहते हों खाना कभी कम नहीं हुआ। रोजाना बजुर्ग किसान काका भूप सिंह कभी चने और गुड़ तो कभी टाफियौं तो कभी सुबह की चाय के साथ सत्याग्रह स्थल पर पहुंचे हैं। रोज सुबह जब वो आते हैं तो उनकी पोटली में कुछ न कुछ हम सत्याग्रहियों के लिए होता है। समसपुर के बलजीत सिंह सभी ग्रामीणों को एक जुट करने में पहले दिन से पूरी ताकत से जुटे हुए हैं लेकिन मुझे खुद सत्याग्रह

के 94वें दिन में किसी से यह पता चला कि उनके दिल की बाए पास सर्जरी हो चुकी है।यमुना खादर के किसान मा. बलजीत सिंह, धरमसिंह, किशोरी, मुरली, महांवीर सिंह, रोहताश भाटी, प्रीतम सिंह, जगवत स्वरूप, विभूती सिंह, बालेराम, रामस्वरूप,चैनी अतरावती, मिश्रो देवी व यमुना खादर के अन्य ग्रामीण और इनके साथ मनोज मिश्रा, एस ए नकवी, विक्रम सोनी ,एडवोकेट संजय पारिख, कपिल मिश्रा, मधु भटनागर, प्रीती बहन, सुधा बहन, देवयानी बहन, दिवान सिंह, एन एम मिश्रा, विक्रम, विनोद कुमार, भवानी शंकर, राकेश सब मिल कर हमारा यमुना सत्याग्रह एक परिवार की तरह नजर आ रहा हैं और हम लोग जी रहे हैं इस आंदोलन को एक उत्सव की तरह और। जल पुरूष के नेत्तृव में यमुना सत्याग्रह का परिवार निरंतर बड़ा हो रहा है। यमुना सत्याग्रह की आवाज अब देश भर के जल के दिवानों की आवाज बनती जा रही है।

सुनील प्रभाकर

यमुना को मां कहने वाला मथुरा–वृन्दावन

मथुरा में विश्राम घाट के पुजरियों से ललीत शर्मा ने यमुना सत्याग्रह का रिस्ता जोडा। उनकी यमुना की शुद्धि की लड़ाई प्ररेणादायी है। उच्च न्यायालय, उचतम् यायालय सब स्तरों पर लड़े जीते, लेकिन यमुना की शुद्धता के निर्णय कियान्वित नही करा पाये। अब यहां सेवक शरण जी इस दिशा में बहुत सकिय हुऐ है। इन्होंने यमुना शुद्धि की योजना समाज के मन मानस, व्यवहार और संस्कार को जोड़ने की बनाई है। इनके इस काम में यमुना सत्याग्रह साथ है। मथुरा–वृन्दावन एक माह में दो बार यमुना कार्य योजना के सन्दर्भ में गया। यहां महिला–पुरूष सब ही यमुना शुद्धि की बात में रूचि रखते है। ये यमुना की शुद्धि कार्य को आगे बढ़ाने हेतु यमुना कार्य योजना के प्रथम चरण पर एक स्वेतपत्र तैयार कराने का दबाव सराकर पर डालेंगे।

दुसरा चरण की योजना में प्रथम चरण की असफलताओं से सीख लेंगे। इस हेतु जन सुनवाई की एक श्रृंखला मथुरा जल बिरादरी के साथी शुरू करायेंगे।

मथुरा में यमुना को **मां** जैसा आदर आज भी जहां–तहां दिखता है, लेकिन सरकार तो यहां आज भी महरी जैसा ही व्यवहार कर रही है। नगर पालिका के सब गन्दे नाले इसमें मिलते है। जल शुद्धता संयंत्र तो लगे है, लेकिन चलते नहीं है। इन्हें चलवाने पर भी ध्यान और दबाव देने की जरूरत है। मथुरावासी ही यमुना संस्कृति के संरक्षक है। मथुरा–वृन्दावन से यमुना शुद्धता का सन्देश पूरा कर सकते है। हमें अब व न्दावन से संगम और संगम से यमुनोत्री तक पहाड़ और धरती की हरियाली तथा नदियों की शुद्धता का काम शुरू करेंगे तो आज की यमुना कृष्ण की काली देह को शुद्ध यमुना में बदल देंगे। यमुना शुद्धि कार्य सामाजिक अभिक्रम के रूप में वृन्दावन से ही शुरू होवें।

झील एवं खुरंजा कोपरेटीव मिल्क प्रोडियुसर सोसायटी के बारे में कुछ जानकारी

आज़ादी के पश्चात जमीनदारी एवं ठेकेदारी प्रथा खत्म कर के किसानों एवं भूमीहीन लोगों को मालिकाना हक देने की मुहिम देश के प्रथम प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु एवं दिल्ली राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री चौ. ब्रह्मप्रकाश ने शुरु की। इसी के तहत 21 जुलाई 1949 को झील खुरंजा कोपरेटीव मिल्क सोसायटी की स्थापना की गई। इस सोसायटी का मुख्य उद्देश्य देश के बंटवारे के बाद पाकिस्तान से आए हुए विस्थापितों की सहायता तथा उन्हें आबाद करना था।

इस सोसायटी को 25 मई 1950 को दिल्ली इम्पस्वेमेन्ट ट्रस्ट द्वारा 99 साल के पट्टे पर यमुना नदी के किनारे की लगभग 8000 बीघा जमीन ग्रेजिंग एव चारा उगाहने के लिए अलाट की गई। इस के साथ 140 प्लाट भी पाकिस्तान से आए हुए विस्थापितों के अलाट किए गए। इम्परोवमेंट ट्रस्ट के साथ जो लीज डीड हुई, उसके अनुसार यदि सरकार को इस भूमि के किसी भाग की सार्वजानिक कार्य के लिए आवश्यकता हुई तो सोसायटी को वह जमीन छोडनी होगी। समय समय पर जब भी सरकार किसी सार्वजानिक कार्य के लिए भूमि की आवश्यकता हुई सोसायटी ने तुरन्त उपलब्ध करा दे (जैसे आइ टी पूल एवं सडक, रेल्वे लाईन, मेट्रो लाईन, गीता कालोनी पूल इत्यादि)

परन्तु 1992.93 में डी. डी. ए ने सोसायटी के कुछ किसानों के खिलाफ पी. पी. एक्ट के अन्तर्गत कार्यवाही शुरु की जिसे किसान भाईयों ने ससन कार्ट में चैलेज किया। सेसन कोर्ट ने अपने फैसले में सोसायटी को अनिवार्य पार्टी मान कर इन केसों को वापिस इस्टेट आफिसर के यहां भेज दिया, जो आज भी पेन्डिग पडे हुए हैं।

असली गडबडी 2000 में शुरु हुई, जब गुजरात की एक संस्था अक्षरधाम ट्रस्ट को दिल्ली के नजदीक यमुना नदी के किनारे एक भव्य भवन के लिए भूमी की आवश्यकता थी। इस समय केन्द्र में एन. डी. ए. की सरकार थी तथा श्री आडवाणी जी उप–प्रधान मंत्री थे। श्री आडवाणी जी इस संस्था से जुड़े हुए है तथा उन्होंने अपने राजनैतिक प्रभाव का प्रयोग करते हुए डी. डी. ए. से इस संस्था के नाम जमीन अलाट करा दी। इस जमीन पर सोसायटी के किसान भाई बैठे हुए थे। इस किसानों को उजाड़ कर इस अक्षरधाम ट्रस्ट ने लगभग 60 एकड़ जमीन का कब्जा राजनैतिक दबाव एवं पुलिस फोर्स के बलबूते पर ले लिया। किसानों को थाने में बन्द करवा दिया गया तथा देखते–देखते स्वामीनारायण अक्षरधाम भवन बन कर तैयार हो गया। इस प्रकार दिल्ली में यमुना नदी पर कब्जा करने का कार्य शुरु हो गया। सोसायटी हाई कोर्ट में इस के खिलाफ गई। परन्तु अक्षरधाम को रुकवाने में सफल नहीं हो पाई। इसके पश्चात इस अक्षरधाम से लगी हुई लगभग 60 एकड़ जमीन पर भी डी. डी. ए. ने जबरदस्ती कब्जा कर लिया इस के खिलाफ मंडावली और शकरपुर के कुछ किसानो ने स्टे भी ले लिया था। परन्तु राजनैतिक ताकत के आगे सब बेकार रहा।

1967 में डी. डी. ए. ने सोसायटी को ज़मीन खाली करने का नोटिस दिया, जिसे हाई कोर्ट में चैलेन्ज किया गया तथा 1977 में हाई कोर्ट ने अपने आडर में डी. डी. ए. को कानून के तहत कार्य करने का आदेश दिया। 2002 में सोसायटी द्वारा 2 रिट पेटिशन डाली गई, जिसमें 2004 में सोसायटी को आवश्यक पार्टी माना गया तथा कानून के तहत ही कार्य करने का आदेश डी. डी. ए. को हाई कोर्ट द्वारा दिया गया।

2007 में फिर किसानों एवं सोसायटी को बेदखल करने का नोटिस भेजा – सोसायटी इस के खिलाफ सेसन कोर्ट (20.8.07) को गई तथा 3.9.2007 के आदेश के अन्तर्गत सोसायटी को स्टे मिला। इस केस की अगली तारिख 15.11.2007 है।

इस प्रकार से कानूनी रुप से झील खुरन्जा मिल्क प्रोडियुसर सोसायटी आज भी कानूनी रुप से इस जमीन की मालिक है तथा अक्षरधाम का बनना एवं खेल गांव का बनाया जाना गैर कानूनी है।

डालचन्द
महासचिव
झील खुरंजा कोपरेटीव मिल्क प्रोडियुसर सोसायटी, दिल्ली

तरूण भारत संघ

तरूण भारत संघ
भीकमपुरा–किशोरी, वाया थानागाजी
अलवर–301022
दूरभाष : 01465–225043, 0141–2393178
E-mail: watermantbs@yahoo.com